AKBAR GO-RAKSHA NYAYA NATAKA

A drama in connection with Cow-protection.

BY

GO-SEVAKA
PANDITA JAGATA NARAYAN
of Banares.

PUBLIHED BY
MUNSHI LAL BAHADUR
of Aliabad, Barabanki.

FIRST EDITION.

Bombay.

PRINTED AT "THE SADASHIV PRINTING PRESS".

1895.

Price 12 annas.

अकबर गोरक्षा

न्याय नाटक.

गोरक्षाके प्रसिद्ध उपदेशक

व ग्रंथकर्ता

काशी निवासी

गो-सेवक पंडित जगत नारायणजी

रचित

मुन्शी लालबहादुर,

बारावंकी अलियाबाद निवासी.

नें

प्रकाशित किया.

और

बंबई.

"सदाशिव बाबाजी प्रिंटिंग प्रेस" में

छापा गया.

१८९९.

किंमत १२ आना.

DRAMATIS PERSONÆ.

नाट्य पात्र विवर्ण.

पुरुष पात्रों के नाम.

सूत्रधार	Stage Manager. नाटक बताने वाला.
विदुषक	एक मसखरह.
शिवदत्त	तपोवन का एक तपस्वी.
नारद	एक मुनी.
परीक्षक	यमराज का दूत कलयुग याने शैतान.
पंडित	दील्लीका एक कथक्कड.
सेठ पनारुदास	दिल्ली का एक ऐयाश.
हरदत्त	आबू पर्वतका एक तपस्वी.
ज़ालम खां	अहमदाबादके नबाब आज़मखांके नौकर.
कमालखां	
प्रतापसिंघ	उदेपूरके महाराज.
धर्मसिंघ	महाराज का जमादार
कर्मसिंघ	नायक.
भामाशाह	दिवान.
कानसिंघ	छोटा भाई.
कृष्णासिंघ	वजीर.
भवानीचन्द्र	भांट का छोकडा.
वीरेन्द्रसिंघ	कानसिंघ का मित्र.
चतुरसिंघ	भवानी चन्द्रने भेषबदलाहुअ

महन्त	साधूओं की एक मंडली का मालिक.
अडंगपूरी	महंतका चेला.
जबरजंगपूरी	,, ,,
बीरबल	अकबर बादशाह का बडा वजीर व नवरत्न.
अकबर	दिल्लीका बादशाह.
फकीर	भवानी चन्द्रने भेष बदला हुआ.
हुसेन	बादशाह का खवास.
फेजी	अकबर-बादशाह का बडा वजीर. और नवरत्न सभा का सभासद.
अब्बुलफजल	वजीर व नवरत्न.
खानखाना	नवाब व नवरत्न.
अब्बुलफते	एक हकीम (विद्वान) व नवरत्न.
हमाम	,, ,,
टोडरमल	दिवान—नवरत्न.
कोकलताश	एक राजा— ,,
देवचन्द्र	मंझोल का राजा—न.
मानसिंघ	जैपूर का राजा
कलूमियां	अकबर का एक खवास
अबदुलकादर जनूनी	एक मुल्लां—दरबारी
गोकुलदास	दिल्लीका एक सेठ.
गोपालदास	,, ,,
गोवर्द्धनदास	,, ,,
हरकृष्णादास	,, ,,
यमुनादास	,, ,,
जीवराज	,, ,,

रमज़ान	एक मुसल्मान कसाई.
अहम्मद	रमज़ानका साथी.
स्वार्थी	एक हरामी लडका.
नथेखाँ	रंडीका तबलची.
लक्ष्मीदास	दिल्लीका बडा सेठ.
कायमअली	दिल्लीका कोतवाल.
तालबखाँ	नाकेका सिपाही.
असगरखाँ	नायब कोतवाल.
बरकतअली	जमादार.
महरजी राना	पारसी धर्मका एक विद्वान.
रेदीफनी साहेब	खरिष्टी धर्मका एक विद्वान.
पृथीराज	अकबर बादशाहका पेशकार.
करीम बखश	फेजीका अरदली.
डूगडूगी वाला	प्रजाको सरकारी खबर देने वाला.
फते मुहम्मद	वधिक.
आनन्दसिंघ	एक खेलाडी लडका.
जीवनसिंघ	आनन्दका दोस्त.
ठाकुरसिंघ	,, ,,
हरनामसिंघ	,, ,,
कृपाशंकर	ब्राह्मणका छोकरा.
हरीशंकर	,, ,,
अमरसिंघ	महराजा प्रतापसिंघ का कुंवर.
रमणलाल	एक वैश्य का छोटा छोकडा.
खूंखार सिंघ	बीरबलका अर्दली.
महावीर सिंघ	अकबरकी एक सेना का सूबेदार.

अबदुलहक	बदमाश टोलीका सर्वार्था.
समदू	संगी.
नूरु	संगी.
हसना	संगी.
चरागा	संगी.

स्त्री पात्रोंके नाम.

	Stage Manager's wife.
माताजी	कानसिंघकी मां.
चन्द्रमुखी	कान सिंघ की स्त्री.
परसन	चन्द्र मुखी की दासी.
ज्ञानदेवी	स्वार्थी चौबे की मां.
विमला	चन्द्र मुखी की सखी.
एक यवन स्त्री	रमजान की स्त्री.
रांड	से० पनारु दास की रखी हुई
मीरजान	बाजार की एक नायका.
जोगन	भवानी चन्द्र ने भेष बदला हु

इनके सिवा, सिपाही, प्यादे नगर निवासी, साधू, किसान
बलोग, इत्यादि हैं.

एक लिंगजी की मूरती.

समर्पण।

प्रिय पाठकगण! आज बहुत दिनके उपरान्त यह "अकबर गोरक्षान्याय नाटक" भेट लेकर आप लोगोंका दर-शन करताहूं, आशाहै कि आप सज्जनजन इसको स्वीकार करेंगे, इसके समर्पण करनेसे मेरा यह अभिप्राय है कि आप लोग मुझ अकिञ्चनजनपर कितनी कृपा और अनुग्रह दृष्टि रखते हैं। प्यारे मित्रो ग्रंथ कर्त्ता तो आप लोगों की पद धुल है फिर यदि आप न इसको स्वीकार करेंगे तो कौन करेगा और फिर अब चाहे अच्छा हैं तो आपका बुरा है तो आपका! हे प्रभो आपको क्या समर्पित करूं आपने तो हृदयमें बैठकर बनायाही है, अच्छा तो भी "त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेव समर्पये".

आप मित्रोंका अनुग्रहकांक्षी.

काशीनिवासी—गोसेवक

जगत नारायण.

पुस्तक मिलने का ठिकाना

बाबु सीतल प्रशाद जवाहिरलाल

पोस्टआफिस अलियाबाद

जिला बाराबंकी

योवन योगिनी, की० १२ आ० म० १ आ०

चित्राँगदा की० १० आ० म० १ आ०

दादा और मैं की० १२ आ० म० १ आ०

अकबर गोरक्षा न्यायनाटक

भूमिका

प्रिय पाठक गण—एक दिन हमारे चार पांच मित्र हमको नाटकशालमें एक नाटक दिखाने के लिये लेगये. जब नाटक समाप्त होगया और मित्र लोग अपने अपने घरको जाने लगे तो हमने उनसे पूछा कि आप लोगोंने इस नाटक के देखने से क्या लाभ प्राप्तकिया है सो हमको बतलाइये। उन्होंने उत्तर दिया कि और लाभ तो कुछ प्राप्त नहीं हुआ केवल गायनका आनन्द सिलाहै? हमने कहा कि नाटक देखने कोतो हम मना नहीं करते हैं क्योंकि नाटक प्राचीन समयसे होते आये हैं और लोग देखतेभी आयेहैं पर इतना तो हम जरुर कहेंगे कि जो रीति प्राचीन समय के नाटकों कीथी वह रीति आजकल के नाटकों की नहींहै। मित्रोंने कहा कि प्राचीन समयके नाटकों की क्या रीतिथी? हमने कहा कि प्राचीन समय के नाटकों की यहरीतिथी कि जब कभी धर्म अथवा देशमें कोई बुराई भलाई पड़ जातीथी तो बुराई के दूर करने और भलाई के फैलाने के लिये नाटक किया करतेथे कि जिसके देखने से मनुष्यों के हृदयमें बुराईसे घृणा और भलाई से प्रीति उत्पन्न होजातीथी सो अब इन नाटकोंसे भलाईके बदले बुराई बहुत उत्पन्न होतीहै। हां! यदि आप लोगोंको नाटकों का आनन्द लेना हो तो काशी निवासी श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द्रजी के नाटकों को पढ़ये खेलिये खेलाइये आनन्द पाइये। उन्होने उत्तर दिया कि बाबूजीके नाटकों में आजकलके नाटकों की भांति गायन नहीं है. हम लोग क्या? प्रायः बहुत से लोगों को गायन सुन्ने के लिये ही आजकलके नाटकोंमें जाना पड़ताहै, हाँ! यदि कोई धर्म अथवा देश सम्बन्धी ऐसा नाटक हो जिस में आज कल के नाटकों की भाँति गायन हो तो हम आजकलके बुरे नाटकों को कभी देखने न जायें अथवा आप कोई ऐसा नाटक बनादें तो हम आपका बहुत उपकार मानेंगे। हमने उत्तर दिया कि यदि ऐसा नाटक हम बना भी दें तो हमारे पास पात्र कहां हैं

जो अभिनय कर दिखावें। उन्होंने कहा कि यदि अभिनय नभी हो तो हम स्वयं ही गाकर आनन्द लियाकरेंगे! हमने कहा कि बहुत अच्छा हम आजकलके नाटकों के गायन में आपलोगों को एक नाटक बना देंगे यह कह उनसे जुदा हो अपने स्थान में आये पर बाकी रात इसी चिन्तामें रहे कि उनको कहतो आये हैं कि हम आपलोगोंको एक नाटक बना देंगे पर कोन ऐसा नाटक बनायें जो धर्म और देशहितकारक हो इसी शोच में बिछौने से उठ दतू-अनले दरवाजे के बाहर गये तो अकस्मात गऊ माताजीके दर्शन हुये, गऊमाताजीके दर्शन करतेही मनमें यह आया कि यद्यपि इस समय धर्म और देशमें बहुतसी कुरीतियां पड़ गई हैं पर गोवधकी कुरीति बड़ी भारी पड़ गई है, जिससे धर्म और देशकी दिन प्रतिदिन बहुतही कुदशा होती जाती है, जिसपर कोई भी दृष्टि नहीं देताहै, यद्यपि यह गोवध कुरीति इस पवित्र भूमिमें बहुत दिन से चली आती है, कारण यह कि इस कुरीतिके चलाने वाले हठधर्मी थे, उन्होंने गऊमाता के गुणोंपर कुछ भी विचार न करके केवल हिन्दुओंके सतानेकेलिये यह गोवध कुरीति इस पवित्रदेशमें चलादी, पर अकस्मात इस नेक सर्वोपकारी गऊमाताके नेकी, शहनशाह अकबर जिसका आजतक भारतके बालवृद्ध उसके न्यायके कारण यश गारहे हैं उसनेक बादशाहने, आनेवाले बादशाहोंकेलिये यह बतौर नमूना रख गया और जिसने स्वयंभी यहमहाकुरीति गोवधको हुकूमन बन्द कर दिया था, जिसका वर्णन इतिहास जानने वालों पर विदितभी है। पस गऊ दरशनके समय हितकरुणाने आकर कहा कि उसनेक बादशाहा का "गोरक्षा न्याय" दिखला, जिससे सर्व साधारणको उसनेक बादशाहका न्याय विदित हो, और यह भी गऊके गुण जानकर शहनशाह अकबरकी भांति इसको न्याय दृष्टिसे देखें, उसीसमय गऊमाताजीको प्रणामकर मकानमें आस्नान पूजा इत्यादिकार्यों से छुट्टीपा यह "अकबर गोरक्षा न्याय नाटक" लि-

रचना आरंभ किया और थोड़ेही दिनमें लिखकर समाप्त भी किया, इसपुस्तक के बनाने में हमने उर्दूके करसा हिन्द और गुजरातीके वार्ताविनोद इत्यादि बहुतसे इतिहासिक पुस्तकों और बहुतसी प्राचीन कवियोंकी कविता की सहायता लेकर यह ग्रंथ बनाया है। यह ग्रंथ किसी मत के दुखाने के कारण से नहीं बनाया गयाहै पर यह दिखाने केलिये बनाया गयाहै कि जैसे शहनशाह अकबरके समय में गोवध महापाप बन्द होने से हिन्दू मुसल्मानों की आपसमें प्रीति होगईथी, इस समयभी श्रीमती राज राजेश्वरी महाराणीके राज्यमेंभी सबकी आपसमें प्रीति होजाने, क्योंकि महाराणीका न्याय अकबर से विशेषहै कारणयह है कि अकबर के दर्बार में केवल नौही रत्नथे और हमारी महाराणी विकटोरिया के दर्बार में हज़ारों रत्न भरे हैं, तो क्या फिर यह रत्न गोवध कुरीति को बन्द कर सब मतानुयाइयों की आपसमें प्रीति न बढावेंगे। अवश्यही बढावेंगे, और हमारी महारानीकी कीर्ति को सूर्य चंद्र पर्यन्त भारतके बालवृद्ध की जिव्हापर चढावेंगे। प्रियवरो! यह ईश्वरही की कृपा जानिये कि जो कईसौ वर्षों के उपरान्त इस दीन दुःखी भारतको महाराणी का साया मिलाहै.

"उसे मंजूर जब होतीहै इस दुनियाकी आबादी,
तो आदिल बादशाहका साया सिर पर डालदेता है"

हम अपने पाठकगणों से निवेदन करते हैं कि यदि कोई भूल चूक इस ग्रंथमें कहीं हो गई हो तो कृपा करके क्षमा कीजियेगा.

आप लोगों का शुभचिंतक
काशी निवासी० गोसेवक
जगत नारायण.

अकबर गोरक्षा.

न्यायनाटक

नान्दी.

(राग धनासरी)

जय जय जय गोपाल, बोलो श्री जय जय जय गोपाल ॥
दया सिन्धु, हो दीनबन्धु, विश्व त्रणा प्रति पाल ॥ बोलो ॥
अधम उधारण कष्ट निवारण, दुःखहरो तत्काल ॥ बोलो ॥
भारतमें गोधन घटनेसे, हिन्द हुआ कंगाल ॥ बोलो ॥
भूखके कारण अनेक जनको, मृत्यु होत अकाल ॥ बोलो ॥
गोसेवककी अर्ज स्वीकारो, वेग लेओ सम्भाल ॥ बोलो ॥

सूत्रधार—अहा ! आज बड़े आनन्दका विषयहै कि यहां बहुत प्रतिष्ठित जन जुटेहैं और सब के सब एकाग्रचित्त चन्द्रमांकी ओर चकोर की भांति सब मेरेही ओर देख रहेहैं ! निःसन्देह यह लोग कोई नाटक देखना चाहतेहैं (ठहरकर नटीको पुकारताहै) प्रिये २ इधर आ.

नटी—(आवाज़ सुन पास आकर) विनयसे, प्राणनाथ क्या आज्ञा है.

सूत्रधार—प्रिये इस उपस्थित मण्डलीको कोई नाटक दिखाना चाहिये.

नटी—स्वामी इनलोगोंको तो, इन्द्रसभा, गुलबकावली, लैलीमजनू, इत्यादि नाटक रुचेंगे, भला हमारा नाटक इनको काहे को पसन्द आयेगा, क्योंकि हमारी भाषामें, यवनभाषाके शब्दोंका आनन्द कहां.

सूत्रधार—हे प्यारी ववरा मत ! हम इनको इन्द्रसभा इत्यादि नाटकों की ही भांति कोई नाटक दिखलावेंगे !

नटी–हे पति ! यदि आप इन्द्रसभा आदि नाटकोंकीही भांति कोई नाटक दिखलाना चाहते हैं तो उन्हींमेंसे कोई नाटक दिख-लाइये.

सूत्रधार–प्राण प्यारी मेरा अभिप्राय इन्द्रसभा इत्यादि नाटकों की भांति यह नहीं है कि जैसे इन नाटकोंको देखकर हमारा भारत नाश हुआहै वैसेही इनके तुल्य एक और नया नाटक दिखलाकर नाशकरुं, परन्तु यह इच्छाहै कि गाना बजाना तो इन्हींकी भांति हो किन्तु देशोपकारी और धर्मरक्षक हो.

विदूषक–अजी भलेमानष मुझेसे कहो तो सही आज तुमने कौनसा नाटक खेलनेका विचार कियाहै.

सूत्रधार– (राग, बिलावल, अथवा जिलामें गाओ)

आदि सनातन से गऊ माता, सृष्टि बनाई जबीसे विधाता ॥ आदि ॥ जिसमाताको पुराण बखाने, चतुरानन, शिव, विष्णु भी माने । महिमा अगम निगम जेहि गावें, तिस गऊको दल यवन सताता ॥ आदि ॥ गुण अवगुण को कछु न विचारें, नाहक पतित गऊको मारें। यवन कुलके बड़े बड़े राजा, आदंल अपने तईं कहाता ॥ आदि ॥ दृष्टि कभी इस ओर न लाई, दण्ड न देत वधे जोगाई । उलटाही जुल्म बढ़ाता इसीपर, वृथाविचारीको दुःखही दिलाता ॥ आदि ॥ जो शाह आता इसेही-सता, तरस न इसपर कोईभी खाता॥ सेवक ईशसे करत पुकारा, विना उसके नहीं कोई है त्राता ॥ आदि ॥

नटी–आर्य्यनन्दन ऐसा न कहिये कि जितने बादशाह हिन्दमें आयेहैं उनमेंसे किसीनेभी इस पर दया न कीहै.

सूत्रधार–प्यारी ऐसा कौन बादशाह हिन्दमें हुआहै जिसने गऊपर दया करके गोवध बंद कराया है.

नटी–शायद आप यवन कुलभूषण अकबर बादशाहकी कथा भूलगयेहैं.

सूत्रधार-प्राणप्रिय हम अकबर बादशाहकी कौन कथा भूल गये।

नटी-सुनिये

(राग-जिला, ठमरी, ताल, पंजाबी)

सुनो हो नाथ यह कथा है जारी, गावें जिसे भारतके नर नारी॥ सुनो ॥ यवन कुल हुमायूं सुत अकबर, जिसके ताबे में हिन्दथी सारी ॥ सबपरजाको इक सम जाने, ज़ाती तअस्सुबको मारी कटारी ॥ सुनो ॥ ॥ करे न कोऊ किसी धर्मविरुद्ध कुछ, यह आज्ञा उसकीथी जारी ॥ एक समय उसने यह देखा, गोवधसे हिन्दु अतिही दुखारी ॥ सुनो ॥ तुरत वन्दकरनेकी दी आज्ञा, यह कानून किया हिन्द सारी ॥ हिन्दु धर्मकी हानि गोवधसे, और हानिहै हिन्दको भारी ॥ सुनो ॥ इसकारणसे कोऊ न मारे, जो मारे दण्ड दूंगा भारी ॥ इसन्याय से हिन्दु यवनका, प्रेम बढ़ाथा अति ही भारी ॥ सुनो ॥ ऐसा न शाह हुआ हिन्दमें जिस्से प्रजा हुई हो सुखकारी ॥ गोसेवक धन अकबरशाहको, कैसो भयो वह हिन्द हितकारी ॥ सुनो॥

सूत्रधार-शाबाश प्रिये शाबाश! तूने खूब याद दिलाया अबमुझकोभी अकबर बादशाहका न्याय याद आया? अरे प्रिये-"अकबर फरमान शाही दरबार मुमानियत गाओ कशी" को देखकर नेक बख्त मुहम्मदशाह, ग़ाज़ीशाहआलम बादशाहनेभी गोवध बन्द कियाथा.

विदूपक-पहर भर समझानें से अब इसेभी याद आया, क्या पहले सोये हुये बातें करताथा.

सूत्रधार-तो प्रिये चलो, इस उपस्थित मंडलीको काशी नि-

वासी गोसेवक पण्डित जगतनारायण रचित "अकबर गोरक्षा न्याय नाटक" खेलकर दिखावें.

नटी—प्राणप्रिय, हमने भी उसको पढ़ा है वह नाटक अत्यंत ही उपयोगीहै उसको अवश्यही इस मण्डली को दिखाना चाहिये.

सूत्रधार—तो प्यारी शीघ्र चलो उसका आरम्भ करें और रुप बनकर सभामें आवें, और अकबर का न्याय बतावें दिखावें सुनावें रिझावें.

नटी—तो चलो आर्य्यनन्दन विलम्ब नकीजिये (दोनो जातेहैं)

(पटाक्षेप)

अंक पहला.

परदा पहला

स्थान तपोवन में एक कुटीके बाहर ।

शिवदत ब्रह्मचारी प्रार्थना करताहै ॥

(राग—झिंझोटी,)

दरस तुम क्यों नही देते नाथ, क्यों नहीं देते नाथ ॥ दरस ॥
बहुत दिनन तप किया है मैंने, शिथिल भये सब गाथ॥दरस॥
मैं तो दीन तुम दीनबन्धुहो, फिर क्यों छिपायो मांथ ।
मेरी बारी निठुर क्यों होगये, हो तुम दीनानाथ ॥ दरस ॥
वह प्रतिज्ञा भूल गये क्या, जो कीथी भक्तन साथ ।
यदि यादहै फिर क्यों तजा मोहे, क्या मैं नहीं हुं अनाथ॥दरस
कोऊ अपराध भयो हो मोसे, क्षिमाकरो वह नाथ ।
सेवक तो है शरण तिहारे, राखो सिर पै हाथ ॥ दरस ॥

हाय ! शोक तप करते२ मेरा शरीर भी शिथिल हो गया, भगवान तो दूर रहे पर अभी तक किसी देवीदेवतानेभी दर्शन नहीं दिया, नहीं मालूम मुझसे क्यों अभीतक रुष्टहैं, यह कहही रहाथा कि आकाश से यह शब्द आने लगा—

(राग—झिला, ठुमरी)

नित सकल पदारथ मिले उन्हे जो करत सदा गोपूजन को ॥ नित ॥ उठ प्रात समय मन मगन होय, अति आदर सो जो चरण धोय ॥ सुरभी पद में जो लगन होय, वो पाये देवके दरशनको ॥ नित ॥ नव रुचिर कुसुम माला बनाय, बहु सुगन्ध चन्दन अगजुटाय । कर्पूर धूप नैवेद्य लाय, आराति उतार ले चरणनको ॥ नित ॥ कर जुगल जोर गो गुणन टेर, चिंतत फल मांगे बेर बेर । पुनि मिलत लगे नहीं नेकदेर, सेवक मन हर्षित भक्तनको ॥ नित ॥

अरे मुर्ख सकल पदार्थों की देनेवाली गऊ माता की सेवा त्याग देव दर्शन चाहताहै, अरे प्रथम सीढ़ी त्याग क्या तू अंतकी सीढ़ीपर चढ़ना चाहताहै तुझे डर नहीं कि गिरकर चकनाचूर हो जायेगा, प्रथम सीढ़ी गऊ माताकी सेवाकी नही उसके दूध घृत, दधि गोबर मूत्रका पंचगव्य बना कर पीयाही नहीं तपकरने बैठ गया अरे सुन ? जितने ऋषि मुनि, देव हैं इनसबने प्रथम गोसेवा और उसके पंचगव्यकोपानकर फिर तपको गयेथे जिससे वह ऋषि मुनि देवतावन गये हैं देख शास्त्रमें लिखा है.

गोमयं रोचना मूत्रं क्षीरं दधि घृतं गवां ।
षडङ्गनी पवित्राणि यासां सिद्धि कराणिच ॥

और देख जिन देवताओंके तू दर्शन की लालसा रखताहै वह सबी देवता हवि से प्रसन्न होतेहैं और हवि गोघृत के सिवा और किसी पशुके घृतसे नहोताहै देख.

अन्न मेव परं गावो देवानां हवि रुतमम् ।
पावनं सर्व भूतानां रक्षान्ति च वहन्तिच ॥ अ० ॥

अब देख, न तो तू कभी पंचगव्य पान किया और न कभी देवताओंको हविदी, कहो, फिर कैसे तुझे देवता दर्शन दें और

तीसरी बड़ीभारी बात देव दर्शन न देनेकी यहहै कि जहां गो-वध होताहैं वहांसे देवता ८ कोसतक दूर रहतेहैं देख.

यस्मिन्देशे भवेध्विंसा गवानां शत्रु सूदन ।
तस्मा द्वै योजना द्दुर्ध्वं देवा गछंति सत्वरं ॥

शिवदत्त–घबराकर । आपकोन हैं जो मुझसे ऐसा कह रहे हैं

नारद–हम नारद मुनि हैं.

शिवदत्त–नारदमुनि का नाम सुन, गद्गद हो प्रणामकर, धन्यहो महाराज जो आपने मेरी सुध ली, मैं आज अपने आपको बडा भाग्यशाली समझता हूं, आपकी दृष्टिसे आज मेरे सर्व पाप छूटगये धन्यहो आप धन्यहो जो अनाथ की सुधली! अब आप कृपा करके भगवतके मिलने का मुझे राह बताईये, मैं आपकी आज्ञा कापालन करुंगा,

नारद–देखयदि मेरी आज्ञाका तू उलंघन करेगा तो फिर में श्राप देकर नाश करदूंगा.

शिवदत्त–महाराज, प्राण जावें तो जावें पर आपकी आज्ञा कभी उलंघन न करूंगा.

नारद–अच्छा हमारी आज्ञा सुन और इसका पालनकर.

(राग जिला, ठुमरी)

सुनरे तपश्वी मेरे वचनको कोई तप करना चावेरे ।
प्रथम करे वह गोसेवाको फिर तप करने जावेरे ॥ सुन ॥
गोसेवासे विमुख जो होकर तप करने लग जावेरे ।
चाहे करे वह लाख वर्ष तप फल कछु नाहीं पावेरे॥ सुन
घरको त्यागे वनको भागे सिरपै जटा बढावेरे ।
पंचाग्नि तप जलमें बैठे कंद फूल फल खावेरे ॥ सुन ॥
तीर्थ जावे गंग नहावे चारों वेदको गावेरे ।
कोई देवता फल नाहि देगा भटक भटक मर जावेरे ॥ सुन

(राग, प्रभाती)

मानो जो बात हमारी ब्रह्मचारी, मानो जो बात हमारी।

जावो तुम गोवध अटकावो, पाप फैला है जो भारी॥मानो
गऊको कष्ट देत अति दुष्ट, गुण अवगुण न विचारी॥
करो उपदेश बतावो उनको, गऊ है बड़े उपकारी॥मानो
नगर २ जा ग्राम २ में, करो उपदेश यहजारी।
गउ माताको नाहि सतावो, सबकी है पालनहारी॥ मानो
गोसेवकबन सेवा बजावो, येही आज्ञा है हमारी।
करोगे जो आज्ञाका पालन, कराउंगा मुक्ति तुमारी॥मानो

शिवदत्त–महामुनि मैं आपकी आज्ञाका उलंघन नहीं कर सकता हूं। पर भारतकी अब ऐसी दशा होगई है.

(राग, नाटकी)

अब किसी में रहा न ईमान। अब किसीमें रहा न ईमान॥
देखे हमने छान छान बुद्धि मान ज्ञानवान ॥, अब
बडे बडे अचारी देखे, और ब्रह्मचारी देखे,
तन भभूत धारीदेखे, सिर पर जटा भारी देखे,
हैं ईमान से ग़ल्तान, नहीं जानते नादान ॥ अब
ज्ञानवाले मान वाले, बड़े खान्दान वाले,
आज्ञा फरमान वाले, छोडा सबने ईमान
कलयुगने आन, भूलाया है ज्ञान, बनाया शैतान ॥ अब

अब कहिये महामुनि मैं किसको उपदेशकरूं क्योंकि जो सबके शिरोमणि ब्राह्मणक्षत्री इत्यादि हैं.वहभी तो अब धर्मकी ओर दृष्टि नहीं देते हैं फिर गोवध बन्दकैसे हो सकता–

नारद–तभी तो इनकी ऐसी गति होगई है.

(सवैयाकी भांती)

ब्राह्मणोंको ब्रह्मत्व गयो जबसे गोमहिमा नहीं उच्चरी।
क्षत्रिनको क्षत्रत्व गयो जबलेत नहीं सुद्ध यह इनकी ॥
वैश्य कंगाल भये तबसे जबसे गउ पालनहै तजदी ॥
औरु शूद्र भिखारिभये तबहीं जब सेवा तजी है गउअनकी

और सुन गोवध रूपी महापाप जहां होता है वहां दरिद्र ता देवी भी जा वासकरती है, देखो शास्त्रमें लिखा है.

गोवधा दुनिवार्यंच यत्रसंजायतेऽनिशं ।
ब्रह्महत्यादि पापानि तस्मिन् ग्रामे रतिमर्म ॥ पद्म०॥
इस लिये इन भले मनुष्योंको तू जाकर समझा कि यदि तुम सुखसे रहना चाहतेहो तो गोवध महापापके हटानेका यत्नकरो नहीं तो एक दिन ऐसी गति होगी कि जैसे किसीग्राममें आगलग जानेसे पवित्र मन्दिरभी भस्म होजाताहै, वैसेही तुमभी इसमहा पापसे नाशहो जावोगे.

शिवदत्त—अच्छा महामुनि मैं आपकी आज्ञा पालन करनेकेलिये जाताहूं?

नारद—शाबाश पुत्र शाबाश, भगवान तेरी इस कार्य में सहायता दे, पर इस बातको याद रखना कि धर्मके कामो में कष्ट बहुत होताहै यदि तुझ पर कोई कष्ट पड़े तो इस काम को त्याग मत देना.

शिवदत्त—महामुनि प्राण रहे तक तो इसकाम से मुंह नहीं मोड़ूंगा.

नारद—शाबाश, पुत्र यदि तेरा यह विचार हैं तो तू यह कार्य भी सिद्ध कर लेगा, अब शीघ्र जाओ और हमारे वचन को पुरा कर दिखाओ.

शिवदत्त—प्रणाम कर— खुशी २ जाता है

नारद—शिवदत्तके चले जानेउपरान्त, शिवदत्त हमारी आज्ञाको पूरा करनेके लिये गया तो है पर इसको कष्ट देकर परीक्षा करनी चाहिये कि यह कष्ट होने पर इस कामसे हट तो नहीं जाताहै, पर इसकी परीक्षा कौन करे क्योंकि हम तो जा नहीं सकतेहैं (मनहीमनमें कुछ सोचकर) ठीक है यमदेवके परीक्षक[१] दूत को इसकी परीक्षाके लिये इसके पीछे लगा देना चाहिये, क्योंकि वह यमदेवकी आज्ञानुसार सर्व मनुष्यों की धर्म परीक्षाके लिये सारी भूमि में फिराही करता है उसीको इसके पीछे लगादेना चाहिये। यहसोच कुछ मनमें पढ परीक्षक दूतको बुलाते हैं.

---

१ यह एक यमराजके दूतका नामहै जो सदैव मनुष्यों को अच्छे कामोसे हटा बुरे कामों में लगाता है। मुसलमान कृस्तान इसको शैतान कहते हैं और हिन्दु इसको दुष्टात्मा या परीक्षक कहते हैं.

(परीक्षक का प्रवेश.)

नारदमुनि के आगे हाथ जोड़कर.

(राग इंद्रसभा.)

ऋषीश्वर मुनीश्वर करुं मैं प्रणाम, बुलाया यहां आपनेक्यों गुलाम जोहो हुक्म वह आप फरमाईये, बजालाऊं मैं आपका जल्द काम॥ हो करनी परीक्षा किसी भक्तकी, बतावो मुझे उस का नाम और ग्राम ॥ परीक्षा करुं उस की जाकर वहां, सताऊं कई ढंगसे सुबा शाम ॥ सताताहूं उसको करे जो धर्म, मेरा तो येही काम है गा मुदाम॥ लेकिन मैं डरताहुं दृढ़ भक्तसे, उसपे मेरी अक्लतो होती है खाम ॥

नारद–ऐ ! यमदूत परीक्षक, हमारा यह कामहे कि हमने एक शिवदत नामके ब्रह्मचारी को भारत वर्षमें गोवध पाप मिटाने और गोरक्षा पुण्य फैलानेके लिये भेजाहै । सो तू जा और उसकी परीक्षा करता रहियो कि वह दुःखके कारण इस पुण्य कामको त्याग तो नहीं देता है ! यदि वह इस कामको त्याग दे तो उस को तुरंतही यम महाराजाके पास लेजाकर मेरेवचन के उलंघनका दंड दिलायो, और यदि काम पुरा कर दिखायतो विष्णूके पारष दों (दूतों) को बुलाकर इसको गोलोकमें पहुंचादीजियो, बस इसी कामके लिये तुझको यहां बुलायाहै.

परीक्षक–महामुनि मैने समझाथा कि कोई बडाभारी कामहोगा, मुनि एक गरीब ब्रह्मचारी की परीक्षा करनी कौनसी बड़ी बातहै एक ही परीक्षासे इसके दम खुश्क कर डालूंगा, अच्छा तो मैं प्रणाम करताहुं और अभी इसके पीछे लगताहूं.

नारद–अच्छा हमभी किसी और देशकी दशा देखनेको जा-तेहैं । यह कहकर नारदजी रमतेराम होतेहैं और परीक्षक शिवदतके पीछे जाताहै और बहुत जल्दी पास जा पहुंचता है.

अंक १ परदा दूसरा.

शिवदत्त—वनमें गाता हुआ जाता है.

(राग होली)

मुनीकी आज्ञा बजाऊं। भगवत दरशन पाऊं॥ मुनी॰
जो फल मैंने तपसे न पाया, मुनी के वचनसे पाऊं।
जाऊं वजाऊं मुनीकी अज्ञा, वचन पुरा कर दिखाऊं।
अंत गोलोकमें जाऊं॥मुनी॥नगर नगर और ग्राम ग्राममें,
गऊके गुणको सुनाऊं। बचाऊं सबीको पाप गोवधसे,
धर्मकी ओर लगाऊं। सबीको स्वर्ग पहुंचाऊं॥ मुनी॥

परीक्षक—शिवदत्तका गाना सुनकर? अरे भले मनुष्य यह तू क्या वक्ताहै? भला कभी पशुरक्षा करने कराने से भी भगवत दरशन होतेहैं! अरे भगवतके दरशनका मार्ग भगवतभक्ती जप तप है, तुझे किसने वहकायाहै जो तू तप छोड़कर एक पशुरक्षाके लिये जाता है.

शिवदत्त—मुझको वहुत दिन तक तप करनेसे भगवतके दरशन तो दूर रहे किसी एक छोटेसे भी देवताके दरशन नहुये, मैं इस कारण से वहुत दुखीहोरहाथा कि आज महामुनि नारदजी आकाश वाणी द्वारा मुझे यह कहा कि यदि तू हमारी आज्ञा माने तो तू गोरक्षाका प्रचार कर हम तुझको भगवत का दरशन करादेंगे, उस महामुनि की आज्ञानुसार यह काम करनेके लिये जाताहूं.

परीक्षक—अरे? नादान इसकलिकालमें महामुनी नारदजी किसीसे कभी मिलतेहैं? अच्छा वता तो क्या वह तेरे सन्मुख आये थे.

शिवदत्त—मेरे सन्मुख तो नहीं आये, पर उन्होने मुझको आकाशवाणी द्वारा यह बात कही थी.

परीक्षक—अरे दीवाने, किसी जिन्न भूतने तेरे तप नाश करने के लिये तुझको ऐसा कहा होगा.

शिवदत्त—यदि मुझको किसी जिन्न भूतने ही कहाहो, तोभी कुछ उन्होने वुरा नहीं कहा, क्योंकि हम साधू संत कहातेहैं और

साधू संतोंका येही धर्महै कि आपभी तरें और औरोंकोभी तारें, फिर यदि हम नाभी तरेंगे, तो और तो गोवध महापापसे दूरहोवेंगे, और हमारे शास्त्रों में गोरक्षा करने कराने का भी तो बड़ाही पुण्य लिखा, है यदि पुण्य न मिलेगा तो पाप भी तो न लगे गा.

परीक्षक—अरे इस कार्यमें तुझे बड़े २ कष्ट होगें, इसलिये तू इस कार्य को छोड़कर थोड़े दिन और तपकर, तुझे अवश्य भगवत दरशन होंगे.

शिवदत—हमतो इस कामको ज़रूरही करेंगे, चाहे भगवत दरशन हों चाहे नहो, यह कह कर रवाना हो जाता है.

परीक्षक—(मनहीमनमें) यह निश्चय मुनि की आज्ञापालन करेगा ! पर मैं भी इसको विना छले पीछा न छोडूंगा.

(राग, लटकनसे हम जाते जंग पर)

नये नये छलसे कलसे वलसे करुं परीक्षा मैं हरदम ॥
वचन परेखूं सतपन देखूं अती वढ़ाकर इसपर गम ॥ नये-
कहां तक रहता दुख को सहता खूब परेखूं इसका धर्म ॥
जहां पर जावे वहीं मैं जाऊं काम विगाडूं करके श्रम ॥ नये
नाना भांतके रुप वनाऊं छलूं मैं इसको देके अलम ॥
काम को छोडे वचन को तोडे नाम न लेवे जीते दम ॥ नये

शिवदत—तपोवनसे बाहरनिकल खड़ा हो (मनही मनमें) कौन ऐसी जगह जाऊं जहां शीघ्रकार्यसिद्धहो (कुछ सोचकर) ठी कहै दिल्लीजाऊं तो आशाहै कि वहुत ही जल्दकाम सिद्धहो जावेगा, कारण यह कि वहां इस समय बहुत अच्छे २ विद्वान श्रेष्ठपुरुष रह-तेहैं। इसलिये प्रथम वहीं जाना चाहिये, यह सोचकर दिल्ली की तर्फ रवाना होताहै। और परीक्षकभी उसके पीछे छिप जाता है.
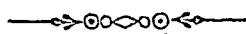
अंक १ परदा ३ नगरमें मंदिरका

(स्थान दिल्ली नगर एक मंदिर में।)

कुछ मनुष्य वैठे हुये कथा सुनरहे हैं।

(राग भैरवी)

गऊ करती हा ! हा ! पुकार, हिन्दु जाग के देखो ।
यवन मारें करके रार, हिन्दु जागके देखो ॥ गऊ ॥
भरत भूमी की गऊ हित कारी, हिन्दु धर्मकी आधार ।
तिस गाय के है गले मां, फिरती दीखत तलवार ॥हिन्दु॥
या लोक अरु पर लोक मां, सबकी आवे कार ।
फिर ऐसी गऊ मातको, यवन मारें हैं कटार ॥ हिन्दु ॥
जिस के दरस से पाप मिटत हैं, देवें जो अमृत धार ।
जाके पीये बल बुद्धी होतहै, रोग नशावन हार ॥ हिन्दु
देतीहै सुत बहु उपकारी, करते जो गुमरा कार
हल मों चल गाडियें खैंचत, पीठ पै लेते हैं भार ॥हिन्दु॥
गहरी नदी वैतरणी जो है, करती है उससे भी पार ।
फिर ऐसी गऊ मातकी,रक्षाका करो न विचार॥ हिन्दु॥
सबी काम तज करो गोरक्षा, होवे सुखी संसार ।
सेवक गऊ की रक्षा करके, हो भवसागर पार ॥ हिन्दु ॥

परीक्षक—ब्राह्मणके भेषमें उठकर अरे मूर्ख स्वर्ग एकपशु रक्षासे प्राप्त नही होसक्ताहै, स्वर्गका साधन (कथा करनेवाले पंडितकी तर्फ इशाराकरके) ऐसे२ महत्माओंकी सेवा करनेसे मिलताहै,यदि गोरक्षा करनेसे स्वर्ग मिलता होता तो प्राचीन समयके हिन्दु कभी गउको वधकर यज्ञ न किया करते (पंडित) से क्यों महाराज प्राचीन समयमें गउमारी जातीथी ना,

पंडित—हां ! यज्ञमें मारी जातीथी, इसीलिये उस यज्ञका नाम गोमेध यज्ञ शास्त्रोंमें लिखा है.

परीक्षक—शिवदतसे, क्यों ? जो पंडितजी महाराजने कहा है समझा,

शिवदत्त—धन्य हैं आजकलके पंडित जो गोमेध-यज्ञका अर्थ गोवध समझते हैं.

परीक्षक—क्रोधसे ! क्या पंडितजी मूर्ख हैं जो गोमेधका अर्थ

नहीं समझाते। धिक्कार है तुझको जो ऐसे महात्मा विद्वानोंको तू मूर्ख समझता है। गर्दन में हाथ देकर मन्दिरसे बाहर निकाल देता है.

शिवदत्त—बाहर आकार (मनहीमनमें) यहां बोलना ठीक नहीं, क्योंकि यहां सब खुशामदी स्वार्थी बैठे हैं, चलो तनीसाधुओंकीभी परीक्षाकरें, यह सोचकर यमुनाजीके किनारे साधुओंकी मंडलीमें जाता है.
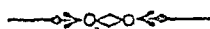
अंक १, परदा ४ नदीपर एक मंदिर.

शिवदत्त—महंतको साधुओंके बीचमें बैठे देखकर प्रणामकर.

(राग, ठुमरी)

उठो बन्धू धावो गायें बचावो, गऊ की विपत को छुडावो ॥ उठो ॥ तुमरा काम येही है भ्राता, जगसे अधर्म मिटावो ॥ उठो ॥ अधर्म गोवध फैल भारतमें, इसको जा तुम हटावो ॥उठो॥ देशोदेशोपदेश करो तुम, जगमें धर्म को फैलावो ॥उठो॥ गो रक्षा से धर्म बचेगा। सबको यह समझावो ॥ उठो ॥ सेवककी यह अर्ज स्वीकारो, अंत स्वर्ग सुख पावो ॥ उठो ॥

परीक्षक—साधुके भेषमें बैठाहुआ उठकर? अरे जब हम लोगोंने घरबार छोड़ा तो फिर कोई मरेकोई जीये हमको जगत के पचड़ोंसे क्या मतलब, हम दुःखों में पड़ें, यदि तुझको स्वर्गकी इच्छा हो तो भांग गांजापी और मस्त पड़ारह, क्योंकि जो यहां सुखसे रहेगा वह स्वर्ग में भी सुखसे रहेगा। कान लगाकर सुन, भांग में कैसे २ गुण हैं.

(राग नाटकी)

तन भये दंड अग्नि प्रचंड जब पीये भंग का लोटा।
सब रोग हरे सब सोग जरे जब देवे भंगको घोटा ॥
जो पीये निवल हो, उसे भी बल होवे बदन से मोटा।
तनसाफ, मन साफ, जो होवे आदमी खोटा ॥

जब हो त्यार कंद दूध डार फिर पीले यार भर लोटा ।
पी देख, सुख पेख, रहे न किसी बात का टोटा ॥
नदूध मिले न कंद मिले तो बनाले भंगका गोला ।
न कर तू चाह, सूखा उड़ा, अरु मुहंसे बोल बमभोला ॥
जा सुबा शाम शिवजीके धाम नित घोट भंग इक तोला।
शिवको चढ़ा, फिर पी तूजा, खुश होवें महादेव भोला ॥
नित भंग घो तू गंग,चढाले अंग,देखावे रंग, निरालेढंग,
लेऐ यह कूंडी सोटा ॥ तब भये ॥

॥ दोहा ॥

भंग गंग दो बहन हैं रहैं शीव के संग,
जगत तारणी गंगहै लड्डुआ खानी भंग ॥

(महंतकी तर्फ इशारा करके)

क्यों महंतजी महाराज! ठीक है ना ।

महंत--टीक है, पर जब भंगके संग गाजें का तरंग मिले, तब तो पूरा रंग खिले ।

भंगके तरंगसें जब लगे गांजेका दम
होय भयानक मूरती भागे देखत यम

(राग, काफी त्रताला सुन गांजेके गुण)

ले जो गांजे की बहार ले । छुट जाये उसका घरद्वार व्योपार कार पिता मात नार सुत यार ॥ ले० ॥ चिंता सबी ही गांजा मिटावे, भरके चिलम जब दम को लगावे । भवसागरसे पार होजावे, वार वार फिर जन्म न पावे, ये देवे उसको तार ॥ ले० ॥ महादेव जी इसको पीता, साधू संत सब इससें जीता, पीकर पढते भगवत गीता, जन्म सुफल करलीता. महिमा इसकी है अपार ॥ ले० ॥

शिवदत–(मनही मनमें) देखो, इनस्वार्थियों को सब काम तो जगके करतेहैं और फिर अपने आपको संसार सें अलग बतातेहैं। भला हम उनमूर्खोंसे क्या कहें जो इनको महात्मा जानकर इनकी

सेवा करते हैं, वह यह नही समझते कि इनकी सेवासे पुण्यके बदले पापहोता है । क्योंकि बीज ऊसर भूमि में बोनेसे कभी नही उपजता किन्तु उलटा नाश हो जाता है, पस, ऐसेही इनकी सेवा से मनुष्योंको लाभके बदले में हानि पहुंचती है । क्योंकि यह अपने सेवा करनेवालोंकोभी अपने सरीखा बनाते होंगे जिससे वह वे चारेभी इनके संगसे घरघाटके न रहते होंगे, किसी महात्माने आज कलके ऐसे साधुओं पर यह सत्य कहा है.

परीक्षक—शिवदत्त को कुछ धीर २ मनमें बोलते सुन कर ! अरे ? तू क्या धीरे २ बक रहा है ज़रा ज़ोरसे कहो हमभीसुनें

शिवदत—ज़रा ज़ोरसें, किसी महा पुरुषनें यह सत्य कहा है.

नारी मुई घर सम्पति नासी । मूंड मुडाय भये सन्यासी ॥
ते विप्रनसे पांव पुजावें ॥ उभय लोक परलोक नसावें ॥

सो तुम सभी ऐसेही मालूम होते हो यादि तुम सब साधू होते तो तुममें यह लक्षण अवश्यही होते, और मेरी प्रार्थना सुनकर अवश्यही गऊ माताके दुःख हरने के लिये तत्पर हो जाते ? सुनो साधुओंके यह गुण होते हैं.

' चौपाई '

संत सहहिं दुख परहित लागी । पर दुःख हेत असन्त अभागी ॥ भुंजें तरु सम संत कृपाला । परहित नित सह विपत विशाला ॥

परीक्षक—महंतसे ? गुरुदेव इस दुष्टको शीघ्रही यहांसे निकाल देना चाहिये, क्योंकि यदि कोई सेवक इसकी ऐसीबातें सुनेगा तो वह तुरन्तही अपने से विमुख हो जावेगा.

महंत—दो चार—चेलोंको पुकार कर । अरे अडंग पूरी जबर जग गिर इस निंदक पतितको कान पकडकर अखाडेसे बाहर निकाल दो.

चेले—बहुत अच्छा गुरुदेव ये कह कर, कोई शिवदतका हाथ पकडकर कोई कान पकडकर अखाडेसे बाहर निकाल देते हैं.

शिवदत–अखाडेसे बाहर आकर! अब क्या करूं किसके पास जाऊं, जो गऊ माताका कष्ट हरे। ठहरकर(मनही मनमें) ठीक है? यहांके रईसोंकी भी परीक्षा करनी चाहिये कि यह कुछ सहायता दे सकते हैं या नही। यह सोचकर रईसोंके मुहल्लेकी तर्फ जाता है।

अंक १, परदा ५ नगरका

स्थान, से० पनारु दासका मकानमें

वहुतसे वडे २ सेठ साहुकार एक रईसके मकान में बैठे हुये मद्यपान कर रहेहैं और उनकेबीचमें एक रंडी गा रहीहै।

शिवदत–यह हाल देखकर एक कोनमें चुपके जा खड़ा होता है.

रंडी खडे होकर गायन करती है. (राग तराण)

तनन तोम ततन तोम् तनन,
नादर दर दीं दीं ता दीं दीं तननन,
दीं दीं दीं दींतन न न न न न न (३)
घिट घिट घिट धा नग नग नग तोम,
तननन त न न न तोम, त न न सन न न थोम,
घिट घिट घिट धा, घिट किट धा, घिट किट धा,
किडान घिट धा,किडान घिट धा, किडान घिट धा, ना

सुरावट

किढान धा धा धा धा, कता गादिगन, धा ॥
तकिट धिकिट नगधर किटि तक थोंगा, कि० ॥
धी धी धी धी न न धी धी न न धी धीन धीन,
तक धुमी किटितक नगधर किटि तक,
सारे गरे सा सानी धप मग मग मगरेसा ॥
मधनी सारेग मगरेसा नीधपम गम गम गम गरेसा,
किडान धिटधा किडान धीटधा किट धिटधा, कि०

मजलिसी–रंडीका यह तान सुनकर वाह २ करते हैं, और रंडी बैठ जातीहै.

शिवदत–रंडीके बैठने बाद, महफिल के समीप आकर.

(राग भैरवी, गजल, ताल दीपचन्दी)

मरती बचाओ गायको, पी दूध क्यों विसर गया ॥
करती उपकार है तुमरा, कृतघ्न तुम क्यों भया ॥ मरती॥
मा जो दूध पियावे है, बहुत वर्ष तक नहीं ॥
परन्तु गाय तो हमेशा, पियावे है करके दया ॥ मरती ॥
करोगे गऊ की रक्षा न, कहां से दूध पावोगे ॥
और लावोगे कहां बैल, जो हल गाडी तुम दिया॥मरती॥
गोवध से नाश हो जावोगे, जब अन्न न दूध पावोगे ॥
पछतावोगे पछतावोगे, मानो तुम मेरा केया ॥ मरती ॥
प्रभात मां जो बालको, दही या दूध मांगोगे ॥
कहां से लाके देवोगे, बतावो तो हमको भैया ॥ मरती ॥
तुम्हारी सहाय जो करे, फिर उसकी तुम क्यों न करो॥
बतावोतो हमे सबक, क्या ये शास्त्रने केया ॥ मरती ॥

परीक्षक–सौदागरके भेषमें बैठा हुवा उठकर शिवदत्तसे? अरे पागल ऐसी खुश मजलिसके रंगमें भंगकरने को तू कहां से आयाहै, अगर तुझको भी एक प्याला शरावका पीना हो तो यहले, इसको पीकर रोनी सूरत छोड मजलिसका मजा देख ? अरे नादान गऊकी रक्षा दूधकी ही खातर करनी चाहिये, सो यह शराब, रंग माहताब दूधसे भी बढ़कर मज़ा देतीहै, सुन तुझको इसके हम गुण सुनाते हैं:

(मेरे काजीसाहब आज सबक नही याद हुआ, इस रागमें)

मेरा कहना यह मान, पीले प्याला मै का तू यार ॥
अमृत दूधसे भी बढ़के देवे ये बहार, गांजा भांग अफीम पोस्त सबकी ये सरदार ॥ मेरा० ॥ बढावे सुद्ध बुद्ध को, करे बदन तैयार, सबी रोग शोकको पलमें देवे टार ॥ मेरा ॥ राजा बाबू सेठ महाजन सबकी यह अधार, एक घडी न मिले अगर ये रोवें ज़ारोज़ार ॥ मेरा ॥ काजी पंडित मुल्ला साधू जो रक्खें आचार, मुत्फ़ मिले तो पीलें झटही बिना लिये डकार॥मेरा॥जो

पीये वह झूमे लेटे कूचे गली बाजार, जो कोई मैकी निन्दा करते देवें उसकोगार ॥ मेरा ॥ निन्दा करो न कोई इसकी येही जगतमें सार, पीके देखो एक प्याला छूटे सवी विकार ॥ मेरा ॥ वहे विहिश्तमें नहरें इ-सकी कहे किताव पुकार, जो कोई इसकी निन्दा करते होंगे गुनागार ॥ मेरा ॥ मै की महिमा वह क्या जाने पीया नही इकवार, महिमा इसकी वोही जाने पीते जो हरवार ॥ मेरा ॥ पीर पी पैगम्बर पी, पीती सवी औतार ॥ फिर जो करे वेअदवी इसकी, उसे खुदाकी मार ॥ मेरा ॥ पीले पीले इसको तू, भरा प्याला यार, पीते साथही सात पुश्तका हो जावे उधार ॥ मेरा ॥

देखे इसमें कैसे गुण हैं । भरा हुआ प्याला शिवदतके मुंहके आगे झुकाता है ।

शिवदत्त–पीछे हटकर, दूर हो दुष्ट, पतित, हमारा धर्म भ्रष्ट करता है.

परीक्षक–मजालिसके मालिक सेठ पनारु दाससे ? देखो साहेव यह कैसा वदमाश है, पीताभी नहीं और जाताभी नहीं, नाहक मजालिसके रंग में भंग डालताहै. (से० पनारु दासके पास आकर कानमें) अगर कोई वादशाहसे कहदेगा या मुसल्मानोको खवर कर देगा कि कल सेठ पनारु दासकी मजलिस में गोरक्षाकी चर्चा हुईथी तो वह आपकी कैसी दुर्दशा करेंगे,

पनारुदास, डरकर ? ठीक है साहेव, गोरक्षाके नामसेही मु-सल्मामान चीढ़तेहैं.

परीक्षक–तो फिर इस वदमाश को जल्दी यहां से निकल वा दीजिये, जिस्से कोई खरावी नहो.

पनारुदास–सिपाहीको पुकारकर ? अजी कुतुवखां इसको यहां से जल्दी निकालदो.

कुतुवखां–शिवदतकी गर्दन पकड़कर वाहर कर देता है.

शिवदत्त—मजलिससे बाहर आकर हाय! यहां के हिन्दुभी यवनोके संगसे एक नाम मात्र के हिन्दु रहगये हैं किसीने सत्य कहाहै "तुख्म ता सीर सोहबते असर" सो यवनोंकी सोहबतसे यह पूरेही यवन बन गये हैं, खाली सोहबतसेही यवन नही बन गये हैं परन्तु इनके वीर्य्यमें भी फर्क मालूम होताहै। नहीं तो क्या हिन्दुहो और गऊका कष्ट सुनकर चुपरहें और कुछभी उपाय न करें। अस्तु, अबयहां रहना अच्छा नहीं है क्योंकि कहीं ऐसा नहो कि राज्य दरबारी हिन्दु ही बादशाह और मुसल्मानोके खुशकरने और अपनी पदवी बढ़ाने के लिये मुझको पकड़वादें और यह सब काम निष्फल हो जावे, पर अबमैं किसके पास जाऊं जो यह कार्य्य सिद्ध हो. ईश्वर से प्रार्थना करता है.

(राग नाटकीःचालका.)

कहां जाऊं रे, कहां जाऊं रे। नन्दनी गऊ है बिचारी, वृथा जावे मारी ॥ कहां ॥ देतीहै दधी, दूध, माखन, मलाई, घी, खाये खाड़ पीवे पानी बनमें चरे, कस्साई काट खाये,कंठ इसका चिराय,बिन अपराध बिचारी मरे। त्राहि! हाय! हाय! हाय! बचाता नहीं कोई इसको हिन्दभर पर, दुःख भंजनरे? निर अपराध गऊ मरे, बार बार कहुं ललकार, गो ब्राह्मण प्रतिपाल कोऊ सुने न गऊकी गोहार। कन्हैया अब इस को बचा तू ले, गोकुल में गऊएँ बचाई, जसोधा छैया इसको छुडातूले। गुण गाऊं रक्षण पाऊं वारी जाऊं बलबल जाऊं। कन्हैया अब गऊको बचातूले ॥

(चुपहो मनही मनमें सोचकर) ठीक है! अब किसी हिन्दु राजधानीमें चलना चाहिये। पर किस राजधानीमें जाऊं केवल तीन ही तो भारतमें हिन्दु बडी राजधानीहैं। पर यह सुनेमें आया है कि जैपूर, जोधपूरके राजा तो यवनोंके गुलाम बन गये हैं। केवल एक उदेपूर राजधानीका महाराजा बचा है जिसने अभीतक यवनोंका दासत्व ग्रह-

ण नहीं कियाहै (कुछ सोचकर) ठीकहै! उसकीभी परीक्षा करनी चाहिये, यथार्थमें यह बात सत्य है या नहीं। यदि वह गऊ माताके दुःख सुनकर कुछभी दुःखी हुआ तो जाना जायेगा, यह यवन का तावेदार नहीं है और यदि दुःखी नहीं हुआ तो साबित हो जावेगा कि यहभी यवन दासत्व ग्रहण करलेगा। बस ठीक है वहीं चलना चाहिये। यह सोचकर उदैपूर की तर्फ रवाना होताहै. और रास्ते में दूरसे एक अति मनोहर ताल पर हरदत ब्रह्मचारी की कुटिया, देख मनही मन अहा! यह किसी महात्माका स्थान है चलो दरशन करें उधर जाता है ।
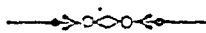
अंक १ परदा ६

स्थान. हरदत ब्रह्मचारीकी कुटिया हरदत
कुटियाके बाहर कल्याणी नाम
गऊ माताकी पूजन करताहै

हरदत ब्रह्मचारी कल्याणी नामकी एक गऊका पूजन करता है

शिवदत—कुछ दूरसे गो पूजन होता देखकर (मनही मन) यदि मैं पास गया तो पूजनमें विघ्न होगा इसकारण एक झाड़की आड़में मैं बैठकर गोपूजन देखना चाहिये, झाड़की आड़में बैठकर देखता है.

परीक्षक—यहां शिवदतकी उमदा परीक्षा हो सकूतीहै कारण ये है कि वह दो मुसलमान सिपाही इधर आते हैं उनको कुछ सिखलाकर गऊको उनसे कष्ट दिलावे फिर देखें यह कष्ट देख कर क्या करता है। यह सोच मुसलमानी फकीर बनकर सिपाहियों के पास जाता है और पास पहुंचने पर उनको अस्सलाभालेकुमकरताहै

सिपाही—उत्तरमें, वालेकुमसलाम करते हैं.

परीक्षक—आप लोग कहांसे तशरीफ लाये हैं. और कहां तशरीफ ले जायेंगे

सिपाही—हम लोग नव्वाब आजमखांके नौकर हैं कुछ काम

के लिये दिल्ली गयेथे वहांसे होकर अब अहमदाबादको जाते हैं। कहिये आप कहां तशरीफ लेजाते हैं.

परीक्षक—जहन्नुम में.

सिपाही—हें! हें! हें! आप ऐसा क्यों फरमाते हैं, आपको ऐसी क्या तकलीफ है जिसके सबबसे ऐसा कहते हैं.

परीक्षक—क्या अगर हम अपनी तकलीफ ब्यान करें तो आप हमारी, तकलीफ रफा कर सकेंगे.

सिपाही—(इनशा अल्लाताआला) जहांतक हमसे बन सकेगा आपकी तकलीफ दूर करनेकी कोशिश करेंगे, आप ब्यान कीजिये.

परीक्षक—तकलीफ यह है कि हमने यह मनोती मानी थी कि अगर नव्वाब आजमखां अहमदाबादके नव्वाब बनेंगे तो हम खुदाकी राहमें एक गऊ कुर्बान करेंगे सो नव्वाब साहेब अहमदाबादके नवाब बन गये हैं, लेकिन हमसे अभीतक खुदाकी राहपर गऊकी कुर्बानी नहो सकी। कोई बकरीद गुजर गई और अब फिर बकरीद नजदीक आगई है और इस जगहमें गऊ मिलती नही हैं, फक्त एक हिन्दु फकीरके पास एक गऊ है वह काफिर देता नहीं है. और अगर अब भी कुरबानी न हुई तो हम खुदाके हुजूर क्या मुंह दिखाकर जवाब देंगे, कहिये फिर हम जहन्नुम में न जायेंगे. तो कहां जायेंगे.

सिपाही—बस, इसी छोटीसी बातसे आप इतना रंज उठा रहे हैं? अजी यह कोनसी बडी बातहै, आप बताओ तो सही वह काफिर फकीर कहां रहता है जो आपको गऊ नहीं देता है.

परीक्षक—इस तालावके पूर्व तर्फ एक तकियामें रहता है.

सिपाही—चलो बताओतो.

परीक्षक—दोनोको संगलेकर हरदतकी कुटीयाकी तर्फ जाताहै.

—०-०:०:०-०—

अंक १ परदा ७.

हरदत्त—गो पूजन कर गऊकी उपमा कर रहा है.

(राग भैरवी, ताल, पंजाबी)

जय जय जग जननी गो माई। जग जननी गो माई ॥जय॥
दुःख दलन सुख करन हेतु, सुत पीर हरन भव आई॥जय॥
देव दनुज गन्धर्व नागनर, विदित सवही प्रभुताई ॥
उदधीत सुता पति हर विरंचिनित, वंदित पद मनलाई॥जय॥
धरत पयोधि तुर्य तन मण्डल, देत दुग्ध अधिकाई ॥
गिर वन पर्वत नदी नदादियुत, तुअ तनु जन सुखदाई॥जय॥
निज सन्तति के काज छीर दै, चरत आपु तृणधाई ॥
धनि धनि मातु नेंह तुव निरखत, कहत शेष सकुचाई॥जय॥
जा कहं पावन जानि दया निधी, आपु गुपाल कहाई ॥
सेवक ताहि तुमहु नित सेवहु, भव मल सकल वहाई ॥जय

हे ! माता तू धन्य है, तेरी कृपा विना कोई भी कार्य्य संसार का नहीं होसकता है। ठीक है ! तवी तो ईश्वरने ८४ लाख प्राणीयोंमें तुझे श्रेष्ट वनाया है। पर शोक ! कि कलिकालके मनुष्य तेरे गुणोको भूल गये, इन निरवुद्धियों को इतना भी ज्ञान नहीं रहा, कि यदि गऊमें कुछभी वड़ाई न होती तो रामकृष्णादि अवतार इसके चरणोकी रजको नित्य अपने मस्तकपर क्यों धरते और वीर अर्जुन इसकी रक्षा के लिये १४ वर्षतक क्योंवनमें भटकता फिरता। निस्संदेह गऊमें कुछ तो गुण है, तवी तो इसको ऋषि मुनिभी मानतेथे। देखो जव कामधेनुके श्रापसे महाराजा दलीपके सहस्रों यत्न करने परभी पुत्रोत्पन्न न हुआ, तव महर्षि वशिष्ठजी की आज्ञासे उनकी नन्दनी नाम गऊके पूजन प्रताप से महाराजा रघुः कैसा पुत्र पाया। किन्तु गोभक्त भी होतो महाराजा दलीपके ऐसा होना चाहिये, प्राणजायें तो जायें पर भक्ति नजाये। (कुछ विचार कर) आहा! हमारे महाराजा प्रताप सिंहजी भी पूरे गोभक्त हैं और

यूं तो नाम मात्रके हजारों गोभक्त और गोसेवक भरे पडे हैं। पर ? धन्य है महाराज की गोभक्ती, कि जबलों गोपूजन नहीं करलेते तबलों कुछभी कार्य्य नहीं करते, और कल्याणी में तो उनका अटल ही प्रेम है। जिसदिन कल्यानीको हमे दान दिया, उसदिन कितने कातर हुये हैं, वीर पुरुषके अश्रुपात उसीदिन देखनेमें आये, यदि हम गुरु दक्षिणामें इसे मांगे हुये न होते तो कभी सम्भव था किव इसे देते, कभी नहीं (गऊको पूच कारकर) कल्याणी तुम ऐसीहि हो, तबी ना महाराजा प्रतापसिंह उदयपूरसे चलकर तुम्हारे दर्शनार्थ यहां आया करते हैं। नहीं तो इस यवन राज्यमें उनका क्या कामा ? पर जबसे इनके भाई जयपूर, जोधपूरके महाराजाओंने यवन दरबारको अलंकृत कर निज कुलको कलंकित कियाहै। तबीसेही महाराजा प्रतापसिंह कुछ: विरक्तसे हो रहेहैं, इनके मुखपर सर्वदा कुछ उदासी सी छाय रहती है (कुछ ठहरकर) अहो? यद्यपि यवनोंका आधिपत्य सारे राजपूत राजाओं सरदारोंने स्वीकार किया है और ग्रामसिंहके समान उनके दरबारी हो कृपा पात्र बने हैं। पर यह राज्यभ्रष्ट होनेपरभी अपनीही "टर्र" में रहे। अस्तु ? अब थोड़े दिनोंसे कल्याणीके नेत्रोंसे अश्रुपात हुआ करताहै नजाने इसका क्या कारणहै? ईश्वर मंगल करे (कल्याणीको पुचकारताहै) और कल्याणी सजल नयनोंसे हरदतकी ओर निहारती है.

तीन यवनोका प्रवेश.

(तीनोयवन दीन २ पुकारते कुटीया की तर्फ आते हैं)

हरदत्त—अरे कौनहो, जो बिना पूछेही दीन २ कर इधर आ रहे हो.

१ यवन। (तिरस्कारसे) क्यों बे इतनाक्यों चिल्लाता है क्यों तु हमे चोर डाकू ख्याल करताहै.

हरदत्त—(नम्रतासे) नहीभाई मैंतो चोरडाकू नही समझता, तुम आपही (रुक जाताहै.)

२ यवन—हां हां हां! कहना आपही क्या! हम आपही चोर डाकू बन रहेहैं.

हरदत्त—(मनही मनमें) नजाने इन चांडालोंके मनमें क्याहै (नम्रतासे) भाई मैंतो यह नहीं कहता हुं, तुम फिर वृथा क्यों झगड़ा करतेहो, तुम आपने अनेका कारण कहो.

१ यवन (गुस्सेमें आकर) सुनोतो इसकी गुफ्तगू! हम झगड़ा करतेहैं (घूर कर कुछ मनहीं मनमें बुरबुराताहै.)

परीक्षक—(तिरस्कारसे) अबे इधर सुन! हमारे यहां आनेका सबब यह है, कि कलके रोज बकरीद है कुरबानीके लिये एक गायकी जरुरतहै, पस तुम्हारे पास इसी गर्ज़के लिये आये हैं कि तुम कुछ रुपयां लेकर इस गायको हमारे हवाले करदो।

हरदत—यह (वचन सुन कांपकर) राम २ हम तुम्हारे हाथ ब्राह्मण होकर गौविक्रय करेंगे (विनयसे) आप यहांसे जाईये.

२ यवन—अबे राम हरामज़ादे क्या कम्बखती सरपर सवार हुईहै जो खुदा व रसूलके फरमांबर्दारों की एक अदनी सी चीज़के लिये इसकदर बेइज्जती करताहै? क्या तू नहीं जानताहै कि नब्वाब आजमखां बहादुरका कस्दन् यह हुक्महै, कि पाकदीन इसलामके रोबरु नापाक दीन हनूदका कुछभी लिहाज़ न किया जावे. बल्के जहां तक होसके उसके नेस्त नाबूद करनेकी कोशिशकी जाये, पस हम तुझको और कुछ नही कहते, फक्त तू हमको यह गाय देदे.

हरदत—क्रोधसे

(राग तिल्लाना, त्रिताला.)

अरे ना बोलो ऐसीबात। अरे न बोलोऐसी बात॥ चले जावो तुम मेरी कुटियासे, बक २ करो न तुम कुतियासे। बडे बडे शहनशाह गऊके कारण हुये तबाह, करते गये हा हा, थेजो करते उतपात॥ अरे ना०॥ जिसका तुम करते अभीमान, मारेगा उसको भगवान

कौन नवाब, हैखराव, देवेअज़ाब, क्या है ताव,
जोमारे गऊ मात ॥ अरे ना बोलो० ॥

अरे ! तुमारा नव्वाब है क्या वस्तू जो हमारे पवित्र सनातन धर्मका नाश करे, न जाने उस जैसे कितनेही राक्षस ऐसी चेष्टा करते २ यमपुरी सिधार गये, पर हमारा सनातन धर्म ज्यों का त्यौं ही बनारहा, उसका एक बाल भी वांका न हुआ.

२ यवन-(क्रोधसे) अवे! बस चुप रहो पाजी कहींके नव्वाब साहबको राछस बताता है.

हरदत-जो राक्षस का काम करता है उसको राक्षस बताने में क्या दोष है.?

१ यवन-अवे मादर जाद काफिर कहींके फिरभी वैसाही बके जायेगा चुप नही करेंगा, खैर देख हम तुझे को इसका मजा अभी चखाते हैं (गऊके दोनो कान पकडकर) खेंचता है.

हरदत-(झपटकर क्रोद्धसे) दुर्, रे, दुष्ट गउ माताको स्वरश करत है.

२ यवन-पीछे जाकर हरदत की टांगोंमें जोरसे ऐसा सोंटा मारता है, कि हरदत उसकी चोटसे जमीनपर गिर पडता है और जमीनपर गिरनेसे सिरमें एसी चोट लगती है कि जिस्से हरदत वहोश हो जाता है.

परीक्षक-हरदतकी ऐसी दशा देखकर, दूसरे यवनसे, शावाश २ जालिमखां खूव किया विना ऐसे किये यह काफिर कभी भी न मानता, वस अव झट पट खूंटेसे रस्सा खोलकर गऊको लेचलो, वरना कहींसे कोई रांगड (क्षत्री) आगया, तो किया कराया सव काम विगड जायेगा.

१ यवन-झटपट खूंटेसे रस्सा खोल लेता है और दूसरा यवन गऊपर दण्ड प्रहार करता है और गऊ उठकर अडती हुई धीरे २ चलती है.

२ यवन—परीक्षकसे ?. देखो हजरत यह उसकी मुहब्बतकी मारी कैसी अड २ के चलती है.

परीक्षक—हां! साहब इस जानवरको हिन्दुओंसे बडी मुहब्बत होती है। क्यों कि हमने कई एकबार देखा है कि जब कभी इसने कहीं कस्साईके हाथसे रस्सा जरा ढीला पाया कि फौरन छुडाकर भागी और भाग कर या तो हिन्दुओंके घरमें या उनकी दुकान पर या जहां बहुतसे हिन्दू खडे हों उनके पास जा बैठती है, फिर अगर कस्साई आके ऊठाना चाहे तो हिंदुभी इसको ऊटाने नहीं देते हैं, इसको बदलेमें जितना रुपया मांगो उतनाही देते हैं पर इसको नहीं देते हैं, और अगर कस्साई उसवक्त कैसाही मारे मगर यह उनके पाससे कभी नहीं उठती है. लेकिन तुमने खूब हिकमतसे उठाई, वरना इसका वहांसे उठना बडाही दुशवार (कठन) था.

१ यवन—भला किसी तरहांसे आपका काम तो हुआ.

परीक्षक—खुदा और रसूलके फलजलोइकबालसे यह काम हुवा वरना यह काफिर मुझे कभी गऊ देता, क्यों कि जब वह आप लोगोके रुबरू बेखोफ नवाब साहबको राछसबताताथा तो वह मुझको गऊ देता कभीन देता.

२ यवन—(परीक्षकसे)—हजरत मेरा तो दिल यह बात सुनकर चाहताथाकि कि इसके रोबरुही गऊ को मार डालूं, पर आपके सबबसे नही मारी। लेकिन अब काफिरोंको खूब सताया करेंगे क्यों एक अदनीसी चीज खुदाके वास्ते नहीं देते हैं—खेर अब आप इसका रस्सा पकडके अपने तकीयेकी तर्फ चलीये हम दोनो इसकी हिफाजत करते चलते हैं। परीक्षक रस्सा पकडकर चलता है और यह दोनो गाते हुई पीच्छे २ चलते हैं.

(राग इंद्रसभा, या इस राजपूतसे रहना हुश्यार खबरदार)

इस कौमे काफिरांन पै सितम करते हैं हम।
मुतलक न इनके हाल पै रेहम करते हैं हम ॥ इस० ॥

काफर हैं बेईमान हैं इसलाम के ऊदु ।
इसीसे हिन्दुओंका सर कलमकरते हैं हम ॥ इस ॥
सताते हैं रुलाते हैं पाते हैं गर कहीं ।
गुस्सेसे इनके बच्चोंको वेदमकरते हैं हम ॥ इस ॥
परीक्षक ॥ मिल जाता जबके रंगडा तबक्यूंक्यों बक्तेहो ।
न ऐसे काम करनेकी कसम करते हैं हम ॥ इस ॥
दोनो यवन ॥ चलो चलो तुमले चलो अबकेतो इसे ।
रसम खुशीसे कल् देखो अदा करते हैं हम ॥ इस ॥

जालिमखां—गऊको सोंटा मारकर—अरी जल्दीभी चल, कंही कोई राँगड (क्षत्री) न आजाये.

गऊ—पीठपर सोंटा खानेसे बैठ जातीहै.

परीक्षक—देखा मियां ? रांगडका नाम सुनतेही बैठगई—कहो अब कैसे उठाओगे.

जालिमखां—देखो मैं अबी ही उठताहूं, गऊको मारताहै पर मारखानेसेभी नहीं ऊठती, तब गुदामें सोंटा देताहै तोभी नहीं उठतीहै.

अंक पहला परदा ८ वां.

स्थान हरदत की कुटीया.

हरदत—(होश आनेपर) गऊको खूंटेपर न देखकर—अरे क्या गऊको दुष्ट लेगये.

(राग देस या भैरवींमें गावो)

हाय! रक्षा तेरी अब कोन करे कपले। कोनकरे कपलो॥हा०
क्या करुं सख्त चोट है, पगनही तनिक चले ॥ हाय०॥
मैं निबलहुं यवन प्रबल हैं, कैसे मां विपत टले ॥
सेवक, बनमें किसको पुकारुं, जो सहाय आये मिले ॥ हा० ॥

हाय ! इस घोर बनमें सिवाय भगवान् के और कौन है जिसको पुकारुं—

(राग भैरवी त्रिताला)

गोपाल तू गोकुलका आ मेरा । कर रक्षण प्रभु गिरधर नागर, करूसाई दुष्टोने गऊको घेरा ॥ भारत खंडमें अंधेर पडा है, फिरतां गऊपै छुरियोंका फेरा, समरण करता हूं मैं तेरा ॥ गो० ॥

एकदम चिल्लाकर ! हायरे, भगवान तूभी इस समय निठुर हो गया जो निरापराध गाय मरती देखकर भी रक्षण नहीं करता है, क्या तू मेरी कुछ परीक्षा करता है? अच्छा देखो मैं अपनी परीक्षा दिखता हूं। (इतना कह) एकदम क्रोद्धसे उठखडा होता है—पर चल नही सकता है । तोभी धीरे २ कुटियामें जा चिमटा हाथमें ले क्रोद्धसे ! धिक्कार है मुझको और मेरे हमपनको, जो मेरे जीतेजी गऊ को दुष्ट ले जायें, देखूं कहां तक ले जाते हैं । धीरे २ ईश्वरको याद करता हुआ यवनोंके पीछे २ जाताहै.

[राग—भैरवी]

श्रीकृष्ण कान कन्हैयारे, गऊमाताका कष्ट हरोरे ॥श्री०
खातेहैं यह दूध मलैया, कंठपै फेरें फिरभी छुरिया,
आके वचावो नन्दके छैया, मै लैऊं बलैयारे,
गऊमाताका कष्ट हरोरे ॥ श्री० ॥

शिवदत—हरदतकी यह दशा देखकर (मनही मनमें) धिक्कार है मुझको जो गऊब्राह्मण की ऐसी दशा देखकर जीता देखताही रहूं और इनकी विपत हरनेका उपाय नकरुं और चुपचाप वैठा रहूं । पर किसरीतिसे वचाऊं क्यों कि वह तीन हैं और हम दो हैं जिसपर हरदत वडी चोट खाये हुआ है इससे जल्दी उन तक पहुंचना कठिन है और मेरे अकेलेसे छुडाना कठिन है (कुछ सोचकर) अजी, चलो तो सही किसी ढवसे छुडावेंगे—यहसोचकर यवनोके पीछे२जाता है और कुछ दूरसे गऊ वैठीहुई और तीनो यवनो को गऊ उठाते देखकर (ठहरकर मनहीमनमें.) यदि हम आग जलावें तो यह आगकी चमकको देखकर गऊके उठानेके लिये अवश्य

कोई आग लेने आवेगा जब आवेगा उसको डरावेंगे जिस्से वह भूत समझकर भागेगा और अपने साथीयों को भूतका भय देगा जिस्से वह गऊछोडकर भागजायेगें और गऊ बचजावेगी । यह सोचकर थोड़ासा घास पात बटोर चकमक झोलीसे निकाल उसको एक पत्थरसे टकरा घास पातमें आग लगा देताहै.

कमालखां–परीक्षकसे? हजरत शाम होगई पासकोई गांव नहीं है रातको अगर कोई जानवर आगया तो बड़ी खराबी होगी यह कम्बख्त उठतीही नहींहै अब क्याकरें,

जालिमखां–हजरत आपका अब तकिया (कुटिया) कितनी दूरहै.

परीक्षक–अभीतो एक कोस है.

कमालखां–तो अब क्या करें.

परीक्षक–अगर आग होती और इसके बदनके पास जलाइ जाती तो यह फौरन उठ खड़ी होती.

जालिमखां–इधर उधर आगको देखता है और अचानक शिवदत्तकी अगको देखकर। अजी वह आग जलतीहै मैं अभी लाताहूं यह कहकर आगकी तर्फ जाताहै.

शिवदत्त–उसके पैरकी आहट पाकर *बन लकडीको आग लगा घास पातकी आगको झट पैरोंसे बुझा एक झाड़ीकी आड़में होजाता है.

जालिमखां–एकदम आग बुझते देखकर–अबे तू कोनहै जो मेरे आतेही आग बुझादीया.

शिवदत्त–क्रोधसे.

(राग.)

अरे बेईमान अरे हैवान इधर कर कान इधर कर कान ॥
नखो तू जान अरे नादान, इधरकर कान इधरकर कान ॥
मेरे स्थान हुआ क्यों आन, तू दे पहचान नमारूं जान ॥
मेरा अपमान किया तू आन, बतावेशान करूं कुरबान ॥

---

* बनलकडी हिमालेमें होती है वहा मसालकी भांती जलती हैं, वहांके लोग रातको जलाते है

चाहे कल्यान तो सुन फरमान, नकर अपमान नहो गुलतान॥
अवे हैवान कहा यह मान, नखो तू जान मैंहूं शैतान॥अरे॥

जालिमखां–शैतानका नामसुन तेही कुछ डरा, मगर फिर अपने आपको सम्भाल झट म्यानसे तलवार निकाल कर–अवे तू कौनहै.

शिवदत–(उसके उत्तरमें)–अवे तू कौनहै.

जालिमखां–अवे तू आपना नाम नहीं बतावेगा।

शिवदत–(उसीतरह)–अवे तूं अपना नाम् नहीं बतावेगा।

जालिमखां–(मनही मनमें) यहतो मेरीही तरह बोलताहै. (फिर कई वार पुकारताहै) अवे तू कौनहै २।

शिवदत–चुपकेसे धीरे धीरे जमीनपर पांव रखता हुआ उसके पीछे आकर, "वम" वोलताहै। जालमखां "वम" का शब्द सुन डरकर चूतड़के वल जमीनपर गिरपडताहै शिवदत झट वनलकडीको फूंक मारकर जला उसकी दाढ़ीको आग लगा देताहै और दाढ़ी भक २ जलने लगतीहै, तव जालिमखां तलवार छोड दोनो हाथोंसे दाढीको वूझाताहै। शिवदत–झट तलवार उठाकर थोडी दूर जाकर वम २ वोलता हुआ नाचने लग जाताहै.

जालिमखां–दाढी वुझा, शिवदतको नाचते और लम्वे २ वाल लटकते और वदनपर राखलगी हुई देख, भूत जानकर कमालखांको पुकारता हुआ भागताहै.

शिवदत–(जालिमखांको भागते देखकर) अवे टहरजा अव भागकर कहां जाता। कहता हुआ धीमे २ यह भी उसके पीछे २ भागताहै. और कुछ दूरजाकर वनलकडी वुझा एक झाडीमें छिप जातहै.

कमालखां–जालिमखांकी आवाजसुन, घवराकर अवे क्याहै.

जालिमखां–वचाईयो २ मैं मरारे मरा.

कमालखां–उसकी तर्फ जल्दीसे जाताहै.

जालिमखां–कमालखांके पास आकर जमीनपर गिर पडताहै.

कमालखां–अवे क्याहुआ.

जालिमखां–चुप.

कमालखां—चुप हुआ देखकर उसको हिलाताहै मगर वह चुप, ऐसी हालत देख जेवसे रुमाल निकालकर हवा करताहै.

जालिमखां—होश आनेपर कमालखांसे भाईजान.

कमालखां—अजीमियां कहोतो सही तुमको क्याहुआथा जो तुम्हारी ऐसी हालत हुई है.

जालिमखां—अजीमियां जहांमैं आग जानकर आगलेने गयाथा वहां एक वडा भारी जिन्न था—देखो उसने मेरी दाढ़ी फूंकदी और फिर मुझे खानेको दौडा तव मैं वहांसे भागा.

कमालखां—अजीमियां कोई चोर वदमाश होगा, उठचल, उठाकर गउके पास लाताहै.

परीक्षक—अजीमियां क्याहुआथा.

कमालखां—कोई चोर वदमाशको देखकर डरगये, कि यह जिन्न है.

शिवदत—वन लकडी जलाकर (परीक्षकसे) अजी हज़रत आज तुम्हारा हम सव मंत्र यंत्र पूरा कर देंगे इनदोनोको जाने मतदेना मैं अभी अपनी लशकरको वुलाताहूं—यह कह* तूंवे के नीचे छेदकर मुंहमें लगा हु हु करता है, इतनेमें अकस्मात गीदड़ (स्यार) भीवोलने लगते है.

जालिमखां—ऐसी आवाज सुनकर—(कमालखांसे) भाई भागो यहांसे यह जिन्नोका स्थान है—यह कम्वख्तफकीर हमको अपने मंत्र यंत्र पूरा कराने के लिये यहां लाया है.

कमालखां—(मंत्र यंत्रकी वात सुनतेही जालमखांसे) हां भाई भागो, इस कम्वख्तका फक्त गऊका एक वहाना था—चलो यहांसे भागो

जालिमखां—भाई जान किधर भागोगे—

कमालखां—इसी रास्तेसे भागो कोई गाँव मिल जायेगा वहां आराम करेंगे—इतना कह दोनो भागते है.

---

* बहुधा जंगलमें चोर लोग हांडी या तूंबेमें छेदकर अपने साथीयोंको बुलाया करते हैं.

परीक्षक—अजीमियां—डरकरमत भागो अल्लाकी कसम यह। कोई जिन्नभूत नहीं है यह स्यार बोलते हैं.

जालिमखां—चुप रहो झूठे पाजी कहींके तू ने तो हमारीही कुरवानीके वास्ते गऊका जाल फैलाया था—कहते हुये दोनो भागजाते हैं.

परीक्षक—(मनही मनमें) शिवदतने कैसे युक्तिसे गऊ बचाई है, पर अब देखें क्या करता है एक झाडी की आडमें बैठ जाता है.

शिवदत—तीनोकी कुछभी आवाज न सुनकर (मनही मनमें) मालूम होता है कि डरकर सब भाग गये हैं—चलें देखें वहां गऊ है या नही—उठकर लकडी जला धीरे २ चलकर गऊके पास आता है और गऊको बैठे देख, गलेमें लपट कर ! मां अब डरो मत यवन सब भाग गये हैं (गऊकी पीठ पर हाथ फेरकर) देखो दुष्टोंने कैसे मारा है, (इतनेमें रोने की आवाज सुन चौंककर) अरे यह इस समय यहां बनमें कौन रोता है, देखूं तो सही किधरसे आवाज आती है, उठकर रोनेकी आवाज सुनता है। रोनेकी आवाज हाये मों मेरे जीतेही दुष्ट यवन तुझको लेगये) यह सुनकर (मनही मनमें) यह तो हरदत महाराजकी आवाज है—चलूं देखुं वोही हैं या कोई उनतीनोमेंसे है—लकडी बुझा कुछ दूर जाता है इतनेमें हरदतभी रोता हुआ पास आ जाता है—शिवदत हरदतकी ऐसी दशा देखकर—लकड़ी जला हाथ पकडकर महाराज घवराये नहीं आपकी गऊमाताको यवनोसे मैंने छुड़ाकर थोड़ी दूर पर बैठाया है.

हरदत—कहांपर हैं.

शिवदत—मेरे साथ चलिये थोडी ही दूर पर है—हाथ पकडकर गऊके पास लेआता है.

हरदत—गऊ बैठी देखकर गलेमें लपट जाता है और (रो कर) मां तुझे दुष्टने मारा है। भगवान उनको मारेगा.

गऊ—हरदतकी आवाज सुनकर मां २ करती खडी होजाती है.

शिवदत–महाराज–अब आप इसको अपनी कुटियामें लेजाये और मेरी यह बात मानिये कि आप अब उस कुटिया को त्याग कहीं हिन्दु राज्यमें जा वसिये, नही तो एक दिन बहुत बुरीदशा भोगोगे

हरदत–मैं आजही उस कुटियाको त्याग कर उदयपूर जा वसूंगा.

शिवदत–तो अब आप गऊ माताको निडर होकर लेजाईये.

हरदत–बहुत अच्छा(गऊसे) कल्याणी अब चलो, कुटियाको चलें.

गऊ–हरदतकी आवाज सुनकर कुटियाकी तर्फ चलती है और हरदत उसके पीछे २ जाता है.

शिवदत–(हरदतसे)! महाराज मुझे अब आज्ञा दो तो मैं भी जाऊं

हरदत–(हाथ जोडकर)! महाराज आप कौन हैं और कहां रहतें हैं क्योंकि मैंने तो आपको कभी इस बनमें नही देखा है.

शिवदत–हम परदेसी हैं, अपना पूरा समाचार फिर कभी कहेंगे, इस समय हम कहीं जानेवाले हैं इसलिये आप आज्ञा दीजिये.

हरदत–यदि आप आज मेरी कुटियामें आराम करते तो बहुत अच्छा होता, आगे आपकी इच्छा.

शिवदत–फिर कभी आपके पास आवेंगे, इतना कह लकडी बुझा झाडीकी तर्फ जाता है। और फिर कुछ रुककर(मनही मनमें) हमें भी तो उदेपूरको ही जाना है और रस्ता भी इधरसेही है चलो इसीकेही पीछे २ चलें एक तो रस्ता कटेगा, दूसरे यदि कहीं यवन छिपे हुए हये और इस पर हमला किया तो इसको बचावेंगे–यह सोचकर हरदतके पीछे २ जाता है.

हरदत–(रास्तेमें,यह सोचता हुआ जाता है,)कि इस बनमें तो कोई तपस्वी रहताही नही है यह कौन था और इसने अकेले प्रबल यवनोसे कैसे गऊ छुडाई, कुछ समझमें नही आंता है,क्या यह कहीं साक्षात महा-देवजी तो नहीं थे, हो न हो यह महादेवजीही थे, नहीं तो प्रबल यव-नोसे अकेले मनुष्यकी समर्थ नहीं है जो गऊ छुडा सकता, पर बडे शोककी बात है कि मैंने उनको प्रणाम तकभी नहीं किया। शायद

इसीसे रुष्ट होकर चले गये हों। हाय ! अब क्या करूं कैसे फिर दरशन पाऊं–(यह सोच) महादेवजीकी अस्तुति गाता हुआ कुटियाकी ओर जाता है.

(भजन)

अहो विश्वनाथ रे नमु नमु। जोडूं तुमे हाथ रे नमु नमु ॥
हो भक्त दुखहार रे नमु नमु। करो उपकार रे नमु नमु ॥
हुं शरण वाल रे नमु नमु। हो तुम दयाल रे नमु नमु ॥
मांगूं वरदान रे नमु नमु। देओ अभिदान रे नमु नमु ॥
करो अंगीकार रे नमु नमु। हो मेरा उद्धार रे नमु नमु ॥
सेवक है अनाथ रे नमु नमु। लैयो हो सम्भाला रे नमु नमु ॥
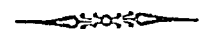
अंक १ परदा ९

स्थान हरदतकी कुटिया

हरदत कुटियापर पहुंच अन्दर जा आसन कमण्डल ले गऊको आगे कर उदेपूरकी तर्फ जाता है.

शिवदत–यह अब उदेपूरको जाता है वहां जाकर महाराजा प्रताप सिंहजीसे अपने आनेका हाल कहेगा–जिस्से हमको बहुत मदद मिलेगी, पर यदि हम इसके पहले पहुंचकर इसका समाचार महाराजसे कहें तो इस्से बडाही लाभ हो (यह सोचकर) उदेपूरको जाता है.

परीक्षक–(मनही मनमें) यह दोनो उदेपूरको जाते हैं देखें वहां जाकर क्याकरते हैं। पर मैं किस वेषसे जाऊं (मन ही मन में) ठीक है ! क्षत्री सिपाहीका भेष धारण कर के चलना चाहिये (यह सोच) सिपाईका भेष धारण करके उदेपूरको जाता है.

अंक १ परदा १०

स्थान एक लिंगजीका मन्दिर.

महाराजा प्रतापसिंहजी भीतर एक लिंगजीके आगे खड़े हुये पुजारीके संग आरती गारहे हैं. और कुछ सिपाई बाहर पहरा दे रहे हैं.

पूजारी और महाराजा प्रतापसिंह.

दोनो आरती गाते हैं.

[आरती]

जयदेव जयदेव जय मंगलकारी जय मंगलकारी। अति करुणा विस्तारी (२) प्रभुहो उपकारी ॥ जय० ॥ शुभ मंगल गुणगायें भक्त जनो तेरा (२) अविचल शुभ पद आपों (२) गाऊं यश तेरा ॥ जय० ॥ कोठ्यावधि अपराध प्रभु निशदिन देखो (२) मनमें नहीं कछु राखो (२) भगती को पेखो ॥ जय० ॥ दुराचारसे दुर प्रभु तुम राखो मुझको (२) नहीं फसूं मैं यामें (२) विनति करूं तुमको ॥ जय० ॥ प्रेम पुष्पकी माला प्रभुके शुभ चरणे (२) तन मन धन सव अर्पूं (२) स्वीकारो हमे शरणे ॥ जय० ॥ षड गुण युत भगवत् भक्ति मुझे अर्पो (२) करुणा करि सेवक के (२) भय संकट काटो ॥ जय० ॥

शिवदत्त—मन्दर के बाहर कुछ सिपाई देखकर (मन ही मन में) मालुम होताहैकि महाराज यहां आये हैं! यदियहां मुलाकात हो जाये तो वहुतही अच्छा हो। क्योंकि यहां एकान्तमें हैं अच्छी तरह से वात सुन सकेंगे, फिर शायद राजदरवारमें अच्छी तरहसे वात सुने या न सुने? पर यहां कैसे मुलाकात करूं, यह सिपाई मुझे महाराज तक काहे को जाने देंगे (कुछ सोचकर) ठीक है. दरवाजे के संमुख वैठकर फरयाद करूं, शायद मेरी आवाज सुन, मुझे वुलाकर पूछें। यह निश्चय कर मन्दिरके दरवाजे के सामने वैठ कर फरयाद करता है.

(राग, पहाडी, झंझोटी)

जुल्म होता है भारत में इसे कोई हटावेगा ।
हटावेगा हटावेगा हटावेगा हटावेगा ॥ जुल० ॥
गऊ ब्राह्मण और कन्या पै जुलम करते यवन निशदिन ।
है कोऊपूत भारत का खडा होकर छुटावेगा ॥जुल०॥

(कुछ ठहरकर)–क्या महाराज ने मेरी आवाज नही सुनी, जो अभी तक कुछ उतर नहीं देते । मालूम होत हैकि महाराज कुछ वहरे हैं, यदि वहरे न होते तो इतने चिल्लाने पर क्यों उतर नही देते। हाय! अव क्यां करूं. कहां जाऊं ।

(राग, भैरवी, त्रिताला)

अव मैं कहां पाऊं रक्षण का द्वार॥अव०॥गऊकी विपत कोऊ सुनत नाही, हुआ हुं अव मैं लाचार ॥अव०॥ गो ब्राह्मण प्रति पाल कोऊ नाही, होत तो सुनता गोहार ॥ अव० ॥ जिनका धर्म वह सुनत नाही, सेवक हुआ हुं वेजार ॥अव०॥

ऊर्द्ध स्वासलेकर । हाय! भारत भूमि अव तुझ में काई भी वीर नहीं रहा—

(राग भैरवी, ताल पंजावी)

भारत में कोऊ रहा नहीं वीर । अरि हंता रणधीर॥ भारत०
रवि शशि वंशज क्षत्रिय सवही । कैसे भये हत वीर ॥भा०॥
गोब्राह्मण की विपत देखसुन । भयेहैं अंध वधीर ॥ भा० ॥
सेवक अव मैं किसकों पुकारुं। क्षत्रिय पहरे चीर ॥ भारत०॥

ठहरकर–(मन ही मनमें) ऊठो अव चलो इनकोभी देखलिया। "नाम वडा और दरशन थोडा" अरे! कलयुग ने किसीको भी नही छोडा, केवल अव नाम मात्रकेही सव धार्मिक. रहे गये हैं–उठकर गाता हुआ जाताहै:

(राग केरा)

इस पापी युगमें कोई इन्सान नही ईमान के ॥इस०॥ किसीने इसको जरसे छोडा, किसी ने है जररसे छोडा, किसीने है

जबरसे छोडा, किसी ने है तवरसे छोडा, किसीने जन चमन से छोडा, किसी ने है रैजन से छोडा। कोई नही बचा अन के, आनके॥ इस पापी युगमें कोई इन्सान नहीं इमानके॥

महाराज—पूजनसे छुटी पाकर—(धर्मसिंह जमादार से) धर्मसिंह बाहर कौन गाताथा.

धर्मसिंह—हाथ जोडकर ! महाराज एक ब्राह्मण गाताथा.

महाराज—उसको यहां बुलालाओ.

कर्मसिंह नायक—महाराज वह तो अब चला गया.

महाराज—वह क्या गाताथा.

धर्मसिंह—महाराज उसका सब गानातो मुझे याद नही हैं, केवल उसके गानेका एक पद यादहै यदि आज्ञा हो तो सुनाऊं.

महाराज—हां! हां! सुनाओ.

धर्मसिंह—महाराज, उसके एक गाने का यह पद है "भारतमें कोऊ रहा नहीं बीर."

महाराज—यह एक पद सुनकर (मन ही मनमें) ब्राह्मण ऐसा क्यों गाता था, मालूम होता है कि वह किसी भारी-विपत में फंसा हुआ है, यदि इसकी विपत न छुडाई तो हम को पाप लगेगा, क्योंकि गो ब्राह्मणकी विपत छुडाना हमारा धर्म है। (कर्मसिंहसे) तुम शीघ्र जाकर ब्राह्मणको खोजकर यहां ले आओ.

कर्मसिंह—(जोआज्ञा)कहकर शिवदत के खोजनेको जाता है.

अंक १ परदा ११.

स्थान वनमें चौरस्ता.

शिवदत—चौरस्तेमें खडाहोकर, अब कहां जाऊं यह सोच रहा है.

कर्मसिंह—कुछ दूरसे। शिवदतको खडा देख दौडकर पास जा हाथ जोडकर ! भूदेव आपको महाराज याद करते हैं.

शिवदत—महाराज का बुलाना सुन, प्रसन्न चितसे, हां! महाराज ने हमको बुलाया है, अच्छा चलो! दोनो जाते हैं.

अंक १ परदा १२.

स्थान एक लिंगजी का मन्दर

महाराज और पुजारी धर्मसिंह बैठे हैं.

कर्मसिंह—शिवदतको बाहर खडा कर मन्दिरमें जा महाराजसे हाथ जोडकर: सरकार ब्राह्मण हाजिर है.

महाराज—भीतर ले आओ.

कर्मसिंह—शिवदतको मन्दिरमें लेजा महाराज के सन्मुख खडा करता है.

महाराज—शिवदतको देख प्रणाम कर एक कुशासन पर बैठाते हैं.

शिवदत—आसीस दे कर बैठता है.

महाराज—भूदेव आप बाहर क्या गातेथे.

शिवदत—महाराज हम गाते नहीथे, परन्तु रोते थे कि.

भारतमें कोऊ रहा नही वीर । अरि हंता रणधीर ॥भा०॥
रवि शशि वंशज क्षत्रिय सबही । कैसेभय हत वीर ॥भा०॥
गोब्राह्मणकी विपत देख सुन । भयेहैं अंध बधीर ॥भा०॥
सेवक अबमें किसको पुकारुं । क्षत्रिय पहरे चीर ॥भा०॥

महाराज—(शिवदतके यह वचने सुन)शिवदत से ? देवताजी क्या हम गोब्राह्मणकी रक्षा नहीं करते हैं जोआप ऐसा कहते हैं ? क्या हमारे राज्य मेवाडमें कहीं गोब्राह्मणको किसी प्रकारका कष्ट होता, यदि होता है तो आप बताईये.

शिवदत—क्या आपका राज्य केवल मेवाडही में है.

महाराज—जी हां.

शिवदत—यह आपकी भूल है कि जो आप ऐसा कहते हैं। बडे शोक की बात है, कि आपको हनूमान जी की भांति अपने आप ही की खबर नहीं है । महाराज आप आर्य कुलभूषण हिन्दुपती पादशाह हैं, इस लिये जहां तक हिन्दु बस्ते हैं अर्थात जहांतक अर्यावर्त देश है अर्थात सारे हिन्देस्थानके आपही पादशाह हैं.

महाराज—उर्द्धस्वास लेकर ! भूदेव हिन्दुपति पादशाह इस समय अकबर है.

शिवदत—जब तुम क्षत्रीय अपना क्षत्रीय पन्न भूल गये, तब ना वह हिन्दुपती पादशाह बन गया है.

॥ चौपाई ॥

भूलगये निज वंश बडाई । याते आज कुमती यह छाई ॥ त्याग दियो जब कुल अभिमाना । तबसे भैय हो जम्बू समाना ॥ याकुल राम लीन अवतारा । दस कंधर सम निश्वर मारा ॥ याकुल लखन जती से भाई ॥ स्वर्ग पताल हुं देत दुहाई ॥ याकुल भीम अर्जुन बलरामा ॥ युधिष्ट और भीष्म पितामा ॥ हरिश्चन्द्र वीर ब्रतधारी । रघु ययाति भूपति अतिभारी ॥ कृष्ण जनक या कुलमें ज्ञानी । धर्म हेत, सम पति तृण जानी ॥ याकुल में भये लव कुश भाई । जनक सुता की विपत हटाई ॥ कैसे भैय थे वह बलवाना । बाल पन् बांधेयो हनुमान ॥ हुआ न सन्मुख कोई पैलवाना । सुनत नाम जात थर्राना ॥ भूप जिन्हे नित सीस झुकावें । देव ऋषि जिनका यश गावें ॥ तिस कुलमें तुम उपजे आई । सूर वीरता सब बिसराई ॥ बैठे हो रण तज घरके भीतर । धनुष छाड राखत हो तीतर ॥ घरमें तुम सब कला मचाई । यवन हाथ दीनी प्रभुताई ॥ भये दास नौकर कहलाये । तुमे लाज कछु हिये न आये ॥ क्षत्रिय कुल कलंक तुम लायो । वृथा जन्म क्षत्रीय ग्रह पायो ॥

महाराज—भूदेव आप सत्य कहते हैं, पर हम अकेले क्याकरें, यदि यह दोनो जैपूर जोधपूर वाले भाई हमारे साथ मिले रहते तो यवनो की क्या समर्थ थी जो भारतका राज्य ले सकते। और यदियह हमसे मिलेभी न रहते, और यवनो को सहायता न दे ते ? तो भी हम अकेले ही यवनोका पैरभारत में न जमने देते। पर यह तो उलटे

उनसे मिलकर यहां तककि अपनी कन्या दे, कुलको कलंक लगा, हमारे नाश करने के लिये यवनो को कई वार चढालाये। अस्तू ! पीछे जो हुआ, सो हुआ, यदि अवभी यह हमसे मिल कर रहें तो हम अब भी यवनो को यहां सें निकाल भारत जननीका दुःख दूर कर दें। पर उनको तो इस बात का कुछभी विचार नही है, कहिये फिर हम क्या करें.

शिवदत्त–हे अर्यपुत्र ! हम भी इसी कारणसे उनके पास नहीं गये, क्यों कि जिन्होने राज्य लोभ के लिये, अपनी कन्या यवनो को दे दीं, वह धर्मकी क्या रक्षा करेंगे। पर धन्य हैं आप कि सर्वस्व नाश होने परभी, आपने अपने धर्मको नही त्यागा, जैसा हमने महात्मा हरदतजीसे सुनाथा उससेभी वढके आपको पाया.

महाराज–हरदत महात्मा कोन हैं, और वह कहां रहते हैं.

शिवदत–वह एक तपस्वी हैं आबू परवतसे कुछ दूर एक तालाब पर रहते हैं.

महाराज–उनके पास एक गऊभी है.

शिवदत–जी हां.

महाराज–वह हमारे* गुरु देव हैं! राजकाज के कारण वहुत दिनोसे हम उनके दरशन न करसके ! कहिये गुरुजी अच्छे तो हैं और गऊ मातजीभी अच्छी हैं ना, किसी प्रकार का कोई कष्ट तो नही है ना.

शिवदत–उर्द्ध स्वास लेकर?–महाराज हम उनके कष्टका वर्णन नहीं कर सकते हैं वह आज कलही यहां आने वाले हैं आप ही आकर आपन दुःख आपसे कहेंगे.

महाराज–(अश्चर्यसे) हें ! उनको कष्ट, किस की इच्छा यमपूरं

---

* अकबरकी लढाईमें जब सब सेना कटगईथी और जब महाराज सं. १६३३ में वनमें रहे थे तब कभी २ इनके पास जाकर धर्मकी वातें सुना करतेथे और जब राज्य प्राप्त हुआ तब इनको बुलाकर गुरु दक्षणामें गऊ दान दीथी। यह सं. १६४२ की वात है.

जानेकी हुई है. जिसने उनको कष्ट दिया? कृपा करके कष्ट देने वाले दुष्टका आप नाम पता तो बताईये और यह भी बताईये कि गुरुजी को किस प्रकारका कष्ट दिया है.

शिवदत–महाराज सुनीये.

[राग इन्द्रसभाकी तौर का.]

करुं कष्ट उनके का क्या मैं बेयान।
नही ताकत जबांको करे जो बखान॥ करुं
जैसा सताया है यवनो ने उनको।
सबी हाल कहेंगे वह सन्मुख यां आन॥ करुं
जो कुछ है गा देखा सुनाऊं तुमे मैं।
सुन लीजीये दुःख ज़रा दे इधर कान॥ करुं
ले जाते थे यवन गऊ छीन उनकी।
कैते थे बकरीद में कर नी कुर बान॥ करुं
बडे मुशकलों से छोडाया गऊ को।
देने लगा जबके सेकब वहां जान॥ करुं॥

महाराज–क्रोद्धसे! अरे दुष्ट नीच यवनो, तुम अब यहां तक निडर हो गये हो, कि जो अनाथ निरापराध उपकारी गऊ तपस्वीयों के भी सताने पर कमर बांधली है। खैर! कुछ परवाह नही, यादि ईश्वरकी कृपा हुई तो याद रक्खो, इनके सताने का इकही दिनमें बदला लूंगा.

शिवदत–धन्य हो महाराज धन्य हो.

महाराज–हाथ जोडकर! भूदेव आपका यहां आगमन किस कारणसे हुआ है, क्या आपकोभी दुष्ट यवनोने कुछ कष्ट दया है अथवा कोई और कारणसे यहां पधारना हुआहै. जो कारण हो सो बताईये.

शिवदत–महाराज–हमारा आपके पास आनेका यह कारण है.

(राग, हमको छोडचल बन माधो)

गऊ पे विपत अति है छाई। आया हुं तुम पास
देने दुहाई॥ गऊ॥ बचावू बचावू गऊको विपतसे।

करो जीवन की सफल कमाई ॥गऊ॥ जब जब विपत सुनी तुमरे पूरषा । सुनत ही तुरत हुये वह सहाई ॥गऊ॥ तन मन धन सब गऊपै वारें । होने न देत कष्ट इकराई ॥गऊ॥ तुमरे कुलकी येही है रीती । गो ब्राह्मणकी करनी भलाई ॥गऊ॥ रामकृष्ण दलीप और अर्जून । सूरभी सेवा करी इन भाई ॥ गोसेवा के कारण अवतक । जगमें होती है उनकी वडाई ॥गऊ॥ ऊठो ऊठो तुमकरो कुल-रीती । सेवक करो तुम गो सेवकाई ॥ गऊ ॥

मेरे कहनेका तात्पर्य यह है कि यवन राज्यमें गऊपर बडा ही आत्याचार होता है, इसके दूर करनेका कोई यत्न कर दीजीये।

महाराज—अच्छा आज तो आप यहीं आराम कीजीये (कर्म-चसे) देखो इनको किसी प्रकारका कष्ट न होने पावे और कल इनको लेकर दरबारमें आना। इतना कहकर उदेपूर को रवाना हो जाते है.

—o-o-o—
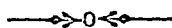
(अंक १ परदा १३)

स्थान उदेपूर—महाराजा प्रतापसिंघ जीका दरबार

सब सरदार पेहलकार दिवान इत्यादि लोग बैठे हैं.

महाराज दरबारमें आ ईश्वरसे प्रर्थना करते हैं.

(राग, गजल.)

क्यों दीना नाथ भारत पै करते दया नही ॥
क्या अनाथ है नही और अब दास क्या नही ॥ क्यों ॥
था जिस्से तुमे प्यार देखो उसकी है क्या दशा ॥
कुदशा उसकी देख क्यों आती मिया नही ॥ क्यों ॥
जब जब कि इस पै विप्त कुछ आके है पडी ॥
तब तब तुम औतार ले मिटाई है क्या नही ॥ क्यों ॥
शीघ्रले औतार अबभी बचावो आविप्तसे ॥
यवनो की दी विपत देख क्यों बचावो आ नही ॥क्यों॥

मानाके इसके पाप बहुत हैंगे हैं प्रभु ॥ क्यो ॥
कुछ उनसे न्यून तर तो तुमारी दया नही ॥ क्यों ॥
करुणाकरो अब शीघ्र तुम हैगा है बहु दुःखी ॥
दुःख इसको जो के है वह तो तुमसे छिपा नही ॥क्यों॥
तुमभी शरन न दोगे तो जायेगा यह कहां ॥
अछा है या बुरा है सेवक और का नही ॥ क्यों ॥

ईश्वरसे प्रार्थना कर सिंहासनपर बैठ (सब सरदारोसे) ऐ हमारे वीर सरदारो कलकी कुछ खबर है.

सरदार लोग—किस बातकी महाराज?

महाराज—कल एक रमता राम शिवदत नामक ब्रह्मचारी एक लिंगजी के मन्दिरमें हमारे पास आया था और आज वह यहां दरबारमें भी आनेवाला है.

सरदार लोग—महाराज, वह आपके पास क्यों आया है और आपसे क्या कहता है.

महाराज—वह यह कहता है.

(राग भैरवी)

भारतमें कोऊ रहा नही वीर। अरि हंता रणी धीर ॥भा०॥
रवि शशि वंशज क्षत्रिय सबही। कैसे भये हतवीर ॥ भा०॥
गो ब्राह्मण की विपत देख सुन। भये हैं अंध वधीर ॥भा०॥
सेवक अब मैं किसको पुकारुं। क्षत्रिय पहरे चीर ॥भा०॥

सरदार—हें! हें! हें! महाराज वह ऐसा क्यों कहता है। क्या आप और हम लोगोंके सन्मुख अथवा पीछे, आपके राज्यमें विपतकी बात तो दूर रही, कभी किसीने गोब्राह्मणकी तर्फ ऊंगली-भी नही की है! हां! यदि किसी ने की हो तो वह आकर बतावें.

महाराज—नही नही? वह हमारे राज्यकी बात नही करता। वह यवन राज्यकी बात कहता है. कि यवन राज्य में गो ब्राह्मण पर बडा अत्याचार होता है.

(हरदत का प्रवेश)

हरदत–गाता हुवा दरबारमें आता है

(राग लऊआर सारं, ताल, दीपचंदी)

यवनो ने उत्पात मचायाहै भारी ।
दोहाई तेहारी दोहाई तेहारी ॥ यवनो ॥
मन्दिरको फोडें जनेऊको तोडें ।
ब्राह्मण सें करें मारा है मारी ॥ यव ॥
सत भंग करते हिन्दु कन्या का ।
मात गऊको हैं मारें कटारी ॥ यव ॥
और दुख तो सहते थे उनके ।
सहा न जाय है गोदुख जारी ॥ यव ॥
जैसे बने तैसे करो यतन कुछ ।
सेवक गो दुख देवो हो टारी ॥ यव ॥

महाराज–सिंहासन से, उतर चरण वन्दना कर के ! गुरु देव आप विराजें मैं आपकी आज्ञाको तन, मन, धनसे, पालन करुंगा, हाथ पकड कर कुशासन पर बैठाते हैं। और गऊके पास जा प्रनाम कर गलेसे लपटकर ! मां तेरा हाल मुझे सब मिल चुका है कि तुझको दुष्ट यवनो ने बहुत मारा है, यदि कोई उन दुष्टोका नाम ग्राम बतादे तो अभी उनको दण्ड दूं, पर क्या करुं कोई बताता ही नही है। अच्छा मां तुम घरमें जाओ (धर्मसिंहको पुकार कर) धर्मसिंघ कल्याणी को घरमें लेजाओ और महाराणिसे कहो कि इसकी सेवा करें.

धर्मसिंह–प्रनाम कर गऊको घरमें लेजाते है.

हरदत–(मनही मनमें) उस वनमें तो कोईभी नही था इनको कल्याणी के कष्ट का हाल कैसे मालूम हुआ.

महाराज–(हरदतके पास आ हाथ जोडकर) गुरुजी आप प्रथम भोजन कर आईये फिर जैसी आज्ञा करियेगा वैसाही किया जायेगा.

हरदत–आपको कल्याणीके कष्ट का हाल कैसे मालूम हुआ.

महाराज–एक ब्रह्मचारी कल आये हैं उन्होने बताया था.

हरदत–(मनही मनमें) हमने तो रास्तेमें भी किसीसे यह हाल नही जताया फिर उसको कैसे मालूम हुआ (महाराजसे) वह ब्रह्मचारीजी अब कहां पर हैं.

महाराज–वह अभीही यहां आवेंगे.

(शिवदतका प्रवेश.)

शिवदत–गाता हुआ आता है.

(राग, भैरवी, ताल, त्रीताला)

गोरक्षा करने वाले कहां गये हैं चराने वाले ॥ गो० ॥
दुख गऊका टाले टाले, भगति भाव पाले पाले,
सुख शांती में चाले चाले ॥ गो० ॥
वृन्दा वनमें कान कन्हैया-श्रीकृष्णने गऊ चाराई,
कली काल में नन्दनी को मारें कुठार कस्साई ॥
मेरी वारी आओ आओ रक्षण करने जाओ जाओ
नन्दनी को हो वचाओ । गो प्रतिपाल कृष्ण, कन्हैया
गऊके गलेसे छुरी अटकाओ, गऊको बचाओ, दुखसे
छुडाओ । सुनलेओ विन्ती हमरे मनकी, हिन्दसे
नाबूद करो गो हत्याये ॥ गायें. गायें, गायें, जग
मायें, मायें, मायें । मां की तरहा सेवक को दुधपिला
पाले पाले ॥ गो० ॥

हरदत–झट ऊठ शिवदतका हाथ पकड कर अपने पास वैठा लेता है. और फिर दोनो कुशल क्षेमकी बाते करते हैं.

हरदत–आपने कल्याणीके कष्टका हाल कैसे जाना जो महाराजा साहबसे कहा.

शिवदत–सब हाल बताता है.

हरदत–सब समाचार ठीक २ सुनकर, धन्यवाद देता है.

शिवदत–फिर खडा होकर महाराजसे प्राथना करता है.

(राग० जगधर गिरधर)

एय छत्रधर, धनुकर, खुश कर दिनकर, करो बन्द गोहत्या।
धर्मपाल, सुनो हेवाल, रहो खुशाल "चरंजीवी राखे श्री
कृष्णा" गाय विचारी, त्राहे पुकारी, रही उचारी, गले
कटारी, लागे भयकारी, धरता नही कोई ध्यां ॥ एय ॥
धेनु बचावो धावो धावो वीरो, धनुष बाण हाथमे लेई।
गऊओंका रक्षण करो तुम जई, समय जाये है छेई ॥
कलसे, बलसे, सामसे, दामसे गऊ बचावो, धर्म कमावो,
स्वर्गको पावो, कीर्ति फैलावो, बलवतों तहां ज्या ॥ एय ॥

हरदत—खडा हो सारे दरबार की तर्फ इशारा करके.

(राग भैरवी त्रिताला)

करो करो गोरक्षणका काम ॥ करो ॥
ले कृपान, ग्राम ग्राम, रहेगा अचल यह नाम रे ॥करो०
कंठ चिराता गऊ माताका क्यों कर देखा जाये,
गऊएं ही हैं धन, बचालेओ सब जन, मत छोडो हिमत,
करो रक्षाये ॥ करो० ॥

महाराज—हाथ जोडकर.

(राग० डरमा तू दिलसाथ छोकरा)

देवता सुनो हमारी बात । सुनो हमारी बात ॥ देवता ॥
जैसे बने हाटाऊं गोघात, देवता सुनो हमारी बात ॥ दे०॥
गऊ बचाऊं, धर्म कमाऊं, आज्ञा तुमारी को मैं बजालाऊं।
तब शत्री का मैं पूत कहाऊं, न बचाऊं तो मुहं न दिखाऊं ॥
अंत समय फिर नरकमें जाऊं? "आप सत्यही मानीये ॥"
देखो लेऊं हुं जनेऊको हाथ, इकलिंग को निवाकर माथ ॥दे०॥

परीक्षक—सिपाई का वेष किये दरबारमें बैठाहुअ महाराजकी यह प्रतिज्ञा सुन! खडा हो महाराजके आगे हाथ जोड़कर! महाराज—अभी तो पूरे दो वर्षभी नहीं हुये हैं, जो २ दुःख धर्म के कारण आपने यवनोसे पाये हैं! कृपा करके अब तो जरा आराम से बैठाये, वृथा

सोथ हुऐ सांपों को न जगाईये। मैं पूछता हुं? क्या वह गोवध आपके राज्य में करते हैं, जो फिर आप बैठे बैठाये उनसे टंटा चलाना चाहते हैं। हां? यदि वह आपके राज्यमें गोवध करते होते तो आपको गोरक्षा कराना उचित्त है। पर दूसरे देशों से आपको क्या मतलब, चाहे वह कुछ करें।

शिवदत्त—अरे? क्या तू गुजरात, सिंध, पंजाब, पश्चमोत्तर, बिहार, बंगाल, मध्यदेश, महाराष्ट इत्यादि खंड़ोंको दुसरा देश समझता है, अरे? नादान यह सब हिन्ददेश के अर्थात भारत वर्ष के हिस्से हैं इन सब के ही मिलाने से इस देशका नाम हिन्दोस्तान (भारत) है, और यह माहराज हिंदुपति पादशाह कहाते हैं, क्यों कि इन्हीके पूरुषा इसदेशका सदैव से राज्य करते आये हैं— यदि इस समय आपस की फूटके कारण यह सर्व खंडोंके अब राजा नहीं हैं। पर तो भी हिंदुमात्र आज तक इस ससोडीया वंशोत्पन्न को जो इस गद्दीपर बैठता है उसको अपना राजा समझते हैं, फिर- जब आजतक हिन्दु एसा समझतें हैं! तो क्या इनको हिंदुमात्रके धन धर्म जीवेकी रक्षा करना उचित नहीं है? और यह गऊ की रक्षा सेवा तो महाराजा दलीप, श्रीरामचंद्रजीसे लेकर आज पर्यन्त बराबर करते आये हैं? सुन. हम तुझको इस वंशका हाल सुनाते हैं.

(राग० कल्यान० ताल. दीपचंदी.)

वडोंने बचाई सदा मात गैई! गऊ हेतू लाखन लडेये लडाई। सतयुग दुआपर त्रेता में जब कब। सुनतंही गो दुःख खडग ले उठे तब॥ शोक है धर्म ग्रंथ् पढे न सुने तू। इसीसे है वक्ता ऐसा यहां तू॥ लिखी धर्म ग्रंथो में इनकी ये गाथा। गऊ हेतू दुष्टनके काटे हैं माथा॥ जबकब पडी गोपै कलयुग मैं विपता। हटानेके लिये फिरे नाही छिपता॥ सुनतेही गो दुःख गये दुष्ट सन्मुख। कर नाश उसका मिटाया है गो दुःख॥ गऊ हेतू चितोड में कैई वारे। लाखन मुगल येही कारन पछारे॥ कटे लाखोंही वीर क्षत्रीभी चंगे।

जली नार सोला सहस जिनके संगे ॥ यही कारनै पद्मिनी प्राणा दीना । दियो प्राणपै अधर्म को नीही लीना ॥ धर्म देश की जढ गऊ जानतेथे । यही कारनै गऊ बडे मानतेथे ॥ गऊ एकही जगतमें सारजानो । यही एकही धर्मकी नाओ मानो ॥ मरे पे जवे मित्र औ पुत्रभाई । फिरैं फूंक ज्यों लोग होरी जलाई ॥ गऊ मात ही वा दिनों काम आवे । वैतरनी नदी कठनके पार लावे ॥ सोई गऊको अव मारत यवन । धिक-धिक है तुमको करो न दमन ॥ क्षत्री जन्म गऊ केही लियेहे । करेना गौरक्षा वह क्षत्री नही है ॥ हो क्षत्री जो तुम बचावो गऊ-को । फैलावो जगत् में फिर से धर्मको ॥ जो हो क्षत्री सेवक गऊ जा बचावे । कटे यवन का सीस अपना कटावे ॥

अरे तू ही देख? लाखों राजे महाराजे इस भारत वर्ष में हुए हैं उनका नामोनिशान भी कहीं दिखलाई नही देता है । और यह थोडा बहुत बराबरही इस देशमें राज्य करते चले आये हैं, इसका कारण यह है कि जितना यह धर्म करतेहैं उतनाहीं धर्म इनकी रक्षा करताहै—क्योंकि मनु भगवान कहते हैं कि.

"धर्मएव हतो हन्ती धर्मो रक्षती रक्षतः"

अर्थात—जो धर्मकी हानी करताहै धर्म उसकी हानी करताहै और जो धर्मकी रक्षा करताहै धर्म उसकी रक्षा करताहै.

महाराज—यह वचन सुन खडे होकर.

(राग गजल.)

जैसे बनेगा वैसेही गोवध हटायेंगे । इक वार सारे हिन्दमें धर्म फैलायेंगे ॥ जै० ॥ जाये जहन्नुम में राजतो इसकी पर वाह नही ॥ क्षत्री धर्मको दाग न हरगिज लगायें गे ॥ जै० ॥ आज है कल्ह नही यह ताजो जर दुनिया का । फिर इसकी खातर क्या हम धर्म डूबायें गे ॥ जै० ॥ सेवक तो भूदेवजी तन धनसे है

तैयार। गऊ मातके लिये तो न सिर को छुपायेंगे ॥जै०॥

शिवदत्त–धन्यहो महाराज धन्यहो, हम गोब्रह्मणोंको अब केवल इक आपही का सहाराहै.

दिवान भामाशाह–महाराज यदि आप सारे भारत से गोवध हठाना चाहतेहैं, तो इस वारे में मेरी बुद्ध यह कहतीहै, कि जो काम प्रेम से निकलता है वह जोरसे कभी नही निकलता है। इसलिये आप किसी के हाथ बीरबदल को इस विषयका एक पत्र भेजीये कि वह बादशाहको समझा कर गोवध बन्द करादे, क्यों कि एकतो बादशाह उसकी बात मानता है। दुसरे बीरबल ऐसा चतुर है कि वह इस बारेमें सब एहलकारोंको समझाकर अपने संग करलेगा। कारण यह है कि बडे२मुसल्मान एहलकार भी तअस्सुबी नहीहैं। और बादशाह स्वयंभी कट्टर मुसल्मान नहीहै। इस्से आशाहै कि बीरबल को पत्र भेज नेसे झट काम विना लढाई दंगे के सिद्ध हो जायगा.

महाराज–ठीकहै? पहले ऐसाही करते हैं, फिर यदि इस्से काम न हुआ तो तलवारसे करायगें। पर पत्र किसके हाथ भेजें.

कानसिंघ–हाथ जोडकर

(राग० जिला, ठुंवरी).

जो वन आये स्वतंत्र पनोज, भलेभव निर धनता सहीये जी। आव धर्म हित काम कदापी, भले जई कैद विषय रहीये जी ॥ उन्नती देश यादि होती होयज, भोजन ऊंगज सवी तजीये जी। सेवक क्यों न पडे अती दुखही दुःखको सुख मान सदा रहीयेजी ॥ जो० ॥

यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं इस धर्मकार्य्यके पत्रको लेकर बीरबल के पास जाऊं.

महाराज–कानसिंघ के यह वचन सुनकर (मन ही मनमें) है तो यह छोटी ही उमरका, परन्तु, है वीर, साहसी चतुर चालाक, इसके हाथ पत्र भेजने से जरुरीही कार्य सिद्ध हो जायेगा। कारण यह है

कि यह साम, दाम, दण्ड, भेद सबी तरहा से काम निकाल लेगा । यह सोच पास बुला कर प्यारसे.

(राग० अहो विश्वके नाथ सर्वज्ञ सांचा)

कल प्रात भ्राता दिल्लीको जाना । गऊ मातका कार्य करके यां आना ॥ कल ॥ पत्र प्रथम वीरवल को पहुंचाना । फिर हर इक सभा सद् का भेद पाना ॥ कल ॥ बडेहोशसे बादशाह पास जाना । जो गुजरे वहां हाल हमको पठाना ॥ कल ॥ समझाना उसे वे गुनाह न सताना । न माने खडग फिर अपना चलाना ॥ कल ॥ न हरगिज वहां पीठ अपनी दिखाना । चपेटे विरोधीको झटपट लगाना ॥ कल ॥ तजो प्राणकी आश एय वीर भैया । हमारा धर्म हैगा गऊ-को बचाना ॥ कल ॥ भले प्राण जो गऊके हेतु जायें । न गऊऐं कटें सीस अपना कटाना ॥ कल ॥ सबी वीर गायेंगे यश ये तुमारा । यही नाम क्षत्रीको सेवक है पाना ॥ कल ॥

कानसिंघ—हाथ जोडकर—

(राग० अहो विश्वके नाथ)

महाराज आज्ञा का पालन करूंगा ।
न मानेगा फिर तो लडाई करुंगा ॥ महाराज०
इस बातसे नहीं कायेर बनूंगा ।
स्वासा रहे तक न रण से हटूंगा ॥ महाराज०

महाराज—शावाश वीर भैया शावाश । कहकर फिर (वजीर कृष्णसिंघसे) वजीर साहब पत्र लिखकर कानजी को दीजिये.

वजीर कृष्ण सिंघ—बहुत अच्छा महाराज कहकर । पत्र लिख महाराज से मुहर करा कानसिंघ को देता है.

कानसिंघ—पत्र ले जेबमें रख 'महाराज' और सब समाजोको प्रनाम कर अपनी माताजीको प्रनाम करने जाता है.

—०—

अंक १ परदा १४.

(स्थान कानसिंघकी माताका मकान)
मातजी एक आसनपर बैठीहुई माला जपती हैं.

कानसिंघ—माताके पासजा कर चरण वन्दना करता है.

माताजी—असीस दे कर, पुत्र आज तु देरी करके क्यों आया हैं क्या आज दरवार देरी से विसरजिन हुआ है.

कानसिंघ—हाथ जोडकर नहीं माताजी दरवार तो अभी वि सर जिन नही हुआ है.

माताजी—तो वेटा तूं क्यों दरवार से चला आया.

कानसिंघ—हाथ जोडकर

(राग० आशा गोडी)

माताजी जुल्म मचायो यवनने । जुल्म मचायो यवनने ॥
वडे हीनीडर होगये हैं यवन अव। लगे हैं गोवध करने॥मा०
देशलिया, धन, धाम लिया है। लगे अव धर्म कोहरने ॥
भैया कहा है जा तू दिल्लीको। कष्ट गऊ दूर करने ॥ मा०
येही कारणसे जाऊं कल दिल्ली। रक्षा धर्म की करने ॥
आज्ञा दीजे तुमभी सेवकको। जाऊं धर्मको करने ॥ मा०

मैं केवल दरवारसे आपकी आज्ञा लेने के ही लिये यहां चला आयाहूं.

माताजी—यवनो का अत्याचार सुनकर

(राग ठुमरी बैयां न पकर मेरी कलै मुज काई रे)

प्रिय पुत्र जावो जावो गऊको वचावो रे।
गऊको वचावो जाये धर्म को कमावो रे॥ प्रिय०
गऊ की रक्षासे देश की भलाई है।
गऊ के सहारे से ही धर्म है हमारो रे॥ प्रिय०
क्षत्रिय वेमुख जो होये गोरक्षा से।
धिक्क! जननी जिन कपूत एसो जायोरे॥ प्रिय०
तन मन धन सव गऊ पै वारो।

जैसे वने तैसे कष्ट गऊ निवारो रे ॥ प्रिय०
गो सेवक वन सेवा वजावो ।
कुलकी कीर्ति में नाम जा लिखावो रे ॥ प्रिय०॥

कानसिंघ—हाथ जोडके.

(राग० प्रभातीमें.)

प्रनाम करूं असीस दीजे। माताजी प्रनाम करूं असीस दीजे॥
जावूं दिल्लीको आज्ञा वजावूं। करूं यतन गऊ रहे जीजे ॥मा॥
आज्ञा दीजे मुझको माताजी। विलम्ब न इसमे करीजे ॥मा०
गो दुख हरुं तो मुंहको दिखावूं। सेवक का वचन पतीजे ॥मा०

माताजी—(प्यारसे) शावाश, पुत्र, शावाश, तेरे इस कार्यको भगवान सुफल करे, और शीघ्र ही तेरी सूरत दिखावे.

कानसिंघ—प्रणाम कर अपने मेहलको जाता है और माताजी ईश्वरसे प्रार्थना करती है.

(रा० भैरवी, ताल, दादरा.)

करुणा निधान दीनभक्त कार्यसिद्ध कारी। दुष्ट यवन् नाश करो विन्ती यह हमारी ॥ करु० ॥ यवन अव हुये प्रवल् करत अत्याचारी। उपकारी गऊ मातको मारत हैं कटारी॥ करु० ॥ धरम हेतु पुत्र जात यवन के दरवारी। रक्षा इसकी वहां पे करना गंग जठाधारी ॥ करु० ॥ विजये करके कार्य्य आवे जाऊं में वलिहारी। आशा मेरी पुरी करना सेवक हुं तेहारी ॥ करुणा ॥

स्थान कानसिंघजीका मेहल.

कानसिंघजी की पत्नी चन्द्रमुखी, और परसन
दाई दोनो वातें करती हैं.

चन्द्रमुखी—(परसन से) देखो वुआ! अभीतक प्राणनाथ नहीं अये, नही मालूम क्या कारण है.

परसन–बेटी अभी, थोडी ही देर हुई है, कि मैंने तुह्मारे प्राणनाथ को माताजीके महलमें जाते देखा था.

[कानसिंघ का प्रवेश.]

चन्द्रमुखी–कानसिंघको आते देख; शीघ्र उठ प्रनाम कर प्राणनाथ आज आप बहुत देरीसे पधारे हैं? क्या माताजीके दरशनो के लिये गये थे.

कानसिंघ–हां? प्यारी, माताजीके दरशनोके लिये गया था.

चन्द्रमुखी–आप तो माताजी के दरशनको सवेरे जाया करते हैं, क्या आज सबेरेको नहीं गये थे।

कानसिंघ–सबेरको भी गये थे, और इस समय भी गयेथे

चन्द्रमुखी–नाथ आज दो बार जानेका क्या कारण था.

कानसिंघ–प्राण प्यारी कल प्रातःकालही हम एक जरूरी कार्यके लिये दिल्ली जायेंगे, इस लिये माताजीकी आज्ञा लेने गयेथे

चन्द्रमुखी–हे? नाथ एसा क्या काम है जो आप दिल्लीको जाते हैं? क्या फिरकुछ दुष्ट यवन कला करना चाहते हैं.

कानसिंघ–हाथ पकडकर.

(रंग० रेखता)

प्यारी तुम सुनो हो बात हमारी। प्यारी तुम सुनो हो बात हमारी॥ दुष्ट यवन उत्पात करनलगे। गऊको सताएं अति भारी॥ प्यारी॥ दुःखतो, औरभी सहते हैं उनके। सहा न जाये ये दुलारी॥ प्यारी॥ गोदुःख सुनकर कहा भैया ने। जा तू शाहकी दरबारी॥ प्यारी॥ प्रथम प्रेम से नमाने तो युद्धसे। गऊका कष्ट आवो टारी॥ प्यारी॥ येही कारणसे जाताहुं दिल्ली। तोडूं यवनकी कटारी॥ प्यारी॥ बडा धर्म है येही क्षत्रीका। सुनत कष्ट देवे टारी॥ प्यारी॥

चन्द्रमुखी–प्यारे आपके साथ और कोन २ जाता है.

कानसिंघ—अभी तो हम अकेले ही जाते हैं काम पडने पर और लोग बुला लिये जायेंगे.

चन्द्रमुखी—कानसिंघजी का अकेले दिल्ली जाना सुन । हाथ जोडकर.

(राग. देश, रासधारी.)

तुम सुनो हो प्यारे देके कान । तुम सुनो हो प्यारे देके कान ॥
नही छोड़के जाओ मेरे जायेंगे प्राण, साथ लेके चलो यह अर्ज़ मान ॥ तुम० ॥ मेरे रहने का साथमें करो न भैय, मैंभी दुष्टका वहां करूंगी छै, पीया सत यह मेरा कहना मान॥तुम०
गऊ माता की मैंभी करुं सहाय, गोवधकन का देऊं रुधर वहाये, आप खडे देखीये करुणा निधान ॥ तुम० ॥
हुं क्षत्री की बेटी देखो यह तीर, न समझो पैरी हुं में चीर.
दस दस के लूंगी इक बाणसे प्राण ॥ तुम० ॥

कानसिंघजी—हाथ पकडकर.

(राग० नाटकी चाल.)

प्यारी न्यारी बतियां मेरे मन भाईरी ॥ प्यारी ॥ आज्ञा नही है मात भ्रात की, बनाऊं जो अपना सहाईरी॥प्यारी॥ विना आज्ञा ले जाऊं मातभ्रात को सताऊं, पतित कहाऊं? अंत नर्कको भी जाऊं, वहां दण्ड को भी पाउं, मारी प्यारी नारी वारी ॥ प्यारी न्यारी बतीयां मेरे मन भाईरी॥

चन्द्रमुखी—हाथ जोडकर.

(पद० नाटकी चाल.)

अजी नही मोकों छोड जावो ॥ अजी ॥
हाय? छोड के जो जावोगे, जीतीफिर न पावोगे,
हो हमारे प्राण प्यारे । हो, हमारे प्राण प्यारे ॥ अजी॥
कानसिंघजी—चन्द्रमुखको गले से लगा कर.

(पद नाटकी चाल.)

हो! प्यारी थोडे दिनन धरो धीर ॥ हो ॥
भैया की आज्ञा बजा जल्द आवूं ।
गऊकी मिटा आऊं पीर ॥
हो! प्यारी थोडे दिनन धरो धरी ॥

देखो प्यारी जो तुम हमारी आज्ञा कारी हो तो जबतक हम दिल्लीसे लौट कर न आवें, मनमें धीरज रख कर यदि हमारी माता की सेवा करोगी, तब हम जानेगे कि तुम हमारी प्रिय पत्नी हो.

चन्द्रमुखी–हाथ जोडकर—

(राग मेवाडी)

प्यारे तारी आज्ञा मुझे अंगी कार रे ।
जावो जावो करके आवो गऊका है जो काज ॥
गऊ बचाके यश फैलावो खुशी होंये महाराज रे ॥प्या॥
मुझे संग जो लेके जाते दिखाती अपना हाथ ।
शाह जो गोवध बन्द न करे काट लेऊं माथ रे ॥प्यारे॥

कानसिंघजी–(प्यार से)प्यारी मैं जानताहूं कि तुम बडी बीर हो, यदि माता भ्राताकी आज्ञा होती तो अवश्यही संग ले जाता.

चन्द्रमुखी–अच्छा प्राणनाथ यदि आपकी इच्छा दासी को संग ले जाने की नहीं है तो मैं भी हठ नही करती हुं आप पदारीये.

कानसिंघ–चन्द्रमुखी को गलेसे लगा । गाता हुआ दिल्लीको जाता है.

(राग० अटकावूं गोवध जाये.)

बचावूं! गऊ को जाऐ, कृपान धरी कर मांई । बचावूं ॥
बध गऊ को फिर नहीं थाये । बचावूं ॥
गऊ, आर्य्य धर्मकी माई, और हिन्द देशकी दाई, देवे दधी दूध मलाई ॥ अरे! धिक्क! यवन की सिख, खात हैं विप, बधे हैं गाई ॥ बचावूं ॥ हम भाई की आज्ञा पालें,

और प्रथम शान्तीसे चालें, न माने तो खडग निकालें, फिर मारुं उसेही जाऐ, करे नहीं न्याऐ, कहावे शाहे, कटावे गाऐ ॥ बचावूं ॥ हैं जानत यवन अभिमानी, गोवधसे हिन्दकी हानी, हैं हट् से करें कुरवानी । इने धिक्कार, करें यह रार, गऊ कोमार, हिन्दमें आऐ ॥ बचावूं ॥

चन्द्रमुखी—प्राणनाथ अकेलेही यवन दरबारमें गये हैं ईश्वरही कुशल् रक्खे, दोनो हाथ जोड कर ईश्वरसे प्रार्थना करती है.

(राग प्रभाती)

दीन बन्धु दीनानाथ भगत हितकारी । दीन जनके दुःख हारी तुमी हो मुरारी ॥ दीन ॥ गया भक्त धर्म हेतु शाहके दरबारी । रक्षा करना उसके वहां मोर मुकट धारी ॥ दीन ॥ दल यवन करें दमन मिट गोदुःख भारी । धरम करम भारतमें फिरसे होवे जारी ॥ दीन ॥ बार बार यही मांगूं भिक्षा बृज बिहारी । रक्षा करना सेवककी गदा चक्रधारी ॥ दीन० ॥

अंक ? परदा १८
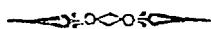
स्थान महाराजा प्रतापसिंघका प्राईविट कमरा

महाराज, और दिवान भामाशा और वजीर कृष्णसिंघ बैठे बाते करते हैं.

महाराज—कानसिंघ आजदिल्ली जायेगा, अकेला छोकडेको दुशमनके घर भेजना ठीक नही है इस लिये हमारी यह इच्छा है कि५० वीर सिपाही भेष बदल कर उसके पीछे भेजें, ताकि यदि कानजीपर किसी प्रकार की विपत पडे, तो यह उसकी मदद करें.

भामाशाह—महाराज आपने यह बात बहुत अच्छी बीचारी है, यद्यपि कानजी बडा चतुर, वीर है. पर तो भी अभी बालकही है, उसको अकेला भेजना ठीक नहीथा.

महाराज—(वजीर कृष्णसिंघसे)—वजीर साहव आप कल ९० वीर सिपाहीयों को भेष वदला कर दिल्ली भेज दीजीयेगा, और उनसें कह दीजीयेगा कि कानसिंघ पर अपना भेद प्रगट न करना, केवल ८—१०, मनुष्य भेष वदल कर उसके पीछ २ रहना और काम पडने पर सबके सब अकठे हो जाना.

कृष्णसिंघ—बहुत अच्छा ! कल मैं ९० सिपाहीयोंको भेज दूंगा.

महाराज—तो अब हमभी आराम करते हैं और आपलोग भी आराम कीजीये। सबके सब अपने २ घरको जाते हैं.

अंक १ परदा १६

(स्थान एक वागमें दो नौ जवान लडके)

भवानीचन्द्र और वीरेन्द्रसिंघ वैठे हुये वाते कर रहे हैं।

भवानीचन्द्र—देखो वीरेन्दरसिंघ कानजी अकेलेही कल दिल्ली गयेहैं, यह अच्छा नही हुआ। कारण यह है कि यदि किसी वातमें अकवरसे खटपटहो गई तो कानसिंघ वडी भारी विपतमें फंस जायेंगे.

वीरेन्द्रसिंघ—अजी तुम कानजीको कोई एसा वैसा नादान छोकराही ना जानीये. वह वडा चतुर, साहसी, वीर है, उसका फंस जाना कुछ खेल नही है.

भवानीचन्द्र—यह हमभी मानते हैं कि कानजी वडा चतुर साहसी वीर है, पर यदि किसी वातमें विगडा विगडी होगई तो हजारों दुशमनोके वीचमें अकेले कानजी क्या कर सकेंगे.

वीरेन्द्रसिंघ—वह आपही गये हैं इसमें किसीका क्या दोष है.

भवानीचन्द्र—दोष तो इसमें किसीका नही है, पर हम तुमको तो उसकी सहायता करना उचित है, क्योंकि मित्रका यहही धर्म है.

धीरज धर्म मित्र, और नारी।
आपतकाल परखीये चारी ॥

वीरेन्द्रसिंघ—तुम ठीक कहते हो, पर हम किस तरहकी मदद

करें। हां! यदि हमको तुमहारी तरह ऐयारी* अती होती तो हम वेशक कांनजीकी मद्दकर सकते, पर यह विद्या हमको अभी अच्छी तरह से आती नही है। निस्संदेह! तुम इस विद्याके पूर्ण पंडित हो यदि मद्दकरना चाहो तो अच्छी तरहसे कर सकते हो.

भवानीचन्द्र—मैं तो मद्द करनेको तैयार हुं, पर इस सोचमें हूं कि पिताजीसे कोन वहाना करके जाऊं, यदि चुपके चला जाऊं, तो वह खोज करेंगे, और अन्तको सव कोई जान जायेंगे कि कानसिंवके साथ गया है, फिर इससे महाराज वडे खफा होंगे.

विरेन्द्रसिंघ—तुम कईवार अकलेही ग्रोमोंमें यजमानोके यहां जाया करते हो, यजमानोके वहानेसे पिताजीसे आज्ञा लेकर जाओ

भवानीचन्द्र—ठीक है!— इसी वहानेसे मैं कल कानजी की मद्दके लिये जाऊंगा। पर तुम इस वातका ध्यान रखना कि तुमसे किसी पर भी यह हाल प्रगट न हो जाय, नही तो वडी खरावी होगी.

वीरेन्द्रसिंघ—तुम इस वातकी चिन्ता न करो, हम ऐसी हुशयारी से रहेंगे कि किसी को भी तुम्हारे दिल्ली जानेका शूवहा न गुजरेगा.

भवानीचन्द्र—तो चलो अव घरको चलें। दोनो जाते हैं

—o-oo<>oo-o—

अंक १ परदा १७

स्थान भवानीचन्द्रका मकान

भवानीचन्द्र और उसका पिता दोनो बैठे वातें करते हैं

भवानीचन्द्र—पिताजी वहुत दिनोसे वाहरके यजमानोके यहां न आप गये हैं. न मैं गया हुं। अज्ञा दें तो मैं कल जाऊं

पिता—पुत्र अव हमसे तो नही जायाजाता है, यदि तेरी इच्छा जानेकी हो तो तू जा.

भवानीचन्द्र—पिता को प्रनामकर अपने कमरे में जा ऐयारीका सव समान ठीक कर दिल्लीको रवाना होता है.

---

* हरएक तरहके फन जाननेको ऐयारी कहते है। शकल वदलना और दोडना इनका मुख्य काम है.

अंक २ परदा १

(स्थान वनमें चौ रस्ता)

कानसिंघ चौ रस्तमें किसी राहीसे दिल्लीका रस्ता पूछने के लिये खडा है.

भवानीचन्द्र–सिपाहीके भेष में कानसिंघसे चौरस्तेमें भेट करके अकेले वनमें खडे होनेका हाल पुछता है

(राग० कोन गली गये शाम)

वतावो राजा अकेले कहांको जावो। अकेले कहांको जावो॥ वता॥ संग नही कोई नौकर तुमारे। अकेले कहां को धावो॥ वता॥ क्या कुछ खटपट हुई किसीसें। हमको तुम ये जतावो॥ वता॥ सेवक चाकर है गा तुमारो। करूं सहाये जो चाहवो॥ वता॥

कानसिंघ–भवानी चन्द्रके ऐसे वचन सुनकर? भाई चाहे हम कहीं जाते हों, तुमको पूछनेसे क्या प्रयोजन

भवानीचन्द्र–हम आपके दास हैं आपको अकेले जाते देखकर कुछ शक हुआ, इस लीय पुछा है.

कानसिंघ–तुम कहां को जाते हो.

भवानीचन्द्र–मेरी वहुत दिनोसे दिल्ली देखनेकी इच्छा थी इस लिये दिल्लीको जाताहुं

कानसिंघ–हमभी कुछ कार्य्य के लिये दिल्लीको ही जाते हैं.

भवानीचन्द्र–एसा कोन काम है जो आप अकेलेही शत्रुके घरमें जाते हो.

कानसिंघ–कोई एसाही काम है.

भवानीचन्द्र–खैर! कार्य पूछनेका मुझे कुछ प्रयोजन नही, पर मैं एक प्रार्थना करना चाहता हुं, यदि स्वीकार करें तो कहुं.

कानसिंघ–कहो! तुम्हारी क्या प्रार्थना है.

भवानीचन्द्र–जबतक आप दिल्लीमें रहें तबतक हमको आप अपने साथ रक्खें, कारण यह है कि आप अकेले शत्रुके घरमें जाते हैं मुझे आपके अकेले शत्रुके घरमें जानेसे भय मालूम होता है इसलिये

मेरी इच्छा आपके साथ रहनेको कहती है, क्योंकि आप हमारे देशके राजा हैं. इसलिये आपकी सेवा करना हमारा धर्म है.

कानसिंघ—भवानीचन्द्रकी एसी बातें सुन (मनही मनमें) यह सिपाही बडा नेक मालूम पडता है। इसको साथ रक्खनेसे किसी प्रकारका हर्ज नही होगा, परन्तु लाभही होगा। (प्रगट रुपसे) अच्छा तुम्हारी यदि ऐसीही इच्छा है तो बेशक हमारे साथ रहो.

भवानीचन्द्र—पर मेरी आपसे एक और यह प्रार्थना है कि जब आप बादशाही दरबारमें अथवा किसी और जगह जाया करेंगे तो मैं आपके साथ न जाया करुंगा, कारण यह है मैं वास्ते सेरकरने के दिल्ली जाता हुं, उस समय मैं सेरके लिये जाया करुं गा.

कानसिंघ—(मनही मनमें) इससें हमारा कोई हर्ज तो है.ही नही (प्रगट रुपसे) हमारे कहीं जाने बाद जहां तुम्हारी इच्छा हो वहां जाया करना। अच्छा तुम्हारा क्या नाम है.

भवानीचन्द्र—मेरा नाम चतुरसिंग है। आपस में बातचीत करते हुये दोनो दिल्ली पहुंचते हैं और यमुनाजी पर एक मकानमें निवास करते हैं.

—०-०००००-०—

अंक २ परदा २.

स्थान उदेपुर, एक मन्दरमें

शिवदत हरदत ब्रह्मचरी बैठे बाते करते हैं.

शिवदत्त—महाशय, कानसिंघजी कल तो दिल्ली को गयेहैं, यदि हमभी जाते तो ठीक होता, कारण इसका यह है कि वहां यह देखनेमें आता कि कानसिंघजी वहां जाकर क्या २ काम करते हैं.

हरदत्त—यदि आपकी दिल्ली जानेकी इच्छा है तो आप जाईये, पर कानसिंघजी से न मिलीयेगा। केवल, गुप्तरीतीसे खोज करियेगा कि कानजी वहां क्या क्या काम करता है.

शिवदत्त—ठीक, एसाही करुंगा। यह कह नमस्कार कर दिल्लीको जाता है।

दर्शक—मन्दर को दिवारकी आडमें शिवदत्तका दिल्ली जानेकी बातसुन कर (मनही मनमें) कानसिंघ तो दिल्ली गया है और अब शिवदत्त भी जाताहै । इन दोनोके जानेसे जरूरही गोरक्षा हो जायेगी ।इस लिये शिवदत्तके पहले२ दिल्ली पहुंचकर कोई ऐसी युक्ती करूं कि जब शिवदत्त दिल्ली पहुंचे, पहुचतेही इसकी ऐसी दुरदिशा होकि फिर कभी गोरक्षाका नामही न लेवे, यह सोचकर गाता हुआ दिल्लीको जाता है

(राग० लटकनसे दम जाते जंगपर)

पूरब पश्चम उत्तर दक्षण मैं हेंगे जितने स्थान । अरमन जरमन इग्लंड रूसी फ्रांसी चीनी तुर्कस्तान ॥पू॥अमरीका अफरीका आरलैंड रूमी मिसरी ब्रह्म जैपान । सभी मुल्कमें राज है मेरा, पर नही था इक हिन्दोस्तान ॥पू॥वडे यतनसे थोडे दिन में किया है तावे फरमान । फिर ये चाहता धर्म कर्म कर होना मुझ से नाफरमान ॥पू॥अबतो इसको एसा बनाऊं कभी नले फिर धर्म का नाम । गांजा दारु ताडी पोस्त करूं प्याकर खूब मस्तान ॥पू॥जुआ चोरी नारीयारी हिंसा मे करदुं गलतान । आर्य्यको नार्य बनाऊं तवतो मेरा नाम शैतान॥पू॥जाऊं दिल्ली काम बिगाडूं समझाकर अकबर सुलतान । गऊ कटाकर फूट कराकर करदुं सारा हिंन्द वैरान ॥ पू ॥

अंक २ परदा ३

स्थान यमुनाजीके तटपर एक मकानमें.

कानसिंघ और भवानी चन्द्र बैठे हुये बातें कर रहे हैं.

कानसिंघ—भाई चतुरसिंघ अब तो हम अपने कामको जाते हैं तुमारी जहां इच्छा हो जाना, पर रातको जल्द आजाना.

भवानी चन्द्र—बहुत अच्छा आप पधारीये, मैं सैर करके रातको जल्द आजाऊंगा.

कानसिंघ—बीरबलके मकान को जाता और भवानीचन्द्र मुसल्मान फकीरका भेष धारण कर शहरको जाता है. और

शहरकी सैरकर पांच बजे के समय बादशाही बागमें एक वृक्षके नीचे जा बैठता है.

—⊰○⌘○⊱—
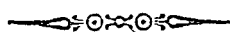
अंक २ परदा ४

स्थान दिल्ली नगर बीरबलका मकान.

बीरबल अपने प्राईविट कमरेमें अकेला बैठा हुआ कोई पुस्तक देख रहा है.

कानसिंघ—दरबान से, जमादार आप हमारी खबर महाराजसे कर दीजिये कि एक मनुष्य आपके दरशनोके लिये मेवाड देश से आया है.

दरबान—बहुत अच्छा साहब कह, अंदर जा बीरबलसे: महाराज कोई राजपूतका छोकडा आपके दरशनोके लिये आना चाहता है.

बीरबल—आने दो.

दरबान—बाहर आकर—कानसिंघसे: जाइये साहब!

कानसिंघ—कमरेमें जा बीरबलको बैठे देख प्रनाम कर जेब से पत्र निकाल कर देता है.

बीरबल—पत्र ले आदर पूर्वक कानसिंघको एक आसन पर बैठला, पत्र पढ़ता है.

(पत्र[*])

स्वति श्री ५ सर्वोपमा योग्य सर्व गुणालंकृत कवी द्विजराज श्री बीरबल योग्य लिखतम् शुभस्थान उदेपूरसे सेवक प्रतापसिंघ

---

[*] भारत प्रसिद्ध उदेपूर निवासी श्रीयुत कवी शांमलदासजी जब यात्रा करते हुऐ काशीमें आयेथे तब हम उनके निवास स्थान राणामहलमें दरशन के लिये गयेथे वहां बातचीतमें गोरक्षाका विषय चलपड़ा हमने उनसे पूछा कि अकबर बादशाहने गोवध कैसे बन्द कियाथा उन्होने कहा कि १६४३ संम्वत मुताबकि संन-हिजरी ९९५ को दोब्राह्मणोंने महाराजा प्रतापसिंघजीसे गोवधकी फरयाद कीथी जिसको सुनकर महाराजाने इसबारेमें बादशाह के समझानेके लिये बीरबलको एक पत्रलिखाथा—तब बीरबलने अकबर बादशाहको समझाकर गोवध बंद करादियाथा.

ससोडीया का पालगन अंगिकार कीजीये गा। आगे विशेष विन्ती यह है कि आजकल यवनोंने गऊमाताजी पर बडा अत्याचार कर रक्खा है जिस्से हमे ही क्या परन्तु हिन्दु मात्रकाही मन इस अत्याचारसे दुखित हो रहा हैं. इसलिये यह पत्र आपकी सेवामें आपको अपना एक धर्म सबन्धी भ्राता जानकर लिखा गया है कि आप अकबरको समझा बुझा कर यह गोवध महापाप भारतसे बन्द करादीजिये। यदि वह आपके समझानेसे यह महापाप भारतसे बन्द न करेगा। तो याद रक्खे इसका परीनाम बुरा पायेगा। हम तो अभीही इसका परीनाम तलवारसे देनेको त्यार हो गयेथे, किन्तु फिर हमनें समझा कि प्रथम आपको इस विषयकी सूचना कर देना ऊचित है. कि शायद आप उसको समझादें और वह आपके समझानेसे गोवध यवनोंसे बन्द करादे, और निरापराध लाखों प्राणियोंका रुधिर न वहे। इसलिये इस पत्रद्वारा आपसें मालूम किया चाहते हैं कि आपके समझानेसे अकबर इस गोवध महापापको बन्द करसकता है या नही, जैसा आपकी समझमें आवे हमारे पत्रका उत्तर शीघ्र लिख भेजीयेगा। इति मति कार्तिक सुदि १ सम्वत १६४३.

चिठ्ठी पढ़कर (कानसिंघजीसे) महाराजजीने जो गोहत्या निवारणके बारेमें लिखा है. इसमें मेरीभी पूर्ण समत्ती है, परः बलसे कराना ठीक नही है, कारण इसका यह है कि जब कभी हिन्दुओंका जोर रहेगा तब तो यह बन्द होजायगा और फिर जब मुसल्मानोका जोर होगा, तब फिर जारी होजायगा, इस्से किसी युक्तीसे बन्द कराना ऊचित है.

कानसिंघ—मेरी राय भी आपकी रायसे मिलती है। पर मुझे इन जैपूर जोधपूर वाले राजपूत भाईयों पर शोक आता है कि आजतक इन्होने बादशाहसे मुसल्मानोंके हिंदुधर्म पर हस्ताक्षेप न करनेकी रोकके लिये कभी भी न समझाया,और चुप चाप अभी

तक देखहीं रहे है। कहिये फिर इनका दरबारमें रहनेसे क्या लाभ, व्यर्थ इन्होने क्षत्री कुलमें जन्म पाया, और श्रेष्ठ क्षत्री कुलको कलंक लगाया, मैं सत्य कहता हुं कि यवनोकी तावेदारीमें रहनेसे, अपने पवित्र धर्म और देशकी कभीभी भलाई न होसकेगी। आपही सोचें कि इन भ्रष्ट यवनोके सख्त जुल्मों और अपने आपकी फूटसे कैसी दिन प्रतिदिन धर्म और देशकी बुरी दशा होती जाती है। अच्छा फूटही सही, परन्तु धर्म रक्षाके लिये तो हम सबको एक हो जाना चाहिये। पर, शोक! कि इनसे यहभी नही बनता है। द्वेशसे धर्मकाभी नाश करा रहे हैं। धिक्कार है! ऐसे क्षत्रीयों पर कि धर्म नाश हो और यह चुप चाप बैटे देखा करें, और सहायक न बने,। आपही कहीये इनसे और क्या हित हो सकेगा, सोचें? फीर कभी इंन अधर्मीयोंका भी ईश्वर भला कर सकता है। दखो जब हमारे पूर्वपूरुषा धर्म रक्षाके लिये प्राणदेनेपर तैयार रहतेथे, तभी वदेशी उनके तेजके सामने भारतकी तर्फ कभी मुंह भी नही उठा सकतेथे, जबसे हम क्षत्रीयोंने धर्मकी ममता छोड़दी, तबसे कैसी दुर्गति भोग रहे हैं। हाय! वडे शोककी वातहै कि अपना देश अपने जन्मभूमी, अपनी सत्ता सब कुछ अपनाही होकर आज हम सवोंको वदेशीयोंका दासात्व स्वीकार करना पडा है? क्या यह कुछ कम लज्जाकी बात है। अच्छा? दासात्वभी सही। परन्तु, धर्मपर हस्ताक्षेप होते देखकर चुप चाप बैठ रहना, यह ना मरदों का काम नही तो और क्या है। क्या क्षत्रीय वीर्य सब नष्ट होगया? क्या आर्य धर्माभिमान विलकुल लुप्त होगया? क्या हिन्दु सबी शंठ बनगये? क्या शूरराजपूतोंने अपना क्षात्रिय धर्म गोब्राह्मणकी रक्षा त्याग यवनोकी तावेदारीही को अपना धर्म समझ लियां है! धिक्कार है! अनंत धिक्कार है! एसे क्षत्रीयों पर जिनको धर्म देश और कुलका कुछभी अभिमान नही है। क्षत्रीयोंका जन्म धर्म देशकुलहितके लिये मर जानाही श्रेष्ट है, पर अपनेसे नीच परधर्मीकी तावेदारी करनी उचित नही है। हां? यदि कोई क्षत्रीय सर्व

भौम हो तो उसकी तावेदारी करनेका डर नही हैं। क्योंकि वह अपना क्षत्रीय भाई तो है। किन्तु, अन्याई अधर्मी, पक्षपाती तुरकोंकी तावेदारी करना, प्राण जायें तो जायें पर इनकी तावेदारी करना क्षत्रीयों को उचित नही है। देखो इन अन्याई तुर्कोंने, गऊ, ब्राह्मण, कन्या, मन्दरों, पर कैसा अन्याय कर रक्खा है। दूसरे इनका और पक्षपात देखये कैसा है। अर्थात "जैजीया" भी हिन्दुओं पर ही लगाया हुआ हैं। अस्तु जैजीयाभी सही। पर अनाथ गऊओं परं अत्याचार तो न कर ते। मैं! सत्य कहता हुं यह गो कष्ट देखकर यहही जी चाहता है कि विना वादशाहको प्राण दण्ड दीये नजाऊं। मैं आपकी कसम खाकर कहता हुं कि यदि वादशाह गो वध इत्यादि अत्याचार वन्द करदे तो मैं चुपकेही अपने घरको चला जाऊंगा, वरना या उसका सिर नही या मेरा सिर नही। और भ्रताजीकी मुझे येही आज्ञाभी है। वस आप कृपा करके वादशाहको यह जता दीजीये.

(राग मेरे गमकातराना.)

वस येही जताना गऊ ना कटाना होये ॥
गा नही नुकसान। न जैजीया लगाना, मन्दर गिराना,
कन्या सताना, गोवध कराना, होयेगानही नुकसान ॥
मानेगा नहीं कहा जो यह, फिर सारी उमर पछताय।
मेल न होगा कभी हिन्द में, जो राज निश्चित चलाय॥
होगा खाना व खाना रुधिर वहाना गऊ ना
कटाना, होयेगा नही नुकसान ॥ वस ॥
वादशाहत उसकी रहे, रक्खे नजर जो ऐक।
पक्ष करे न किसी का वोही वादशाह नेक ॥
न होना दुशमन यगाना और वेगाना,
गऊना कटाना होयगा नही नुकसान ॥ वस ॥
इससमयके वादशाह जिनको यह है पसन्द।

धर्म कर्म रैयतका जवरन करते वन्द ॥
रैयत सताना, उसको रुलाना, अधर्मी वना धर्म
हटाना, गऊ ना कटाना होयगा नही नुकसान ॥वस ॥
लाभ गऊके जानकर तो भी न करें विचार।
हट धर्मी में आन कर देवें गऊ को मार ॥
न गुण को पहचना, कैसे दिवाना, हैंग
नांदाना, गऊ ना कटाना होयेगा नही नुकसाना ॥ वस ॥
समझादो उसको वीरवल जाऊं चुपके ग्राम।
नही तो इसी कटारसे करूंगा काम तमाम ॥
जो कहना, न माना, होगा हैराना, सेवक वताना;
गऊ ना कटाना, होयेगा नही नुकसान। वस ॥"

खैर! अवतो मैंजाताहुं फिर आपके दरशन करूंगा इतनाकह प्रणाम करके अपने स्थानको जाताहै.

वीरवल— (मनही मनमें) है तो यह वालक वडा साहसी क्यों न साहसी हो, आखर महाराणा प्रतापसिंघकाही तो भाई है. इसमें कुछभी संदेह नही है कि यह विना मरे या वादशाहको मारे न हटेगा। पर हमारा धर्म यह है की दोनोकी रक्षाकरें, क्यों कि वादशाहका तो निमक खाते हैं इसलिये वादशाहकोभी वचाना धर्म है, और कानजी धर्म की रक्षा के लिये अपना सुख छोडकर आया है इसलिये इसकोभी वचाना धर्म है। पर इसमें कोई एसी युक्ति करनी चाहिये, कि जिससे दोनोके प्राण वचें (कुछ सोचकर) खैर कोई युक्ति करेंगे

अंक २ परदा ९

स्थान वादशाही वाग
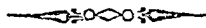
अकवरवादशाह वारादरीमें वैठे हुये फव्वारे की वहार देखकर खुदाकी याद करते हैं.

(राग जंगला गजल.)

अये खुदा करीमो कारो साजो अये रहीम,
है ज़ात वादुला शरीक अयें मेरे करीम ॥अये०॥

बख़्शा है तूने मुझको ये रुतबाऐ आली।
ये ताजो तख़्त् तूने दिया अये मेरे फहीम ॥ अ० ॥
जिसको तूं चाहे शाह करें या करें गदा।
बख़्शें किसीको वालदंन या करें यतीम ॥ अ० ॥
मैं हम्द तेरी क्या करुं मेरी ज़ुबां नही,
जिल्दीं खवर ले मेरी दो जहान के हकीम ॥ अ० ॥
सेवक तो शबो रोज़ तेरी करता है प्रस्तिश।
तेरे सिवा किसी और को करता नही तसलीम॥अ०॥

भवानीचन्द्र—बादशाहको खुदाकी याद करते देख एक पेडकी आडमें

(पद.)

हज़ार गंज कनायत हज़ार गंजे कर्म,
हज़ार ताऐते शबहा हज़ार बेदारी।
हज़ार सिजदा व हर सिजदारा हज़ार निमाज़,
कबूल नेस्त अगर खातरे ब्याज़ारी ॥ ह० ॥

अकबर—भवानी चन्द्रके गायनकी अवाज सुन (मनही मनमे) यह बागमें ऐसा कोन गाता है, वल्ला ज़बान गानेवालेकी कैसी शीरीं है. इसको पास बुलाकर गायन सुनना चाहिये,(ख़वासको बुलाकर) अरे हुसेन, देखतो? यह कोन गाता है उसको हमारे पास बुलाला,

हुसेन—बहुत अच्छा खुदावन्द कहकर, भवानी चन्द्रके पास जाता है और पासजा सलाम कर कहताहै आपको बादशाह बुलाते हैं

भवानीचन्द्र—(हुसेनसे) अच्छा, चलो (दोनो बादशाहकेपास जाते है)

बादशाह—कुछ दूरसे भवानी चन्द्रको फकीरकी सूरत में देख (मनहीं मनमें) अरे यह कोई फरिशता है या किसी बादशाहका फरज़न्द है सुरत तो ऐसी ही मालूम होती है इसने फकीरी क्यों अखत्यारकी है, खैरपास आने पर पूछ लेंगे,

भवानीचन्द्र—(बादशाहकेपास) आकर, खुदावन्द करीम हर बला से बचावे

बादशाह—आपकी दुआसे, कहकर, (एक कुरसीपर बैठाता है)

भवानीचन्द्र—आपने हमको यहां क्यों बुलाया है

बादशाह—आप पेडकी आडमें बैठे क्या गा रहेथे

भवानीचन्द्र—हम वहां यह गा रहेथे

(पद.)

हजार गंज कनाएत हज़ार गंजे कर्म,
हज़ार ताअते शवहा हज़ार वेदारी ।
हज़ार सिजदा व हर सिजदारा हज़ार निमाज,
कबूल नेस्त अगर खातरे ब्याज़ुरी ॥

एय ! बादशाह ? चाहे कोई हज़ार खजाने सबरके और हज़ार खज़ाने बखशिशके और हज़ार सिजदे करे और हजार सिजदेमें हज़ार निमाज पढे, कबूल नही होती है अगर वह एक दिलको भी सताये ! और आप तो रोज़ही हज़ारों लाखोंके दिल दुखाते हैं इसलिये आपकी दुआ तो खुदाकी दरगाहमें हरगिज़ नहीं कबूल हो सकती है.

बादशाह—(मनही मनमें) फकीर ठीक कहता है (प्रगट रुपसे) तो सांईसाहब कोई एसाभी उपाय है कि जिस्से हमारी दुआ (प्रार्थना) भी खुदाकी दरगाहमें कबूल होये और हमको नजात (मुक्ती) मिले.

भवानीचन्द्र—हां ! एक उपाय है अगर आप वह उपाय करें तो बेशक आपकी दुआ खुदा कबूल करे और तुमे नजात बखशे

बादशाह—तो आप वह उपाय हमको बताये.

भवानीचन्द्र—वह उपाय यहही है कि आप खुदाके हुकम बमोजब चलें, बस यही उपाय है.

बादशाह—खुदाका क्या हुकम है

भवानीचन्द्र—खुदाका हुकम यह है

(पद)

हासिल न शवद रज़ाये सुलतां,
ता खातरे बन्द गां न जोई ॥
ख्वाही कि खुदाये वरतो वख़्शद।
वा खल्के खुदाय कुन् निकोई ॥हा ।

देखो कई बादशाह इस दुनियामें आये, जो इसहुक्म के मुताबिक़ न चल सके, आख़र उनकी यह हालत हुई.

आयेथे इस वागमें खाली दामन ले गये,
खाकसिर पर दाग दिलपर सीना विरायां लेगये ॥

इस लिये हम तुमको कहते हैं कि यदि तुम ख़ुदाको खुश रखना चाहते हो तो तअस्सुब को छोडकर सब खुदाकी खलकको एक नज़रसे देखो, और किसी मज़हबकी तर्फदारी न कर के सबको इन्साफ से खुश रक़्खो.

बादशाह–साईं साहब, मैं आपकी इस नसीहत को दिलो जान् से वजा लाऊंगा.

भवानीचन्द्र–हमारा तो नसीहत ही करना फर्ज़ था, मान्ना न मानना आपके अख़त्यार है.

बादशाह–साईं साहब हम कस्म खाकर कहते हैं कि आजसे अगर आपकी यह नसीहत न मानें तो ख़ुदा के जबाब दहिन्दा होंगे.

भवानीचन्द्र–तो हम भी अब जाते हैं.

बादशाह–नही २ आप अभी तशरीफ रक्खें, हमारा एक और सवाल है.

भवानीचन्द्र–आपका जो और सवाल हो सो कहीये.

बादशाह–आप कहां के रहने वाले हैं और आप किस मज़् हबके फकीर हैं.

भवानी०–हम इसी मुल्कहिन्दोस्तान के रहनेवाले हैं, छोटी

ही उमरमें हर मज़हबके फकीरों की सोहबतकी थी और हरएक मज़हबकी कितावें पढीं व सुनी, आखरको सबका नतीजा सार पा लिया.

(पद.)

मन ज़ कुरां मग़ज़रा वर दाश्तम् ।
उसत्ख्वां पेशे सगां अन्दा खतम् ॥

बादशाह—तो आप ने सबका सार क्या पाया और कोनसा मज़हब अखत्यार किया

भवानीचन्द्र—

(पद)

मेया ज़ार तामी तवानीं कसे ॥
कि पुर जोर तर अज़ तो दीदम बसे ॥
बरावर्द गेती अजेशां दिमार ॥
चरीं दन्दा दर मग़ज़ शां मोरमार ॥ मे० ॥

बस येही सबका सार पाया है और हरदिल खुश दाशतन मज़हब अखत्यार किया है.

बादशाह—सांई साहब आजसे हमभी येही मज़हब अखत्यार करतेहैं और आपको अपना पीर मुरशिद (गुरू) मानेंगे.

भवानीचन्द्र—खुदावन्दकरीम हर बला से बचावे, तो हम अब जाते हैं.

बादशाह—मेहरबानी करके खाना नोश फरमाकर तशरीफ ले जाईयेगा

भवानीचन्द्र—हमतो ऐक ही वक्त खाना खाते हैं सो आज हम खा चुकेहैं, बनेगा तो कल आपके यहां खायेंगे

बादशह—तो आज हमारे ही गरीब खानेमें रात बसर करीये, कल खाना नोशफरमा कर जहां दिल चाहे जाईयेगा

भवानीचन्द्र—यह घर व खाना आपहीको मुबारक रहे, फकीरोंको तकीये में सोना और घर २ मांगा हुआ टुकडा खाना ही अच्छा है—

(यह कह कर चला जाता है.)

अंक २ परदा १

स्थान अकबर बादशाहका दरबार.

वजीर दिवान, राजा, सरदार अदि बैठे हैं, बादशाह मेहलसे आकर तखत के पास बैठ खुदाका शुक्र अदाकरता है.

(राग, गजल.)

अगर आंख खोलें तुही दर नज़र है ।
व गर कान खोलें तेरा ही जि़कर है ॥ अ ॥
तेरीही है कुदरत हरयक पै जाहिर ।
सनासे तेरे पुर जुबानीं बशर है ॥ अ ॥
तेरेही हैं मोहताज़ पीरो पयम्बर ।
तेरा हुकुम यूं जारी वा करोंफर है ॥ अ ॥
तेराही करम पाक परवर दि गार,
मददगार सेवकका तूहीं दर हशरहै ॥ अ ॥

बादशाह—(तखत पर बैठकर.) अय हमारे वज़ीर, दिवान, सरदारो, खुदावन्द करीम के फज़लो कर्मसे हमको सारे हिन्दकी बादशाहत अनायत हुई है, इस लिये हम चाहते हैं कि कोई एसा बरताव करें जिस्से सारी रैयत हमसे खुश रहे, और हमसे मुहब्बत रक्खे,क्यों कि जब रैयत हमसे मुहब्बत रक्खेगी तो फिर किसी दुशमनका डर न रहेगा, इस लिये तुम लोग कोई ऐसी तदबीर बताओ. कि जिस्से रैयत के दिलमें हमारी मुहब्बत खूब पैठ जाये.

बीरबल—जहान पनाह मेरी समझ तो यह कहतीहै;

(पद)

नकरना पक्ष किसीका, नहोना बेईमान ॥
रखके दिलमें खोफे खुदा, खुश करना हर इन्सान ॥

फेज़ी—अय साहेबे इकबाल,

(पद)

मतकर क़िसी पै जबर दस्ती, क़िसीका दिल दुखाना नहीं ॥
अल्लाने तुजको शाह किया, फिर बे इन्साफ होजाना नहीं ॥

खान खाना—अय खुदावन्द न्यामत,

(पद)

रक्खो मुहब्बत रैयतसे जो तुम, टटोल्को गरीबों ॥
का कलवो जिगरतुम छोडो तअस्सवको देखो ।
उसीदम, होगी मुहब्बत करो जब अदलतुम ॥

हकीम अबु फज़ल—अय वालीये हिन्द

(पद)

मबाश दरपै आज़ार हरचे खाही कुन ॥
केदर शरीयते मा गैर अज़ीं गुनाहे नेस्त ॥
दिल बदस्त आवर के हज्जे अकबर अस्त ॥
कर हज़ारां काबे यक दिल खुदतर अस्त ॥

हकीम अबुलफतह—अय आलीजहां बाद शाहे

(पद)

खुदा रेहम करता नही उस शहा पर ॥
नहो रेहम इन्साफ जिसके जिगर पर ॥ खु०
बे अदली सेआफत् पडे किस बशर पर ॥
पडे गम का साया उसी बादशाह पर ॥ खु०
करो मेहर बानी तुम अहले ज़मीं पर ॥
खुदा मेहर बां होगा अरशे बरीं पर ॥ खु०

दि० टोडरमल—अये, खुदावन्द न्यामत,

(पद)

॥ अये शाह अदल सबका करिये ॥
जितने प्राणी हैंगे खुदाके, सबोंके दुखको हरीये ॥ अ ॥
अदल कमाकर नौशेर वांका, भवसागरसे तरीये ॥अ॥
इस दुनिया में कोऊ नही अपना, इसको चितमें धरीये ।
पक्ष करोन राई किसी का, खोफ खुदा से डरीये ॥अ॥

राजा कोकल ताश—अय हिन्द पती,

(पद)

जो तुम अदलसे करो बादशाही ॥
परजा भी रहेगी सिरको झुकाई ॥ जो०
पक्ष करो न किसी काभी राई ॥
कायम रहेगी सदा बादशाई ॥ जो०
हट धर्मीको त्यागोगे जो तुम ॥
रहो गे अमन से सदाई ॥ जो०
रा० देवचन्द—अये हमारे बादशाह

(राग भैरवी)

शाह जो रक्खना चाहो बादशाही । रक्खना चाहो बाद-शाही ॥ श० एक नजरसे सबको देखो । जितनी हैगी खुदाई । पक्षकरो न किसी मजबका । हिंदू मुसलमां ईसाई॥श० रस्मे करें सब अपनी अपनी ।इसकी देओ तुम रीहाई ॥श० सेवक सत्य बताया आपको। मिटे सबफूट लड़ाई ॥ श० ॥

अकबर—खुश होकर

(राग होली)

करुं अल्लाका शुक्र अदाई । जिसने ये मजलिस बनाई ॥ ॥ करुं ॥ मैं इस मजलिस के सदके जाऊं । जो चाहती है मेरी भलाई ॥ सलाह जो दी है बजा मैं लावूं । हैगी है अच्छी बताई ॥रहेगी सदा बादशाई॥ करुं० ॥ करुं मैं दुर हिन्दकी खराबी । है जिस्से होत तबाई । हटावूं उस रस्म को जिल्दी ॥ होती है जिससे लड़ाइ । रहे है हलचल सदाई ॥ करुं० ॥ मिटा दूं सबके दिलका किना । आइ-ना सा करदूं सफाई ॥ मिल झुलकर सब रहें खुशीसे । हिंदु मुसल्मां ईसाई । बनादुं सेवक भाई भाई ॥ करुं० ॥

अये हमारे वजीर, दिवान, सरदारो, आजकी दरबार अब बर खास्त करता हुं । कल आपकी सलाहके मुताबिक हिन्दाकी तबाई

दूर करनेकी तजवीज करुंगा। इतना कह तख्तसे उतरकर महलको जाते हैं। और दरबारी लोग भी सब अपने २ घरको जाते हैं.

अंक २ परदा. ७

स्थान दिल्ली नगरमें एक कबर.

बहुत से मुसलमान फकीर कबरके पास बैठे हैं और शहरके मुसलमान कबरकी ज्यारत कर फकीरोंको शरीनी बांटकर चले जातेहैं, परीक्षक भोडन फकीरो के पास जा बैठता है

(कल्लु मियांका प्रवेश)

कल्लु मियां—कबरकी ज्यारत कर फकीरोंको शरीनी बांटता हुआ, परक्षिक के पास आकर लीजीये सांइ साहब.

परीक्षक—हम काफरोंकी शरीनी नही लेते हैं

कल्लु—हजरत मैं काफर नही हुं मुसल्मान हुं

परीक्षक—तुम काफर के नौकर होकि नही?

कल्लु—जनाब मैं तो बादशाह का नौकर हुं

परीक्षक—अरे बेअकल हमभी जानतेहैं कि तु बादशाह का नौकर है, तो क्या तू बादशाहको दीनदार समझता है. अगर वह दीनदार होता तो क्या? काफरोंको बडी २ जगह देता। और हमने यहभी सुनाहै कि वह कल यह हुकम देने वालाहै, कि कोई किसी के मज़हबी रस्मो में दस्त अन्दाज़ी न करे, तो क्या अब हम लोग काफरों को काफरी रस्मे अदाकरते देखेंगे। क्या? ऐसे होने, से अपने दीनकी बेइजती नही होगी। ऐसा हुक्म जारी करने वाला और उसके निमक खारों को हमतो काफर ही समझतेहैं.

कल्लु—आपका कहना बजाहै। लेकिन कोई ऐसी तजवीज़ बताईये कि जिस्से बादशाह ऐसा हुक्म जारीही न करने पावे, और इसलामकी तर्फ रुजु हो जावे,

परीक्षक—कोई बादशाही दरबारमें अगर बेखौफ दीनदार मुसल्मान हो तो उस्से मिलकर एक एसा तूफान उठाओ कि जिस्से

बादशाहको यह डर हो जाय, कि काफरोंकी तर्फ दारीसे मुसल्मान तख्तसे उतार देंगे बस इसके सिवाय और कोई भी तजवीज बादशाहको राह रास्त पर लाने की नही है

कल्लु—ठीक हैं। मैं एसा ही करुंगा, आप शरीनी लीजीये

परीक्षक—जाओ पहले बादशाहको दीन पर लाओ फिर हम तुम्हारी शरीनी लिया करेंगे.

कल्लु—(मन ही मन में) यह फकीर इसलाम का कैसा हम दर्दी है अच्छा जैसी आपकी मर्जी। यह कहकर घरको जाताहै॥ और रस्ते में कुछ सोचकर ठीकहै घरमें पीछे चलूं पहले मौलांना अबदुलकादर जनूनीको मिलकर फकीर वाली बात कहते जायें. क्यों कि दरबारमें एक पक्का मुसल्मान वह है। अगर वह इस बारे में खडा होगया तो सब काम बनजायगा, यह सोचकर खुशी २ गाता हुआ मौलानांके घरको जाताहै.

(राग)

हुआ शाह काफर दीन से नाफर मज़ा चखावूं झटा पटी।
मज़ा चखावूं झटापटी॥
राज खूआवूं धूर मिलावूं कराके हिन्दमें खटा पटी॥
हिंदु सतावूं खूब रुलावूं गिरा के मन्दर मठा मठी॥
गऊ कटावूं यवन लडावूं चलाके बीचमें लटा लठी॥
अभी ही जाऊं समझाऊं मुल्लां करावे झटही खटा खटी॥
तमाशा देखूं शाह को पेखूं करे है वह क्या झटा पटी॥
न कल्लू कहाउं मल्लु कहाऊं कराऊं जो न कटा कटी॥
सारे नगर को उल्लू बनाऊं कराके दंगा झटा पटी॥

अंक २ परदा ८

स्थान नानबाईकी दुकान

मौलाना अबदुल कादर जनूनी खाना खारहे हैं

कल्लू—खोजता हुआ नानबाईकी दुकान पर जाताहै और मौलांना साहेबको खाना खाते देखकर, मौलांना साहेब, असलामालेकम

मौलाना—वालेकम सलाम, कहो कहां तशरीफ ले जातेहो

कल्लू—आपहीको खोजता फिरताहुं

मौलाना—किस सबबसे हमारी खोज करतेहैं

कल्लू—बैठकर, देखो! जनाब बादशाह रोज बरोज काफरोंके तर्फदार होतेजाते हैं. और उनकी खातर अब कुछ ऐसा हुक्म जारी करने वाला है कि कोई किसीके मजहब में दखल नदेतो कहिये हम लोग काफरोंकी रस्मे अदा करते देखेंगे? कलको वह मसजिदों के पास शंख बजावेंगे और गोकुशी कोभी रोकेंगे, - कहीये इसमें इसलामकी बेइज्जति न होगी,

मौलाना—देखो हम तुमको एक सलाह बतातेहैं यदि वह तुम करो तो फिर बादशा ऐसा हुक्म हरगिज न जारीकरे सुनो? कल मियां रमजान के लडकेका अकिकह*है, रमजानसे तुम जाकर कहोकि वह कल बकरेके बदले गायकी कुरबानीकरे, देखो एसा करनेसे हिन्दु चिडकर रोकेंगें। सबब इसका यह है कि रमजानके घरके सामने हिन्दुओंका एक मन्दर है, इसे जब हिन्दु रोकने लगें तबतुम बेवकुफ मुसलमानोको भडकादेना, और वह हिन्दूओंसे लडजायेंगे, जब हिन्दु बादशाहके पास फरयादी जावेंगे तब हम बादशाहको कुछ ऐसा समझा देंगे, जिस्से डरकर फिर नया हुक्म जारी करने का कभी नाम ही न लेगा

कल्लु—(खुश होकर)वल्लाह। आपने क्या उमदा सलाह बताई है? लो मैं अभी ही जाकर रमजानको यह बात समझा ताहुं

मौलाना—अजी खानातो नोश कर जाईये

कल्लु—जनाब पहले अल्ला व रसुलका काकर मलूं, तो फिर खाना खाऊंगा। यह कहकर जल्दी २ रमजानके घरको जाताहै.

---

*जब बालक पैदा हुयेको सात दिन हो जाते हैं तब जो मुसलमान कुरबानी करते हैं उसको अकीकह कहते हैं

अंक २ परदा ९

स्थान मियां रमजानका मकान

मियां रमजान और उसका बाप, बेटा,
स्त्री, चारों जने बैठे एकही मट्टीकी थारीमें खाना खारहे हैं

कल्लू—(रमजानके मकान पर पहुंच, दरवाजेपर खडाहोकर) अजी मियां रमजान होत, रमजान होत, पुकरता है

रमज़ान—(.कल्लूकी आवाज सुनकर) अजी कोन हो

कल्लू—अबे कल्लू

रमज़ान— (दिललगीसे) अजी, ऊल्लू बादशाहकी दरवारमें रहतेहैं, यहां कोई ऊल्लू नही है

कल्लू—अबे साले, दरवाज़ा खोलता है या नही

रमज़ान—अजी साले तुम्हारी यहां नही है सफेद बाजार में होगी

कल्लू—अबे दिल लगी मतकर दरवाज़ा खोल एक ज़रुरी काम है

रमज़ान—खानेसे उठकर दरवाज़ा खोलता है और कल्लूका हाथ पकडकर भीतर लेजाता है और रमज़ानका बाप अहमद कल्लुको देखकर, अजी मींया आइये खाना खाइये

कल्लु—आजी आपही नोश फरमाईये, न तकलीफ उठाईये

रमज़ान—(कल्लूको पास बैठाकर)कहीये इस वक्त कैसे आना हुआ

कल्लू—अजी मियां देखो? बादशाह रोज़बरोज़ हिन्दुओकी तर्फ होता जाता है। और वह अब ऐसा हुक्म जारी करनेवाला है जिससे इसलामकी बडीही बेईज़ती होगी, इसलिये उस हुक्मके बन्द करने के लिये मौलांना साहबने यह फरमाया है कि तुम कल बकरेके बदले में गायकी कुरबानी करना

रमज़ान—मौलांना साहबका यह हुक्म मैं कल सर चशम से बजा लाऊंगा.

कल्लु—शाबाश भाई जान शाबाश, बस तो मैं येही कहनेको आयाथा अब जाताहुं, (यह कह कर अपने घरको जाता है)

रमज़ान-(अपने आपसे,) जनाब अब्बाजान, मैंने कल्लुसे गऊकी कुरबानी के लिये कह तो दिया है, लेकिन गऊ तो हमारे पास है ही नहीं और इसवक्त रात ज्यादा होगई है. खरीदभी नहीं सकते कहिये अब क्या करें.

अहमद-बेटा तुम इसवक्त अगर गोपाल चौबे के मकान पर जाओ तो जरुरही गऊ हाथ लग जाये, क्योंकि उसके यहां खैरात (दान) में बहुतसी गऊ आती हैं और उसका लडका स्वार्थी चौबे जबसे उसका बाप गोपाल चौबे मरगयाहै. वह गऊएं कस्साईवगैरः के हाथ बेच देताहै.

रमज़ान-वहतो मेरा बडा ही दोस्तहै. मैं अभी उसके पास जाताहुं-(यह कह कर गोपाल चौबेके मकानपर जाता है)

अंक २ परदा १०

स्थान गोपाल चौबेका मकान

गोपाल चौबेका लडका स्वार्थी अपनी मा ज्ञानदेवीको गालीयां दे रहाहै

स्वार्थी-रांड रुपया देती है या नहीं.

ज्ञानदेवी-अरे नपूते मैं रुपया कहांसे लाऊं तेरी करनीसे तो यजमान भी छुटते जाते हैं. और तुने भीतो घरमें एक पैसा नहीं रहने दिया, जो मैं निकालके देदूं,

रमज़ान-(दरवाजे पर पहुंचकर) अजी चौबेजी महराज हात.

स्वार्थी-(रमज़ानकी आवाज सुनकर) अजी कोन हो.

रमज़ान-अजी दोस्त रमज़ान

स्वार्थी-(दरवाजा खोल बाहर आकर रमज़ानसे) कहो दोस्त इसवक्त क्योंकर आना हुआ,

रमज़ान-दोस्त इसवक्त हमको एक गऊकी जरुरतहै इसलिये तुम्हारे पास आयाहुं

स्वार्थी—एक नही दो ली जीये.

रमज़ान—नही जनाब इस समय तो एकही की ज़रूरत है.

स्वार्थी--आप खडे रहीये मैं अभी लाताहुं (यह कह अन्दर जा गऊ का रस्सा खुंटेसे खोलकर गऊ को बाहर ले चलता है)

ज्ञानदेवी--(गऊ लेजाते देख)अरे नपूते गऊ को कहां ले जाता है.

स्वार्थी--(क्रोधसे) चुप रह. रांड नही तो सिरमें आगलगा दूंगा.

ज्ञानदेवी--(झट ऊठ, हाथ पकड कर) अरे नपूते, बहुत गऊयें तैंने बेची हैं, इसको तो छोड दे, अरे गोविक्रय करना बडाही पाप है, (एसा समझाती है.)

स्वार्थी—(तू नही छोडेगी एसा कह) हाथ मरोडकर गिरा देता है और गऊको बाहर ले जाता है

ज्ञानदेवी—(गीरी हुई उठआह सर्द! भरकर) हे गऊ माता मेरा इसमें कुछ दोष नही है!हे ईश्वर यदिमें उस वक्त मर जाती तो यह दुष्ट काहे को उत्पन्न होता.

रमज़ान—(गऊको देखकर,) कहीये इसका क्या दाम है.

स्वार्थी—जो तुमारी मर्ज़ी हो सो दीजीये, कोनसा बडा व्यपार है जिसका हम दाम बोलें.

रमज़ान—(मनही मनमें) यह इस वक्त रुपयसे तंग है जो दूंगा सो ही लेलेगा, क्यों कि शराबी, कबाबी, रंडीबाज, जुवारी, रुपये की तंगीके वक्त एकका, चार आनाभी ले लेते हैं(यह सोचकर उपरके मनसे) नही २ आप दाम कहिये तब हम लेंगे.

स्वार्थी—भाई जान दाम तो इसका १५, रु० है, लेकिन आपसे १०, रु० ही ले लेंगे.

रमज़ान—नही जनाब हमको तो हलके दाम की चाहिये.

स्वार्थी—तुम कहो तो सही तुम क्या दोगे.

रमज़ान—हमको तो ५, रु० की चाहिये.

स्वार्थी—(मन ही मनमें) शायद अगर दो तीन दिनमें भी न बिकी

और आज फिरभी प्यारी मीरजानके पास न जा सका तो वह आगे ही खफा है और भी खफा हो जायेगी। और अगर खाली हाथ जाऊं तो शामत आ जायेगी। जो देता है सोई इससे लेकर मीरजानके पास जाना चाहीये (यह सोचकर रमज़ानसे) अच्छा तुम दोस्त हो इस लिये तुमसे हम ८, रु०ही ले लेंगे.

रमज़ान—आपकी हम पर बडी अनायत है, मगर दोस्त हमारे पास इस वक्त तो ५,रु०ही हैं अगर आप५,रु०से दे सक ते हैं, तो दीजीये, वरना आपका अखत्यार है. (यह कहकर अपने घरको रवाना होताहै.)

स्वार्थी—हाथ पकडकर अजीमियां २, रु० फिर दे देना.

रमज़ान—उधारकी बात बुरी होती है, यह हम नही करते हैं अगर आपको५,रु० पर गऊ देनी हो (कमर से५,रु० निकालकर) यह लो ५, रु० और गऊ हमारे हवाले करो.

स्वार्थी—(रमज़ानके हाथसे रुपयां छीनकर) लो तुम क्या कहोगे कि एक दोस्तके पास एक अदनीसी चीज़के वास्ते गयेथे और उसने हमसे कुछभी मोरवत न की,(गऊ का रस्सा रमजानको देकर)ले जावो.

रमज़ान—गऊ का रस्सा ले गऊको आगे कर अपने घरको रवाना हो जाता है। और स्वार्थी रुपया खडकाता गाता हुआ मीरजान रंडीके घरको जाता है.

(राग)

इस रुपयेसे आज फिर मज़ा उडाऊंगा।
दारू कबाब माशूक साथ जाके खाऊंगा ॥ इस० ॥

॥ दोहा ॥

या संसार असारमें पांच वस्तू हैं सार।
जुआ चोरी मांस मद नारी संगविहार ॥
रक्खके रुपैया चण पै सिरको झुकाऊं गा।
प्यारी की खफगी सारी आज जा मिटाऊंगा॥इस०॥

॥ दोहा ॥

तुलसी या संसारमें कोन भयो है समर्थ ।
इक कंचन औ कुचन पै किन न पसारो हथ ॥
प्यारी की खातर सारा तन धन गवाऊंगा ।
छोडूंगा पिछा तबही जब मरही जाऊंगा ॥ इस० ॥

—०-००<>००-०—
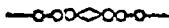
अंक २ परदा ११

स्थान—रंडीका मकान.

रंडी खिडकीमें बैठी हुई बजारमें आते जाते मनुष्यों की तर्फ देख रही है, स्वार्थी रंडीके पास जा कर रुपया पैरके पास रखकर मीरजानको सलाम कहके बैठ जाता है.

मीरजान—सलामका उत्तर न देकर पैरके पाससे रुपया उठा, स्वार्थीकी तर्फ देखकर क्रोधसे, क्यों वे भडुऐ के जने उस रोज़से आज शकल दिखाई! खैर? हमारी चीज़ बनवा लाया है.

स्वार्थी—गिड गिडाकर, आज मुआफ कीजीये कल आपकी चीज़ जरुरही बनवा लाऊंगा.

रंडी—(क्रोधसे स्वार्थीके मुंहपर थपड मारकर) जा फिर मां के पास कलही आईयो.

स्वार्थी—(हाथ जोडकर) गंगा की कसम कल ज़रुरही बनवा लाऊंगा.

रंडी—मियां नथे खां तबलचीको पुकारती है.

मियां नथेखां—(आवाज़ सुन, कोठरीसे बाहर आकर) क्या है बीबी जान क्या है.

रंडी—(स्वार्थीकी तर्फ इशारा करके) इस बेईमान नामाकूल हरामज़ादे कुत्तेके पिल्ले मांके खसमको कान पकडकर यहां से बाहेर निकाल दो.

स्वार्थी—हाथ जोडकर—:

(राग० नमाने मेरी बाततू)

मुझे गरीब जानके, नदीजे प्यारी गारीयां । मुझे०

मैं हुं आशक ज़ार जानी। जाऊं हुं बलिहारियां॥ मुझे०
हुआ हुं घायल खाके, तेरे नैनोकी कटारियां॥
वसल का मरहम लगा, न डार मरचां वारियां॥ मुझे०
ज़ातो ज़रे शर्म खोई, खांई जुती त्यारीयां॥
इतने पै भी सेवकसे करे न वफादारियां॥ मुझे०

रंडी-(क्रोधसे ऊठ, स्वार्थी चौबेको लात मारकर)-मांके खस्म तु जाता है या मैं पुलिस को बुलाऊं (हाथ पकड कर)-

(राग-हाय मां कैसे धरुं मैं धीर)

जा नही तो नालिश करुंगी पुलिसमे।
नालिश करुंगी पुलिसमें॥ जा०॥
तेंने मेरा कंगन चुराया बकस में॥ जा०॥
कंगन चुराया अंगुटी चुराई, जोबन चुराया मुफतमें॥ जा।
मियां नथेखां बुला पुलिसको।
पकड ले जाये कोरटमें॥ जा०॥

मि० नथेखां-अबे साले जाताहै के नही (गरदनमें हाथ देकर मकानसे नीचे उतार देताहै)

स्वार्थी-रंडीके मकानसे नीचे उतरकर

रंडीका यार सदा खोआर, टाटका बिछोना जुतीयोंकीमार॥
एसा कहता हुआ अपने घरको चला जाता है।
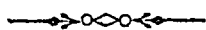
अंक २ परदा १२

स्थान-यमुनाजीका तट,

यमुनाजी के तटपर कुछ मुसलमान गऊको स्नान करा गलेमें फुंलोके हार डाल शहरकी तर्फ लेजाते हैं

शिवदत्त-(कुटीयामेंसे) गऊको स्नान कराये, फुलोंसे सजाये हुए मुसल्मानोको (ले जाते देख कुटीयासे बाहरनिकल एक मुसल्मानके पास जा कर) क्यों! मियां साहेब आपके यहांभी गऊका पूजन

करना लिखा है. जो आप लोग गऊको ऐसा शृंगार (सजा) करके ले जातेहो.

कल्लु—हम लोग जानवर का पूजन नही करतेहैं, यह बेवकुफी हिन्दुओं में ही है जो अल्लातआलाको छोड कर पत्थर, मट्टी, दरखत, जानवर, वगैरः को पूजते हैं

शिवदत—तुम मुसलमानोको इतनी बुद्धि नहीं है। और न हम एक पलमें पूजने का कारण समझा सकतेहैं, तुम इस समय यह बताओ, कि जब तुमलोग गऊ नहीं पूजते हो, तो फिर तुम लोगने गऊका एसा क्यों शृंगार किया है.

कल्लु—गऊके सज़ानेका सबब यह है कि आज हमारे (रमजान की तर्फ ईशाराकरके) इस दोस्त के लडके का* "अकीकह" है इसलिये गऊको सजाकर खुदाकी राह पर कुरबानी करने के लिये, लिये जातेहैं

शिवदत—कुरबानीका नाम सुनतेही बेसुध हो कर ज़मिन पर गिर पडताहै

कल्लु—और सबके सब मुसलमान—शिवदतको गिरते देखकर हस पडतेहैं, और गऊको धीरे २ शहरकी तर्फ ले जातेहैं

शिवदत—होश आनेपर और गऊको वहां न देख कर इश्वरसे

(राग मरहठी, आगे कुले शशीकले)

हे प्रभु जगन्निवास विश्वपालका ॥
गोपी, गोप, गोस, गोकूलात रक्षका ॥
चरणी, शरणी, लीन ह्मणुनी दास तारका ॥
धाव, धाव, धाव, धाव ।
असुर मारका धर्म तारका ॥ हे प्रभु० ॥
त्राही पाही नाही तुझा वीण आसरा ।
जीवी जला वीण मीण धेनु वासरा ॥

विघ्न, वछुनी, दीन ह्मणुनीं ये करा त्वरा ॥
धाव–धाव–धाव–धाव ।
असुर मारका धर्म तारका ॥ हे प्रभु० ॥

उठकर रोता हुआ (हाय मां दुष्ट तुझे कहां ले गये) शहरकी तर्फ मुसल्मानोके पीछे२जाता है, और शहरके हिन्दु जो इस्सी रस्तेसे यमुना स्नानको जाते थे उनको ठेर२कर गो गुहार सुनाता जाताहै.

(राग० गुरु जगसे मैं मनको उठाया)

गऊ मरती है नाहक विचारी, कोई बचानेकी करता नही त्यारी ॥गऊ०॥ जो पहले थे हिन्दु यहांपर, गऊकी रक्षामें रहतेथे तत्पर ॥ गऊको रक्खते थे जांसे प्यारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ राम कृष्णने गऊको बचाया । लाखोंही राक्षस दलको खपाया ॥ किया नाम अपना गोपाल जारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ सूर्यवंशी दलीप इकराजा । राज्य गो सेवा हित त्याजा ॥ कैसा पाया फल उसने भारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ अर्जुन गोहित्त ही वन लीना । चौदा वर्ष गृह त्याग दीना ॥ कैसा गऊका भयो हितकारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ गोहित पृथीराज देह दीनी । नाही ममता कछुभी कीनी ॥ कैसा भयो वह गो उपकारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ रक्षा करते सदा हिन्दु आये । गऊ पै दृष्टि बुरी जो लाये ॥ उनके लेते थे प्राण निकारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ अब क्यों नही खबर तुम लेते । क्या हिन्दु नही सब हो जेते ॥ धिक धिक हैगी तुमरी मैंहतारी । गऊ मरती है नाहक विचारी ॥ हाय! किसको अब मैं पुकारुं । कोई सुनता नही लाचारुं ॥

सेवक अपने ही दे प्राण वारी ॥ गऊ मरती है नाहक विचारी ॥

हिन्दु शिवदतकी गो गुहार पुकार खडे होकर सुनते हैं ! परंतु सुनकर चुपके यमुनाजीकी तर्फ चले जाते हैं।और शिवदत भी शहरकी तर्फ चला जाता है। कुछ दूर वहुतसे आदमी एकठे खडे हुये देख कर (मनही मनमें) हो न हो गऊ यही पर है। ऐसा जान, दोडकर झुंडमें; पहुंचजाता है, और गऊको वहां खडी देख, मुसल्मानोंके आगे हाथ जोडकर

(पद)

छोड दो छोड दो गऊ को भाई ॥
मुझसे गोदुःख सहा ना जाई ॥ छो० ॥
जो मांगो सो दूं मैं लाई ।
तन मन धनसे हुं तो सहाई ॥ छो० ॥

रमजान—क्रोधसे

(पद)

अबे कोन तु शैतान, कोई जिन्न आदम हेवान ॥अबे०॥
लेके भाग अपनी जान, नही थपड़ दूंगा तान ॥
जा यहांसे, जा यहांसे, भाग, भाग, भाग ॥
नही तो तेरी भी लुंगा जान ॥ अबे० ॥

शिवदत्त—निम्रतासे

(पद)

नही डरता हुं मरने सेभाई।चाहे काटदो राई राई॥छो०॥
सेवक करता नही प्रभुताई।हांथजोड कहे छोडो गाई॥छो०॥

कल्लू—(क्रोधसे) अबे साले तू यहांसे नहीं जायेगा। गरदनमें हाथ देकर झुंडसे बाहर निकाल देता है

अंक २ परदा १२

स्थान माधोदासकी बगीचा.

दालानमें कुछ हिन्दु बैठे हुए बातें करते हैं

सेठ गोकुलदास—भाईयो आज मुसलमान यह नई बात करने लगे हैं, इसका कुछ प्रबन्ध करना चाहीये

से० गोपालदास—मुसलमान कोनसी नेई बात करने लगे हैं

से० मोहनलाल—आपको खबर नही है

से० गोपालदास—नही भाई हमको कुछभी खबर नही है

से० गोवर्द्धनदास—क्या रास्तेमें आपने कोई ब्राह्मणको शहरकी तर्फ रोते हुये जाते नही देखा हैं

से० गोपालदास—कब

से० हरकृष्णदास—अभी थोडीही देर हुई है

से० गोपालदास—किस कारणसे वह रोता हुआ शहरको जाताथा

से० यमुनादास—अजी अभी थोडी ही देरी हुई है, कि मुसल्मान एक गऊको यहांसे स्नान करा फूलमालाओंसे सजाये हुए शहर को लिये जातेथे कि (शिवदतकी कुटी या तर्फ इशारा करके) इस कुटियासे एक ब्राह्मणने बाहर निकल कर पुछा, कि तुमने गऊका ऐसा शृंगार क्यों किया है, क्या तुमभी गऊको पुजते हो। इतनेमें बादशाहके खवास कल्लूने उत्तर दिया, कि हम कुरबानीके वास्ते ले जाते है। बस इतना सुनतेही वह ब्राह्मण बेहोश हो जमीनपर गिर पडा, और कुछ देरीके बाद होश आनेपर रोता हुआ उनके पीछे२ ही चला गया

से० मगनलाल—मैं अभीही घरसे आता हुं, बहुतसे मुसल्मान सीता रामके बाजारमें महादेवजीके मन्दर के पास खडे हैं और एक ब्राह्मण उनसे " गऊको छोड दो २ " कह रहा है

से० जीवराज—अजी मैं तो अभी वहींसे आता हुं, मुसल्मानोका विचार है कि मन्दरके पासही गऊकी कुरबानी करें,

से० गोपालदास—मुझको इस बारेकी कुछभी खबर नही है. कारण यह है कि मैं आज प्रातःकालसे ही से० लक्ष्मीदासजीके संग निगम बोतपर स्नान करनेको गया था और आप जानतेही हैं कि चाहे मैं कहीं स्नान करुं, पर यहां आये बिना नही रहता । उनको घरमें पहुंचा कर फिर यहां आया हुं

गोकुलदास—अच्छा अब यह बताईये कि इसके बारेमें क्या तजवीज़ करनी चाहिये

गोपालदास—मेरी समझ में तो यह बात आती है, कि सेठ लक्ष्मीदासजीसे इस बारेमें राय लेनी चाहिये, क्यों कि अपनेमें तो वोही बडे भी हैं और तिसपर समझदार भी हैं जैसे वे कहें वैसा करना चाहिये

सबके सब—आपका कहना ठीक है, तो चलो उनके पास चलें
(सबकेसब सेठ लक्ष्मीदासके मकानपर जाते हैं)
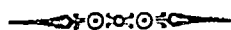
अंक २ परदा १४

स्थान सेठ लक्ष्मीदासका मकान.

सेठ साहब मये अपने बाल बच्चोंके बैठे हैं.

[गोपालदास आदि सेठोंका प्रवेश]

से० लक्ष्मीदास—सबको आते देखकर, आईये आईये सबोंका हाथ पकड कर अपने पास बैठाते हैं

सबकेसब—जै गोपाल, जै श्रीकृष्ण, जोवार, जै राम, इत्यादि कहते हुये बैठ जाते हैं

से०लक्ष्मीदास—कहिये आपलोग आनन्द में तो हैं

गोपालदास—हम लोग सब आनन्दमेंहैं, मगर आज शहरमें बडा अनर्थ होनेवाला है, इस लिये आपके पास आये हैं जो आप बताये सो किया जावे

से० लक्ष्मीदास—शहरमें क्या अनर्थ होने वाला है

गोपालदास—आज सीतारामके बाजारमें महादेवजीके मन्दिरके पास यवन गोवध करने वाले हैं

से०लक्ष्मीदास—तो आप लोग इस विषयमें क्या करना चाहते हैं

सबकेसब—हमलोग येही चाहते हैं कि वहां गोवध न होने पावे

लक्ष्मीदास—भाईयो? राज्य मुसलमानोका है इसलिये वह प्रबल होकर ऐसा काम करते हैं और देखो जब बडे२राजा राजपूत चुप हैं, तो तुम लोग बनीये हो फिर तुम क्या कर सकते हो। हां! यदि तुम मेरी समझके मुताबिक चलो तो मैं बताऊं, आगे तुम्हारी मरजी जो चाहो सो करो.

सबकेसब—रायही लेनेके लियेही तो आपके पास आये हैं, आप जो बताइयेगा सो हम करेंगे

से० लक्ष्मीदास—मेरी राय तो यह है कि प्रथम उनको किसी के द्वारा समझाओ, यदि न समझें तो गऊका दाम देकर गऊ लेलो, यदि फिरभी न माने तो बादशहा के पास चले चलना हम तुमारे साथ चलेंगे

सबकेसब—ठीक! हम लोग यही चाहते थे, (यह कहकर सीतारामके बाजारको जाते हैं).

अंक २ परदा १९

(स्थान सीतारामका बाजार गोकलदासकी दुकान)

सब सेठ लोग दुकानमें बैठे हैं इनको बैठे देखकर कुछ हिन्दु जो गोवध की खबर सुनकर बाजारमें खडे थे दुकान के सन्मुख खडे हो जाते हैं

शिवदत्त—दूर हिन्दुओंको खडे देख, उनके पास जाकर

[राग०]

भाईयो बचावो धर्मकोरे। त्यागो संसार बखेडारे॥
कैसा अंधेरा छाया हैरे। यवनो उत्तपात मचायोरे॥भाई॥
करने लगे वध गायरे। बाजारके बीच आयेरे॥
नही यह खोफ खायेंरे। बडा अनर्थ चलायोरे॥ भाई०॥
करो कोई यत्न भ्रातारे। जैसे बचे गऊ मातारे॥

नही तो धर्म है जातारे। कलंकी तुम पै आयेगोरे॥भाई०॥
गऊही धर्मकी जढ हैरे। बतावे इसको वेद हैरे॥
फिर क्यों नही बचावोरे। क्या हिंदु नही कहलावोरे॥भा॥
कृष्ण सदा तुमारे रे। थे गऊकी विपत टारें रे॥
सन्मुख यवन हैं मारेरें। खडे हो तुम नैहारोरे॥ भा०॥
इक दिनतो मरही जानारे। वृथा क्यों धर्म गवानारे॥
बेहतर है सीस कटानारे। पर अधर्मी न हो जावो रे॥भा०॥
नही देर लगावो धावोरे। गऊका दुख छुडावोरे॥
सेवक धरम कमावोरे। हिन्दुके पूत कहावोरे॥भाई०॥

गोपालदास—देवताजी हमलोग गोरक्षाके लिये तन मन धन से तैयार हैं, परन्तु एकबार आप उनको जाकर ये समझाईये, कि जो कुछ तुम कहो हम गऊका दाम दे दें। और अगर दाम न लेना चाहे, तो गऊके बदलेमें हम से चाहे मसजिद चाहे खानकाह बन वालें, हम सब तराह से हाजर हैं

शिवदत—बहुत अच्छा मैं फिर जाकर उनको समझाता हुं यदि वह मान जायें। (यह कहकर फिर यवनके झुंडमें जाता है)
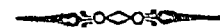
अंक २ परदा १६

(स्थान सीतारामका बाजार)

मन्दरके पास बहुतसे मुसलमान खडे हैं

शिवदत—यवनोंके झुंडमें जा, रमजानका हाथ पकडकर

(राग० भैरवी)

गऊको छोडदे मियां रमजान।
कर मुझपै एहसान॥ गऊ०॥
गऊका कष्ट मुझसे अरे देखा नही जाता है।
करताहुं तुमसे इल्तजा कहनामान॥ गऊ०॥
अगर चाहेये कुछ तो [illegible] तन मन धनसे।
कहता हुं तुझको वार वार ठीक है। [illegible] गऊ०॥

तुझको कुरवानीके लिये अगर चाहे जो एक जान ।
तो हाजर है सेवक वदलेमें कर कुरवान ॥ गऊ० ॥

रमज़ान—क्रोधसे

(राग)

सुनरे काफिर नामा कूल वेईमान पलीद ।
गैयाको कुरवान करेंगे आज हमारी ईद ॥
जा चले जा भाग यहांसे कहना मेरा मान ।
नही अवीही साथ गऊके तेरी लेगें जान ॥

शिवदत—क्रोधसे

(राग)

ऐसी न वातें निकालो, जुवां अपनी तुम सम्भालो ॥ऐ.॥
करताहुं विन्ती पै विन्ती मगर तुम उलटाही चालो ॥ऐ.॥
गऊके हि दूध और अन्नसे तुमने ये वदन है पालो ।
फिर क्या विगाडा है गऊने मुझे तुम ये तो वनालो॥ऐ.॥
है वादशाही तुमारी इससे तुम चाहे सतालो ।
पै विना छुडाये न जाये सेवक चाहे मारही डालो ॥ऐ.॥

परीक्षक—(रमजान और कल्लूसे) अजी मियां अवल इस कम वख्तको मुसलमान वनालो, तो फिर कुरवानी करना, ऐसे यह कम्वख्त कभीभी कुरवानी नही करने देगा

कल्लु—(रमजानसे) अजी तुम रातका वचा हुआ गऊका गोश्त लाकर इस पाजीके मुहं में दो, विना ऐसे किये यह नही मानेगा

रमज़ान—तुम इसको पकडो मैं अभी गोश्त लाता हुं (यह कहकर घरमें गोश्त लेनेको जाता है। और कल्लु और दो तीन मुसल्मान मिलकर शिवदतको लिपट जाते हैं)

शिवदत—मुसलमानोंके फंदेमें फंसा हुआ हिंदुओंको पुकारता है

(राग कालिंगडा)

छुडावेगा कोई [illegible] सितम गारोंसें ॥ छुडावे०
— [illegible] ब्राह्मण, फंसे हैं विपत में दोनो ॥

वचावेगा कोई हमको इन्न नाविकारोंसे ॥ छुडावे०
गऊको हैं वध करते गोश्त मुहं मेरे धरते ॥
करते हैं मुसल्मां मुझे यह बलात कारसे ॥ छुडावे०

अंक २ परदा १७

स्थान चांदनी चौकका चौरस्ता

कानसिंघ खडा हुआ एक मनुष्यसे वातें करताहै

भवानीचन्द्र—घुमता हुआ चांदनी चौक में आताहै और कानसिंघको खडे देख पास जाकर, ठाकुर साहब आज शहरमें वडा अनर्थ होनेवाला है

कानसिंघ—क्या अनर्थ होनेवाल है

भवानीचन्द्र—मैने सुनाहै कि सीतारामके वाजार में मन्दरके पास आज यवन गोवध करने वाले हैं और, वहां वहुतसे हिन्दु यवनोंको समझा रहे हैं कि यह काम यहां मत करो, मेरे आनेवाद नहीं मालुम क्या हुआहै, देखये उधरही जा रहे हैं

कानसिंघ—अरे भाई ! यवन कभी वनीये वकालोंके समझाने से समझेंगे, चलो हम समझा कर दिखाते हैं । यह कह भवानीचन्द्रका हाथपकड यवनोंके झुंडकी तर्फ जाताहै.

अंक २ परदा १८

स्थान सी॰रा॰ का॰ वाजार यवनोका झुंड

यवन गऊ और हरदतको घेरे हुये खडे हैं और परीक्षक फकीरके भेसमें कल्लुसे वातें कर रहा है

परीक्षक—अजीमियां कल्लूखां इस कमवख्तकी मुशके वांध दो नही तो यह भाग जायगा, या कोई रांगड छुडा कर लेजायगा

कल्लु—अजी देखो मैं इस पाजीका अभी वन्दोवस्त कर देताहुं (हरदतको पकडे हुये मुसल्मानोसे) देखो मिया नवीवखश, पीर मुहम्मद, हुसेनखां, जरा जोरसे पकडे रहना, मैं इसकी मूशकें

बांधताहुं, यह कह सिरसे पगडी उतार कर मुश्कें बांध देताहै और शिवदत के मुंहपर तमाचा मारकर गाली देताहै

शिवदत—तमाचा और गाली खाकर—ईश्वरसे

(राग हे प्रभू जगत निवास)

भगतकी सदाही रक्षा तुमने है करी ॥ पुकारुं विपत में फंसा श्रवण करो हरी ॥ सिवाय तुमारे कोई रक्षक नही है इसघरी ॥ गोपाल, गोपाल, गोपाल, गोपाल, ॥ अर्ज है मेरी वचावो आ हरी ॥ भगत०
निंद्रा तजो जागो करो रक्षा आ हरी ॥ द्विज गोपाल हो दयाल दुष्टों के अरी ॥ वचावो प्राण नाथ विपत सेवक पै परी ॥ गोपाल, गोपाल, गोपाल, गोपाल, ॥ अर्ज है मेरी वचावो आ हरी ॥ भगत०

कल्लु—अरे साले तेरे हरी में कुछ ताकत होती तो अभी तक क्यों नही वचालीया अगर तू खैर चाहे तो कलमा पढ, वरना थोडी ही देरमें देख तरी बुरी हालत होगी

(कानसिंघ और भवानीचंद्रका प्रवेश)

कानसिंघ—शिवदतकी ऐसी दशादेख, कल्लुका हाथ पकडकर क्रोधसे

(राग नाटकी)

वस खवरदार करताहुं तुझको । तु नही अभी जानताहै मुझको ॥ अभी करताहुं तुझको नेस्त नाबुद । नरक्खुं दुनियामें तेरा वजुद ॥ फिर ना करे कोई एसा कभी । वासले जहन्नुम हो तु अभी ॥

यह कहता हुआ मियानसे तलवार निकाल ऐसी मारताहै, दि कल्लुका सिर शरीरसे जुदा हो जमीनपर तरवूजकी तरह गिर पडताहै

भवानीचन्द्र—कानसिंघको कल्लुका सिर काटते देख, झट अपनी तलवार निकाल गऊका रस्सा काट गऊको भगा देता है

मुसलमान—काननसिंघ और चतुरसिंघको तलवारसे कल्लूका सिर गऊका रस्सा काटते देख, जान बचाकर इधर उधर भाग ते हैं.

काननसिंघ—भवानी चंद्रसे चतुरसिंघ हम खडे हैं किसीको पास आने न देंगे तुम ब्रह्मचारीजीकी झटपट मुशकें खोल डालो.

चतुरसिंघ—बहुत अच्छाकह-शिवदतकी झटपट मुशकें खोल देता है.

काननसिंघ—शिवदतकी मुशकें खुली देखकर, (चतुरसिंघसे) तुम इनका हाथ पकडलो इनको हिन्दुओंके झुंडमें पहुंचा दें.

चतुरसिंघ—शिवदतका हाथ पकडकर हिन्दुओंके झुंडको ले चलता है और काननसिंघ तलवार हिलाता हुआ पीछे २ चलता है और शिवदतको हिन्दुओंके झुंडमें पहुंचा दोनो अपने स्थानको चल देते हैं, काननसिंघ और चतुरसिंघके चले जाने बाद फिर मुसलमान कल्लूके सिरकेपास एकठे हो आपुसमें बातचीत करते हैं

हुसेनखां—(नबीबखशसे)देखोमियां बिचारेकी नाहक जान गई

नबीबखश—हां यार बडा ही गजब हुआ! भला यह लडके कोन थे

परीक्षक—अजी किसरांगडके लडके थे

पीरमुहम्द—पैहरावा तो मुसलमानो का था

(रमज़ान का प्रवेश)

रमज़ान—गोशत लेकर आता है और कल्लूका सिर कटा देखकर! अरे यह क्या हुआ, कल्कूका सिर किसीने काट गिराया, मैने तो रस्तेमें यह सुनाथा कि किसी लडकेने बामनका सिर काट डाल है यह तो कल्लूका सिर है, रो कर हाय मेरे दोस्त यह तेरी हालत किस कम्बख्तने की अगर है मिलजाये तो उसकाखून पी जाऊं

अहमद—अरे बेटा क्या कहुं नही मालूम दो कम्बख्त लडके कहांसे आये उन्होंनें आते ही कल्लू बेचारेका सिर काट गिराया गऊको भगाया और बामनको हिन्दुओंके झुड़में पहुंचाया

रमज़ान—क्या गऊकोभी उन्होनें भगा दिया

अहमद-हां बेटा

रमज़ान-या इलाही यह क्या गज़ब किया, कि जान माल दोनो खुवा दिया। अरे नामाकूल हरामज़ादो लडको अगर तुम दोनो मुझको मिल जाओ तो खुदाकी कस्म तुम्हारी बोटी २ कर डालूं (रोकर) हय दोस्त कल्लू हमारी खातर तेरी यह हालत हुई

अहमद-अरे बेटा अब रोनेसे क्या होता है, अब क्या करना है सो कहो

परीक्षक-अजी अब तो सिवाय काफरों से बदला लेनेके और कुछ करना मुनासब नहीं है

अहमद-काफरोंसें कैसे बदला लोगे

परीक्षक-अजी ऐसे बदला लो

(राग)

टुक लपट, झपट, कर मारो काटो ! मारो काटो जी ॥
लो लपक झपककर लुटो लाटो। लुटो लाटो जी ॥
बस खोज खोजकर मन्दर फूंको। फूंको फांको जी ॥
मत देर लगावू जावो जावो। धावो जावो जी ॥ टु०

रमज़ान-हजरत आपका कहना दरुस्त है, ऐसेही काफरोंसे बदला लेना चाहीये (यवनोको पुकारकर) अयं दीन इसलामके रोशन करनेवालो नबीके प्यारो अगर तुम्हारे रगोंमें अपने बजूरगोका एक कतराभी खून है और अगर कलामकाल्लापर जरा भी यकी नरक्खते हो तो यारो चलो अपने दीन, भाईका बदला काफिरोंसे लें

(राग)

मारो, मारो, मारो, मारो, काटो, काटो,
काटो, काटो, लुटो, लुटो, लुटो, लुठो, कौमे
काफिराना। बिगाडो, बिगाडो, बिगाडो,
बिगाडो, जल्दीसे इनका धर्म ईमान ॥ मा ॥

रमज़ानके इतना कहतेही मुसलमान दीन२ पुकार तेहिन्दुओंपर

टूट पडते हैं और दोनो तर्फसे लाठी सोंटा ईंट पत्थर चलने लग जात हैं

अंक३ परदा. १

स्थान बादशाहका प्राईवेट कमरा

बादशाह और बीरबल शैहजादा सलसीमके बारेमें बातें कर रहे हैं

(गऊका प्रवेश)

गऊ—यवन झुंडसे भागकर बादशाही महलके नीचे आ घंटके खम्बेसे पीठ रगडती है और अकस्मात गऊका सींग घंटको लग जाता है. उस्से वह बज जाता है

बादशहा—(घंटेकी आवाज़ सुनकर बीरबलसे) राजा साहब घंटा बजाने वाले फरयादी को उपरही बुलालो

बीरबल—ऊठकर झरोखेसे नीचे देखता है कि एक गाय घंटेसे पीठ रगडरही है, यह देखकर बादशाहसे, अय खुदावन्द फरयाद करनेवाला कोई आदमी नही है, घंटा ऐसेही बजा है। बीरबलके इतना कहतेही फिर घंटा बजा.

बादशाह—फिर घंटेकी आवाज़ सुनकर-बिरबलसे (देखोतो अब किसने घंटा बजाया है,

बीरबल—फिर झरोखेके पास जाकर झुरोखेसें नीचे देखता है कि वही गऊ पीठ रगडरही है, यह देख बादशाहके पास जाकर जहां पनाह फिरयादी कोई आदमी नही है, हवाके चलनेसे घंटा बजा होगा, बीरबलके इतना कहतेहीं तीसरेबार फीर कुछ जोरसे घंटा बजता है

बादशाह—तीसरीबार कुछ जोरसे घंटेकी आवाज सुनकर (मनही मनमें) आज तकभी अपनेआप या हवाके चलनेसे घंटा नही बजा, और बीरबल कहता है कि कोई आदमी नहीहै, आदमी तो जरूर होहै।मगर क्या सबब है कि जो बीरबल नही बताताहै, शायद कोई बीरबलकाही सताया फ़रयादी आया हो, और बीरबल उसको

अपना दुशमन जानकर हमको न बताता हो, लेकिन विरवलसे फिर पूछना चाहिये। इतनेमें फिर और जोरसे घंटा बजता है। चौथीवार फिर घंटेकी आवाज़ सुनकर बादशाह तनी क्रोधसे। राजा साहब तुम अच्छी तरह नही देखते हो कि यह कोन वडी २ घंटा बजाता है, क्योंकि विना आदमीके बजाये कभी अपने आप और हवासे घंटा नही बजासकता है अगर हवासे या अपने आपही घंटा बजता है, तो आजसे पहले कभी क्यों नही बजा, आजही क्यों बजता है, तुम ज़रा ठीक २ देखकर बताओ कि यह कोन आदमी बजाता है

वीरवल—फिर जाकर झरोखेसें देखता है कि वही गाय घंटेके पास खडी है (गऊको घंटेकेपास खडी देख कुछ मनही मनमें विचार कर बादशाहसे) क़िबले जहां! घंटा बजाने वाली अर्जीदार एक आम्मां (अमंगल से दूर करनेवाली माता) है उसके उपर वहुत सितम हुआ करता है, इस सववसे वह हरदम चशमो (अंखो) से पानी वहाती है, हुक्म होतो मैं अभी नीचे जाकर उस्से घंटा बजानेका हाल दरयाफ्त कर आऊं,

बादशाह—तुम! नीचे जाकर उसे उपर ले आओ, हमखुद उस्से घंट बजानेका हाल पूछ लेगें, कि उसपर क्या सितम गुजरा है, जिसके सववसे आकर घंटा बजाया है

वीरवल—जहांपनाह आप इस झरोखेसे ही अपनी नेक नज़रसे उस अम्मांका मुलाहज़ा (देखलें) करलें, क्योंकि वह आपकी व जुर्गीके सववसे महलपर नहीं आ सकती है

बादशाह—खैर! अगर वह यहां नही आ सकती है तो हम उसको झरोखे से ही देख लेंगे. तुम नीचे जाकर उसका हाल ठीक २ दरयाफ्त कर आओ,

वीरवल—(वहुत अच्छा खुदावन्द कहकर नीचे जाता है).

बादशाह—(मनही मनमें) पहले तो कितनी वार घंटा बजनेपर

बताताही नही था जब जराही गुस्सेसे पूंछा तों बताता है कि एक अम्मां है। यह माजरा कुछ समझमें नहीं आया, कि यह क्या कहेगया है। खैर? इस झरोखेसे देखें तो सही यह क्या माजरा है। (यह सोच) उठकर झरोखेसे घंटेकी तरफ देखते हैं कि एक लाल रंगकी गाय घंटेके पास खडी झरोखेकी तरफ देख रही है और। उसके आंखोंसे टप२पानी बहे रहा है, बदनपर कुछ मारके निशान भी पडे हुये हैं(बादशाह) गऊकी ऐसी हालत देखकर!(मनही मनमें) खुदा की कैसी कुदरत है कि एक जानवर को उसने इतनी समझ दीहै कि जबतक हमने नही देखाथा तबतक कई बार घंटा बजाया और जब हम इसको देखनेको आये तो यह हमारी तर्फ देखकर आंखोंसे पानी बहातीहै, वाह! खुदाकी कुदरत खुदाही जाने मगर अब यह देखना चाहिये कि बीरबल इसके पास जाकर क्या करता है, लेकिन पीछे हटकर देखना चाहिये ताके वहयह न समझे कि बादशाह देख रहे हैं, यह सोच, जरा पीछे हटकर झरोखेंसे बीरबलका हाल देखते हैं

बीरबल-(गऊके पास ऐसे जाता है जैसे कोई यथार्थही बादशाह की तर्फसे फरयादीके पास हाल दरयाफ्ज करने जाता है। बीरबल गऊके पास पहुंचकर गऊके कानपर अपना मुंह लगा देता है, (मानो कोई बात कह रहा है) और गऊभी स्वभाविक रीतीसे धीरे धीरे सिर हिलाती जाती है, (मानो बात सुनकर ठीक है ठीक है कह रही है) फिर बीरबल अपना कान गऊके मुंहपर लगा देता है और धीरे २ सिर हिलाता जाता है (मानो गऊकी बात सुनर ठीकहै २ कहहा है) फिर दूसरीबार बीरबल आपना मुंह गऊके कानमें दो मिन्ट तक लगा फिर महल उपर बादशाहके पास जाता है (मानो कुछ कानमें कहकर जाता है)

बादशाह-यह सब हाल देख, बीरबलको कमरेमें आते समझ

झट अपने आसनपर बैठ कर कोई काम देखने लग जाते हैं (मानो बीरबल और गऊ देखाही नहीं है)

बीरवल—(ऊपर आ बादशाहको अदाव बजाकर) अपने आसन-पर बैठ जाता है

वादशाह—राजा साहब—अम्मांका हाल दरयाफ्त कर आये

बीरवल—जी हां ! जहां पनाह

बादशाह—अम्मां क्या कहती है

बीरवल—जहां पनाह—अम्मां यह कहती है

(राग)

आईहुं द्वार तोरे इन्साफ दीजीये ॥ आई०
हमहैं दीन पशुशाह, सुनअर्ज़ लीजीये ॥ आई०
सुनाहै मैने आप सबकी सुन्ते हैं फरयाद ॥
करतीहुं आ फरयाद, मेरा न्याये कीजीये ॥ आई०
हिन्दुके राज्यमें कोई मारे न है हमे ।
माने है मां समानवे, यह निश्चे कीजीये ॥ आई०
पहले तो हमे यवनभी, मारें न थे कभी ।
आके ये हिन्दोस्तानमें, खीजे क्यों समझीये ॥ आई०
अबतक तो हमने इनका, बिगाडा नाहि कुछ
मारें यह किस लीये, येही तो पुछ लीजीये ॥ आई०
बनबन से चरके अतीहुं, खाना ना मांगती ॥
माताके सम प्यातीहुं, इने शीर शीरींये ॥ आई०
नेकीका बदला क्या है, गरदन का काटना ।
माने जो यह धरम हैं, उसे क्याही समझीये ॥ आई०
मरती हैं बेकसूर, कोई छुडाता है नहीं ।
नही करता कोई न्याय, फिर कैसे जीजी ये ॥ आई०
सिवा तेरे अब कोई, रक्षक नहीं दीखता ।
करती हुं इलतजा, मेरी दाद दीजीये ॥ आई०

अम्मांने जो वताया, सेवकने आ कहा
मर्जी जो हो हजुरकी, वह आप कीजीये ॥ आई०

वादशाह–(हंसकर) खैर, इस समय तो तुम अम्मांको वहांसे हमारी गोशालमें भेजवा दो, कल दरवारमें इसकी फरयाद सुनी जावेगी

वीरवल–(खूंखारासिंघ जमादारको पुकारकर) जमादार घंटेके पास जो गऊ खडी है उसको सरकारी गोशालेमें बंधवा आओ

खूंखारासिंघ–(जो अज्ञा, कहकर) गऊको गोशालामें ले जाता है

वादशाह–(वीरवलसे) राजा साहव चलो ज़रा वग़ीचेमें चलें

वीरवल–(वहुत अच्छा कह–उठकर वादशाहसे) चलिये खुदावन्द दोनो वगीचेको जाते हैं

अंक ३ परदा २.

स्थान कोतवाली

कोतवाल कायमअली मये अपने नायब, जमादार
और १०×१२ सिपाइयोंके वैटा हुआ है।
(तालवखां सीपाईका प्रवेश)

तालवखां सिपाही–सलामकरके–हजुर सीतारामके वाजारमें हिन्दु मुसल्मानोमें एक गऊके सववसे वडाभारी हुलड हुव्वी है

कोतवाल–(मनही मनमें) खुश होकर अवतो खूव हाथ गरम होगा (नायव असगरखांसे) नायवसाहव, तुम जल्दी कुछ सिपाहीयोंको लेकर नाकेपर जाओं (नायवके कानमें) मुसलमानो-को मत पकडना क्यों कि एक तो वह अपने दीन भाई हैं, दुसरे! दुसरे उनसे कुछ हाथ भी गर्म नहीं होगा हां? वादशाहके दिखलानेके लिये ८–१० गरीव मुंसल्मोनोको पकडलेना जिन्हें देखकर वादशाह छोड दे इसलिये अछे हिन्दुओंको पकडना वाजिव है, क्यों कि उनसे आपना हाथ खूव गरम होगा

नायव–ठीक कहकर, सिपाहीयोंको संग ले हिन्दुओंको पकडनेके

लिये जाता है, और हुलडके लोग नायव कोतवालको आते देख-कर, इधर उधर भागते हैं

नायव—भागते हुओंको छोड वडे २ हिन्दुओंको-और कुछ गरीव मुसलमानोको पकडकर कोतवालीको ले जाता है.

अंक ३ परदा २

स्थान कोतवालीमें कोतवाल साहव बैठे हैं.

(नायव असगरखांका प्रवेश)

नायव—कोतवालसे हजुर, वदमाश हुल्लडखोरोंको पकड लाया हुं

कोतवाल—हमारे सामने लेआ ओ

नायव—सबको कोतवालके सामने हाजर करता है.

कोतवाल—वडे २ हिन्दुरईसोंको देखकर, क्यों साहवो हुल्लड करना आप लोगोको मुनासव था

हिं० रईस—जनाव हम लोगोनें हुल्लड नहीं किया, हमलोग तो हुल्लड न हो ऐसा यत्न कर रहे थे, कि इतनेमें, मुसलमान दीन २ पुकरते हमपर टुट पडे

रमजान—हजुर, इनसे पुछीये कि वादशाहके खवास कल्लूका सिर किसने काट दिया है

कोतवाल—कल्लूके सिर कटनेका हाल सुनकर, वस अव इन लोगोंका वचना मुशिकल है. (नायवसे तुम जल्द जाकर जखमीयों और कल्लूकी लाशको उठवा लाओ.)

नायव—(वहुतअच्छा कहकर) जाता है, और कोतवाल इनपर सख्त पहरा वैठा जमादार वरकत अलीको संगले अपने कमरेमें जाता है और कमरेमें वैठकर (वरकतअलीसे) जमादार तुम इनसे कुछ वसूल करो.

जमादार—(वहुत अच्छा कह.), रईसोंके पास जाकर, देखोजी तुमने वडाही गजव किया है कि जो वादशाहके खवासको मार डाली, कहिये अव आपलोग कैसे वचेंगे। हां ! अगर तुम

मेरी बात मानो तो मैं कोतवालसाहबको समझाकर तुम सबको बचा दूं

गोपालदास–भाई तुम अपनी बात कहो तुमक्या कहतेहो

जमादार–हमारी बात यह है कि तुम लोग कुछ कोतवाल साहबको नजर कर दो, बस फिर तुम सबके सब साफ छुट जाओगे

गोपालदास–तुम जो कहोसो नजरकरें

जमादार–एक एक हजारसे कमतो कोतवालसाहब राजी न होगे

गोपालदास–(आपस में सलाह कर जमादारसे) देखो हम लोग नौ आदमी हैं पांच हजार देंगे,

जमादार–अच्छा में पूछकर कहताहुं अगर वह मान जायेतो, यह कह । कोतवाल सावके पास जाकर, हजुर, वह पांच हजार देनेको कहते हैं.

कोतवाल–ठीक, जाओ उनसे मंगे लो

जमादार–(रईसोंकेपास जाकर)भाईयो बडे मुशकलोंसे उनको राजी किया है, लेकिन कुछ मुझपरभी महरबानी करनी चाहिये

गोपालदास–१०० रु० आपकोभी मिल जायेगा

जमादार–तो मंगा दीजीये, और फिर आपलोग आपने२घरको जाईये

सेठ–अपने २ घरसे रुपया मंगा देते हैं

(नायब कल्लूकी लाश लेकर आता है)

नायब–हजुर--लाश हाजर है, मुलाहजाकर लीजीये

कोतवाल–लाशको देखकर (सेठोंसे) तुम लोगोंने बडाही गजब किया है। खैर! बादशाहके सामने हम आप लोगोंकी सिफारश करके छुडवा देंगे

गोपालदास–आपसमें देखो इसका लुच्चापन, रुपयाभी ले लीया और फिरभी बादशाहके सन्मुख ले जाता है

अंक ३ परदा ४

स्थान बादशाही बाग

बादशाह मये बीरबल और चार पांच मुसाहबोंके बैठे हैं

(भवानी चन्द्रका योगनके भेषमें प्रवेश)

जोगन—बादशाहके सन्मुख आकर आलेख कहती है

बादशाह—जोगनको देखकर धीरे (बीरबलसे) राजासाहब देखो यह योगन कैसी हसीन, नाज़नीन है, गोया बहिश्तकी परी है

बीरबल—बेशक ! जहां पनाह है

बादशाह--(जोगनसे) आप कहांसे तशरीफ लाई हैं

जोगन । मैं राजपूताने का सेर करती हुई यहां आपके दीदारके लिये आई हुं,

बादशाह । आपने हमपर बडी अनायत की है, मगर आपके यहां आनेका क्या सबब है

जोगन । आपके नौरत्नसभाकी चरचा सारे हिन्दुस्थानमें फैल रही है,कि जबसे बादशाहेने नवरत्नसभा कायमकी है तबसे बडा हा न्याय होता है, यह सुनकर मुझेभी आपकी नवरत्नसभाके देखनेकी अभीलाषा हुई, उसके देखने के लिय यहां आई हुं.

बादशाह । आप उस नौरत्नसभाको कल सुभा तशरीफ लाकर देखलीजीयेगा । लेकिन यह तो बतायें कि आप कुछ गातीभी हैं

जोगन । जी हां ! कुछ थोडा सा गाना जानती हुं,

बादशाह । तो हमकोभी कुछ अपनी जुबान मुबारकसे सुना दीजीये

जोगन—(बहुत अच्छा कह) बीना ठीककरके गाती है

(राग)

राज हिल मिल रुम झुम करोजी । राज हिल मिल रुम झुम करोजी ॥ देखना भालना रैयत, खैरैयत का शाह शाहजी ॥ राज० दी धरती पै बरती परबर दिगरा ने शहन् शाह जी ॥ राज० चोरके जोरसे डाकूके शौरसे, अमन दमन रखो जानी । न्याय बि-

चारसे रहो आचारसे तडक धड़क जावदानी ॥ फ़-
रकत फितरत से बचो लल्ला, राज पाट तुमे बखशा
आल्ला ॥ राज०

बादशाह–(बीरबलसे) देखो राजा साहब इनका कैसा कोयल सरीखा गला है, लुतफ तो यह है कि गानेका गाना, और नसीहत की नसीहत? वाह क्या कहना है

बीरबल–बेशक, शाह जहां, फकीरोंके गानेमेंभी नसीहत ही भरी रहती है

बादशाह–(जोगनसे) कुछ औरभी अपने गानेसे सर अफ-राज़ किजीये

जोगन–(बहुत अच्छा, जहांपनाह) कहकर गाती है

(गजल)

सुधारो तुम हिन्द को, चट पट इसमें देर मत
लगावो । तअसुब मजहबी दूर करके, जल्द अदल
पै आवो ॥ सुधा ॥ बखशा है जिसनें तुमे को यह,
रुतवाऐ आली । करके जावो अदल उसके निकट,
मुहं फिर साफ दिखावो ॥ सु० सवपै सम नज़र
रखके, तुम अदल कमावो । जायें जहन्नुम में सवी
मज़हब, तुम इन्साफ चलावो ॥ सु० वादशाहका
इन्साफ , करना ही मज़हब है । इस इन्साफ पाक
मज़हब को, तुम दुनिया में फैलावो ॥ सु० सेवक
खुदाकी कसम, मैं आईहुं इसी लीये । मेरी इस नसी
हतको जल्द, तुम अपने दिल में बैठावो ॥ सुधा० ॥

बादशाह–हम आपकी इस नसीहतको सर बचशमोसे बजा लावेंगे लेकिन आप कल जरुर दरबारमें दीदार दीजीयेगा, यह कहकर बादशाह महलको जाताहै ।और जोगनभी अपने मकामको जाती है

अंक ३ परदा ५

स्थान मुल्लां अबदुल कादर जनूनीका मकान

मुल्लां साहब बैठे हुये कुछ सोचरहे हैं

परीक्षक—हुल्लडसे भागकर—मुल्लांनासाहबके मकानपर जाता है और दरवाजेपर खडा होकर—मुल्लांनासाहबको पुकारता है

मुल्लांनासाहब—(आवाज, सुनकर) अजी कोनहो साहब

परीक्षक—बाहर तशरीफला कर देखली जीये कोन हैं

मुल्लांना—(मनही मनमें) देखूं तो सही यह ऐसा कहनेवाला कौन है (यह सोचकर) बाहर आता है और परीक्षकको फकीर जानकर सलाम करता है

परीक्षक—खुदावन्द करीम हर बलासे बचावे

मुल्लांना—आपका आना मेरेपास किस सबबसे हुआ है

परीक्षक—अजी मुल्लांनासाहब सीता रामके बाजारमें बडा गजब होगया है

मुल्लांना—क्या गजब हुआ है

परीक्षक—रमजान गऊकी कुरबानी करने लगाथा, इतनेमें हिन्दु आ गये और कल्लूका सिर काटकर भाग गये

मुल्लांना—(घबरा कर) क्या हिंदुओने कल्लूका सिर काट दिया और भाग गये

परीक्षक—जी ! हां ! साहब—

मुल्लांना—क्या पुलिसने हिन्दओं को नहीं पकडा

परीक्षक—पकड लिया है, कल उनको कोतवाल साहब बादशाहके पास पैश करेंगे, लेकिन आपने कोई ऐसी तजवीज करना कि जिसे बादशाह उनको छोड न दे, क्यों बादशाह इस समय काफरोंके तरफदार बना हुआ है

मुल्लांना—इन्शाअल्ला तआला जहांतक मुझसे बन सकैगा, काफरोंको सजा दलवानेमें कसर न करूंगा और अगर बादशाह उनकी तरफदारी करेगा तो तुफान खडा कर दूंगा

(राग० भैरवीका परमटा)

मैने कैसी यह आग लगादी है। मैने कैसी यह आग लगादी है ॥ हिन्दु यवनकी फूट कराके, कैसी ये हालत बनादी है ॥ मैं० जुता लाटी चलवाके मैने, कैसी लढाई करवादी है ॥ मैने० तलवार चलती तो मैं खुश होंवा, तोभी गरदन कटवादी है ॥ मैने० हिन्दुकी चोटी यवनकी दाडी, दोनोंकी मैं नुचवादी है ॥ मैने० ॥ मन्दर तुडाये यवनको कहके, हिन्दुसे मसजिद गिरावादी है ॥ मैने ॥ पकडाय हिन्दु पुलिसमें मैने, रिशवतभी इनसे दिलवादी है ॥मैने॥ लेजायेगा कुतवाल शाहके आगे, यह मुल्लां को घात बतादी है ॥ मैने० ॥

अंक ३ परदा ६

स्थान अकवर वादशाहका दरवार

वजीर दीवान सरदार लोग बैठे हैं, और योगन परीक्षकभी बैठे हैं, और एक कोनेमें कानसिंघ चुपके खडा है

(बादशाह का प्रवेश)

बादशाह—दरबारमें आ, खुदाकी तारीफ कर तख्तपर बैटता है,

(राग० गजल)

खुदाया यह बन्दा गुनाहगारहै। खडा रूबरू यह सजा वार है ॥ खु० कर मुआफ मेरे तू सारे गुनाह। तेरे बिन नही कोई बख्शन हार है ॥ खु० तेरा नाम है गा रहमाने रहीम। रहम करना सब पै तेरा कार है ॥ खु० चरिन्दे फरिश्ते इन्सानो हैवान। तू मखलूक सारी का करतार है ॥खु० फनाह होने वाला यह सारा जहान्। रहेगा नूर तेरा निराकार है ॥खु०॥ है सेवककी तुझसे ये ही इल्तजा। हटा कार मेरा जो बदकार है ॥ खु०

मैने इनसे यह प्रार्थना की कि तुम इसको मारोमत, जो कुछ इसका लेनाहो सो मैं मांगकर ला देताहुं यह कहता हुआ मैं इसके मकानतक गया तब इस (रमजानकी तर्फ इशारा करके) ने कहाकी तुझको और इनको सरे बाजार मारेंगे, फिर इसने कल्लूसे कहा कि तुम इस काफरको पकडो मैं रातका जुठा मांस लाकर इसके मुंहमें देताहुं, इतना कहकर यह घरमें गया और कल्लुने मुझे पकड लिया और दो तीन मनुष्योंने मिलकर मुझे जमीनपर गिरादिया। इतनेमें नहीमालूम दो छोकडे कहांसे आगये वह मुझे कल्लु से छुडाकर एक हिन्दुकी दुकानपर जहां कुछ हिन्दु खडे बैठेथे पहुंचा दिया। फिर नही मालूम वह छोकडे कहां चलेगये, उनके जाने बाद यह दीन २ करते हुये हिन्दुओंपर टूट पडे। इसमें यदि मेरा कोई अपराध हो तो आप मुझे दण्ड दीजिये

बादशाह–(रमजानसे) रमजान गऊ कहां गई

रमजान–खुदावन्द गऊको कोई हिन्दु भगाकर लेगया,

बादशाह–(बीरबल) वह कलवाली गऊको यहां मंगवालो

बीरबल–बहुत अच्छा जहांपनाह, अभी मंगवा देता हुं ऐसा कहकर, गोशालाके (दारोगासे) दारोगासाहब जाओ कलवाली गऊको यहां ले आओ

दारोगा–बहुत अच्छा साहब ! कहकर गो शालामें जा गऊको ले आता है। और गऊ दरबारमें आ दोनो कान जोड सिर झुकाकर खडी हो जाती है.

बादशाह–(रमजानसे) क्योंरे येही तेरी गऊ है

रमजान–गऊको देखकर, जी हां ! जहांपनाह सलामत, ये ही मेरी गऊ है । यह कह गऊकी तर्फ जाता है

जोगन–उठ उठ, रमजानका हाथ पकडकर, पीछे हट गऊकी तर्फ क्यों जाता है, क्या बिना इनसाफ हुयेही तू गऊ ले जायगा (फिर बादशाह की तर्फ मुंह करके)

(राग)

अल्लाने अपनी खलकका तुमे शाह बनाया है। फिरक्यों नही रक्खते सम नजर किसने वेह कायां है॥ अल्ला॥ इन्सान और हेवान में दुःख ऐक साही जान। सुख दुःख में नही फर्क खुदा ने यह जताया है॥ अल्ला॥ इन्सानके आ-रामके लिये हैवान बनाये हैं। बदलमें इनके बदी क्या ऐहसान जताया है॥ अल्ला॥ हैवानो पर रहमान हो नहीं उनकी है जबान। होती अगर जुबान तो क्या नशा खाया है॥अ॥ करते फरयाद आनकर आपके सन्मुख। जो जो सितम इन्सानसे है इन्नेने पाया है॥ अल्ला॥ सताई है किसीने गऊ जो यहां पे आई है। इन्साफके लिये इसने आ घंटा बजाया है॥ अल्ला॥ गऊकी फरयाद की दाददो अये शाह॥ सेवक विचारो अक्लसे क्या दुःख पाया है॥ अल्ला॥

बादशाह-(जोगनसे) आप बतला सकती हैं, कि गऊ क्या फरयाद करती है

जोगन-जी हां! मैं बतला सकती हुं

बादशाह-बतलाईये

जोगन-खडी होकर

(राग काल सुन अपस नम परी रात हुई सितम गरी)

दया करो शहनशाह, हम अनाथ गऊओं के पर।
कैई रोजसे सेहती जुलम, कोई नही लेवे हमारी खबर॥द॥
सुना है आपका इन्साफ, दोडी आई हुं आपके पास।
बजाया आके घंटेको, दाद चाहती हुं ताजवर॥ द०
अल्लाने तुमको शाह किया, मखलूक आपनी सारीका।
उसी मखलूकसे हैं हम, रक्खयो हम पे मेहर नजर॥द०॥
तेरी इस बादशाही में, हम पै होवे बडा सितम॥
फरयाद है फरयाद है, सतावें बेगुनाह बशर॥ द०॥
लिखना नही हम जानती, न बोलना मालूम है।

करें क्यां क्या जुल्मका, गुज़रताहैं हमपै ज़बर ॥द॥
इशारेसें समझती हुं मांमांकर सिर झुकाती हुं
दाद आपनी चाहती हु दीजे इन्साफ शाहे चतुर ॥द०॥
हिन्दु मुसल्मां पारसी, सबको पिलाती हु मैं थना।
अफसोस ये कैसा जुल्म। फिरभी मारें यवन तवर ॥द॥
घास पात खाती हुं, किसेभी नही सताती हुं।
शीरीसा दूध पिलाती हुं, फिरभी कटे हमरा जिगर ॥ द ॥
क्या कसुर हमसे हुई, जो वेगुनाह मारें यवन।
इन्साफ कोई करतानहीं, न आपभी लेते खबर ॥ द ॥
नव रतन सभा हजुर, हमने अहेव गऊका कहा।
बतावो क्या कसुर है, यवन काटें हैं जो सर ॥ द ॥
तअसुबको त्यागके, शाहेस दलादो दाद इस्से।
सिवा तुमरे न होवेगी, सेवक गरीबोंकी क़दर ॥ द ॥

बादशाह—अच्छा इसने कान क्यों खडे किये हैं

नर हर कवी—महाराजा धिराज यह कान खडे करके यह बताती है कि मैंने इन कानोसे यह सुना है

कवित

नेक बखत दिलपाक सखी जवां मर्द शेर नर।
अवल अली खुदाय दियो विस्यार मुलक जर॥
तुम खालस बहू बेश किया खुदा अलवतर॥
बडती बतख् बुलंद तुमे दुनियापर॥
रहीम और साफ तुरगोय, कव नर हर गुफतन चुनी।
अकबर न बरोबर बादशाह, मन दिगर न दीदम दर दुनी॥

और दुसरी बात यह है कि इसके हाथ तो मनुष्योंकी भांतीं है हीनहीं जो यह आपके आगे हाथ जोडकर विन्ती करे, इसलिये हाथकी जगह यह दोनो कान जोडकर अर्ज करती है कि

छपा

अरि हु दन्त तृण धरहिं ताहि मारत न सबल काऊ।

हम सन्तत तृण० चरहिं बैन उच्चरहिं दीन होऊ ॥
मधुर न हिन्दुहि देहिं कटुक तुरके हिं न पिया वाहिं ।
पैजु एक हम जनाहिं पुत्र जग हित मन भावहिं ॥
कहु नर हर सुन शाहवर विनवत गौ जोरे करन ।
कहि कौन चूक मोहि मारियत मुएहु चाम सेवत चरन॥
शिवदत—ठीकहैं, यह कान जोडकर यहही अर्ज करता है

(राग—भैरव, त्रिताल या धनाश्री.)

न्याय करो, सुलतान हमरा, न्याय करो सुल्तान ॥
दीन जनोंके दुःख हरनेको, बनाया तुझे भगवान ॥ हम०
हम तो दीन अनाथ पशु शाह, करें ना किसी की हान ॥
गोरस गोधन देकर हम तो । करें सबका कल्यान ॥ हम०
वनसे चरकर दूध सबीको, पीलाऊ मात समान ॥
कौ अपराध भया है हमसे, यवन करत कुरबान ॥हम॥
नेकीका बदला बदी लिखाहै, क्या इनके फुरकान ॥
कान जोडकर अर्ज करूंहुं, दाद देयो महरबान॥ हम ॥
सिवा तुमरे दुःख किस सुनाऊं, देत न कोई है कान ।
सेवक शाहके शरण परी अब, करे जो आवे ध्यान ॥हम॥
शिवदत—हाथजोडकर

(होली)

गऊ यह देत दुहाई, मौं पे विपत है छाई ॥ गऊ० ॥
वेधकनसे दुख होत हमे नित, बरजो शाहाजी बुलाई ।
बिन अपराध बधें हैं हमोको । यह दुःख सहा नजाई । वेग तुम करो हो उपाई ॥ गऊ ॥ जो कोई खून करे तेहे फांसी, है कानून बादशाई । कटत लगे हमरे नित बासर । पकड-त ना कोऊ जांई । पुलिसमें अंधयारी है छाई ॥ गऊ ॥ स-ब का न्याय करत हो शहनशा । करो न न्याय हमारी ॥
क्या हम तुमरी प्रजा नही हैं । होवे जुलम हमपैं भारी ॥
जायें हम नाहक मारी ॥ गऊ ॥ घास पात बनसे चर

आवें, आके खिलावें दुध मलई। तिसके इवज हमसिरको कटावें। नेकी की क्या ये भलाई। रहा अबकोऊ न न्याई॥हम॥ जननीके सम दुध है मेरो, वैदक लिखा दवाई। वात पित कफआदि रोग सब, तनसे देत मिटाई। पूछो जरा वैधको जाई॥गऊ॥ हम गऊऐ अति दीन शाहजी, उदर भरें तृण खाई। कछु न किसीकी हानी करतहैं। करती हैं सबही भलाई॥तापर भी वधत कस्साई॥ गऊ॥ जो भारतकी चाहो उन्नती, गोरक्षाकी करो हो उपाई। है संसार भार गऊओंपै। देखो दृष्ट चलाई। हैं गऊ सबकी सुखदाई॥ गऊ॥ हमरे वधसे हानीहै तुमको। दिन प्रति दिन अधकाई। क्यों हमरे का वध करत हो प्यारो। सेवक मति गई बौई, क्या तुम नही देत दखाई॥ गऊ॥

(घंटा बजता है)

बादशाह—(घंटेकी आवाज सुनकर चौबदारसे) चौबदार घंटा बजाने वाले फरयादीको यहां बुला लाओ।

चौबदार—(बहुत अच्छा खुदावन्द कह कर घंटा बजाने वाले फरयादीको लेने जाता है) और घंटेके पास बहुत से फरयादीयों को देख, पिछे फिर बादशाह के पास आकर। खुदावन्द घंटेके पास बहुतसे फरयादी खड़े हैं

बादशाह—जाओ सबको यहां ले आओ।

चौबदार—बहार जा कर सबको ले आता है

बादशाह—(फरयादीयोंसे) तुम्हारी क्या फरयाद है

सबकेसब—फरयादी हाथ जोड़कर

(राग० लावणी)

महाराजा धिराज हम आये शरण तेहारी।
देते हैं दुहाई काटो विपत हमारी॥ टेक॥
बादशाह—तुम पै विपत पड़ी क्या आकर एसी भारी।
जो दोडे आये तुम सब शरण हमारी॥
१ फरयादी—सुनो महाराज अब अकाल हुआ है जारी।

२ फ०--अब विना अन्नके प्राण हुये हैं आरी ॥
चौं तर्फ पडी है विप्त हुये हैं भिखारी ॥
३ फ०--है खाने को हमको अन्न नही कुछ जुरता ।
४ फ०--नही रहा है सिरपै टोपी वदन पै कुरता ॥
५ फ०--है कभी ना हांडी में आधा चावल जुरता ।
६ नही साग मिले नही कन्द मूल का भरता ।
सब०--नही जाती है हमसे भूख की पीर सहारी॥महा॥
बादशाह--क्या खेतोंमें नही कुछ अन्न पैदा है होता ।
सब०--महराजा किसान हैं कम खेतको बोता ॥
बादशाह--अभी किसान सब पकरे यहांपै आवें ।
किसान, चौधरी--हम सब हाजर हैं आप हुकम फरमावें॥
हम आपके हुकम के हैं सब आज्ञाकारी ॥-महा ॥
बादशाह--तुम सब खेतों में क्यों नही अन्न उपजाते ।
चौधरी--महाराज हम खेतके लिये खाद नही हैं पाते ॥
और बिना खादके खेत न अन्न उपजाते ।
हम इस्सी सबबसे आये हैं बिललाते
यह आकर हम पै पडी विपत अति भारी ॥ महा ॥
फिर, हलके लिये हम बैल कहांसे लावें ॥
जो मिले दसको था अब पचास को पावें ।
१ किसान--और यह समर्थ नही हम पचास को लावें
२ किस०--हैं इसी बाईस से खेत पडे हैं अघावें ॥
है रात दिवसही घर लडके चिलावें ।
न दुध मिले न अन क्या ही वह खावें ॥
हैं रोती उनकी मायें देखके बिचारी ।
सब--इक गाम बैल बिन हुये हैं हम लाचारी ॥
३ जो मिले बैल तो हम खेती उपजावें ।
४-कि--भला विना बैलेके कैसे हलको चलावें ॥

चौधरी—जिस दिनसे कम हुये हैं बैल यहांपर।
१-किस—तिस दिनसे पडता अकाल हिन्दमें अकसर॥
२-किस—और जो कुछ उपजे उसे वेच हम आते।
३-किस—फिर उसी रुपय से हम महसूल चुकाते॥
सव—जो न चुकावैं तो मार पडत है भारी॥ महा॥

वादशाह—खैर! आज दरवार वरखास्त करते हैं कल इसके वारेमें तजवीज करेंगे—इतना कहकर वादशाह महलको जाते हैं और सबके सव दरवारी और फरयादी भी अपने २ स्थानको जाते हैं

अंक ३ परदा ७

स्थान—वादशाहका प्राविट कमरा

वादशाह अकेले वैठें हुये कुछ सोच रहे हैं

वादशाह—(मनही मनमें) वेशक गोकुशिसे कई तरहके नुकसान होते हैं, और तो वडाही भारी नुकसान देखनेमे आते हैं। एक तो इसके सववसे हमेशा हिन्दु मुसल्मानोका झगडा देखनेमें आता है, और दूसरे खेतीवारी भार वरदा वैगरहका नुकसान देखनेमें आता है। इस्से गोकुशी वन्द कर देनाही मुनासव है। इसके वन्द कर देनेसे मुसल्मानोका किसी तरहाका मजहवी नुकसान नही है, क्यों कि मुसलमानी मजहव कुछ गऊहीकी कुरवानीपर मुनहसर नहीं है, लेकिन हिन्दुओंकाधर्म कर्म फक्त गऊ परही मुनहसर है। याने हिन्दु धर्म और हिन्दमुल्कको गऊसे वडा फायदा है इसीसे हिन्दुओंके वुजर्ग गऊको जानसेभी ज्यादह प्यार करना लिख गये हैं इस्सी सववसे इसकी हिफाजतके वास्ते अपनी जान कुरवान कर डालते हैं। यह कुछ? हिन्दुओंकाही दस्तुर नही है। पर यह दस्तुर हर ऐकका ही है क्यों कि जिसको जिस्से फायदा पहुंचता है वह उसकी हिफाजत और वडाई करता है। जैसे अर्व वालोंको खजुरसे फायदा पहुंचता है इसी लिये हजरत मुहम्मद साहव उसकी*वडी वडाई लिख गये हैं, ऐसेही हिन्दुभी गऊकी वडाई करते

* गोरक्षा प्रकाशमें इसका हाल पढलो

हैं, अगर हम विलातअस्सुबके सोचते हैं तो यहही पाया जाता है कि गोकुशी सिर्फ हिन्दुओंके सतानेके लियेही कि जाती है इसके वन्द करदेनेसे दोनोको वडा फायदा तो होगा कि हिन्दु मुसलमानोका हमेशाका झगडा जाता रहेगा जिस्से सलतनतको कभी जवालकी नौवत न पहुंचेगी और दूसरे हिन्दु इस वातसे एसे खुश हो जायेंगे कि खुशी के मारे मुसल्मानोसे चोली दामनका साथ करलेंगे, (फिर कुछ सोचकर !) ठीक है कल नौरत्न सभा से भी रायलेंगे कि उनकी इस वारे में क्या राये है। यह सोचते २ सोजाते है

अंक ३ परदा ८

स्थान वादशाहका दरवार

सब दरवारी लोग वैठे है

(वादशाहका प्रवेश)

वादशाह—दरवारमें आकर तखतके पास घुटने टेक कर खुदाकी तारीफ करता है

राग

अगर आंख खोलें तुही दर नजर है। अगर कान खोलें तेराही जिकर है ॥ अग॥ तेरीही है कुद्रत हर यक जा पै जाहिर। सनासे तेरे पुर जवानी वशर है ॥ अग॥ तेरे ही हैं मौताज पीरो पैगम्वर। तेरा हुक्म यूं जारी वाकर्रो फर है ॥अग॥ तेरे ही कर्म-पाक परवर दिगार। मददगार सेवका तुही दर हशर ॥ है ॥

(तखतपर वैठकर)

आप हमारे नवरत्नो गऊके वारेमें जो आप लोगोंकी राय हो वह पेश करो.

वीरवल—जहांपनाह

(राग)

साधुसमान् निज, गाय सदाही, साधुसमान् निज गाये ॥

ताल नदी जल पान करत है, घास पातवन खाये,
वनसे आवत मन हरखावत, मां मां कर घर धाये ॥सदा॥
हिन्दु मुसल्मां ईसाई पारसी, मात समान पै प्याये,
दुध दधी घृत देत सबीको, करे न किसी को नाये ॥सदा॥
हलगाडी को सुत यह देती, कैसी है करत सहाये,
मरण उपरान्त पनी पगवनती, दे कर अपनी काये ॥सदा॥
ना, ना भांत कार्य यह करती, है परोपकारी गाये,
सेवक फिर उपकारी गऊको, यवन क्यों मारे ताये ॥ सदा ॥

(राग लावणी)

रा. कोकलताश—शहनशाह सुनीये

जो बने, चाहिते हो शाहा हिन्दहितकारी। गोरक्षाकी आपकरो जल्दसे त्यारी ॥ गऊ वन तृण चरचर सदा तोष मन ल्यावें। स्वादिष्ट सुदा सम मिष्ट सबे पै प्यावें॥ इनके सुत धरणी भार संसारी उठावें, पोषणहित सबके अमित अन्न उपजाव, ताहुपर तुरकन सुरत इसकी है बिसारी। जोवने० ॥ बाल्यावस्थालों इन्हें मात पय प्यावें। भये युवा इधकी बूंद नहीं दरसावें ॥ यह तीनो पनमें सबके बलहि बढावें। आयुपर्यन्त शुखभोग सकल सरसावें ॥ मरने पै पैरोंको देती खाल उतारी ॥ जोवने० ॥

विधि रचिके प्रथम ही इन्हे जगत उपाजयो। पालन हित सबके सकल प्रबंध बतायो ॥ मिष्टान तैल घृत अन्न वस्त्र दधी छीरा। हैं येही उपजाती जगत बीच मीत धीरा ॥ ताहु पर देखो है मारी जात विचारी ॥ जोवने०
हैं ईंजील, कुरान, पुरान, वेदके माहीं। काहु अचार्य ने ऐसा लिखा है नाहीं ॥ जो करे उपकार तुम्हारा उससेभी मारो। जरा अपने अपने मत किताब निहारो ॥ आकर तअस्सुब में यवन छुरी दें मारी ॥ जोवने०
बस येही कारणसे होत हिन्दमें लडाई। जिससे यह भारत

दिन दिन होता तबाही ॥ जो चाहो शाहजी तुम हिन्दकी करनी भलाई। कर देओ बन्द गौ कुशी मिटेगी तबाई ॥ कहता है सेवक यह है विनय हमारी। जोचने चाहते हो शाहा हिन्द हित कारी ॥

राजाटोडरमल—अय हमारे बादशाह,

(राग,कंगनवा मोरा करसें सरक गयेरे)

भारतमें सुखसे राज शहा जो करना चाहोरे, मेटा दो फुट लडाई, जो आपसमें है छाई, जिस्से है हिन्द तबाई, कराके मेल हिन्दु यवन का चेन उडावोरे ॥भारत॥ मैं देताहुं सत्य बताईरे, ना जानो झुट एक राईरे। करो तुरत बन्द बध गाई, सब मिट जाये झुट लडाई, देखो फिर कैसा अनन्द शहा आप पावोरे ॥ भारत०

कहतेथे गैर मलूककेरे, जिन्नत हिन्दोस्तान इक हैरे। था गऊसेही हिन्दोस्तान,बना था निन्नत निशान,मैं सत्य कहा है आपन इसको झुठ जानोरे ॥भारत०

देखो तुम ध्यान लगायेकेरे, कैसी उपकारी गायहै रे,
दधी, माखन, दूध खिलावे, और अन्न धनको उपजावे,
फिर ऐसी शहा उपकारी गऊको क्यों न बचावोरे ॥
ऊपकारी गऊको जानकेरे, इसलिय हिन्दु मानते रे।
उपकारी गऊको बचाना, इन्नने येह धर्म माना।
रक्षाके लिये सेवक अपने प्राणको वारेरे ॥

(राग०जंगल)

गोवधके कैसे बरे हैं कार। करो बन्द इसको शाह जल्दी येही काम बद कार ॥ गोवधके

येही एक भारतको निशदिन, करताहै चकना चुर।
लडाई होत जब इसके कारण, कैसे होवें हैं फतुर,
समझे न दोस्त ओरु ना यार ॥ करोबन्द०

मुफलिसी काभी तो बाइस, येही है बद जात।
हिन्दको भूखा मारे है, है इसमें ऐसे सिफात।
लाखों मरें अन्नसे होके लाचार ॥ करोवन्द०
गायके उपकारसे, सवी हैं वाकिफ कार।
पुत्र इसके हल गाडी खैंचे, चाहें होवें विमार !
पूछो उने जो हैं काश्तकार ॥ करोवन्द०
गऊ सबको तो दुध पिलाके, करती वदनसे प्यार।
फिर ऐसी गऊमातको, यवन नाहक दें मार।
सेवक तुम देखो हो करके विचार ॥ करोवन्द०

परीक्षक—खडा होकर खुदावन्द न्यायमत हिन्दुओंके खुद वेदमें गऊकी कुरवानी लिखीहै, और पिछले जमानेके हिंदुलोग यज्ञमें गऊ की कुरवानी किया करतेथे, इसीलिये उसयज्ञको गोमेध यज्ञ कहा करतेथे, आपही सोचें कि जब हिन्दुओंके वेदमें गऊकी कुरवानी लिखी है और इनके वजुर्ग कुरवानी कियाभी करतेथे, तो फिर अगर मुसल्मान करते हैं, तो यह क्यों चिढतेहैं। मैं सच कहताहुं कि हिन्दु फक्त गौ कुशीका वहाना करके मुसल्मानोको गैर मज़हव और गैर मुल्कके समझकर लडतेहैं

बादशाह—(पंडित जगन्नाथसे) क्यों पंडित जी यह फकीर क्या कहताहै? और हमनेभी कई एक पंडितोंसे गोमेध यज्ञका हाल सुनाहै, कि गोमेध यज्ञमें गऊ मारी जातीथी? क्या यह बात सच है, इसका आप ठीक २ ब्यान कीजीये कि यह क्या बात है

पंडित जगन्नाथ—महाराजाधिराज, इस विषयका तब निरणे हो सकता है कि यदि आप अथवा यह मनुष्य (परीक्षक;) वेदको पढेहुये होता, जब आप और यह दोनो ही वेद नही पढे हैं, तो इसके वारेमें कैसे निरणे होकि वेदोंमें गोवध लिखा है और हमारे वज़ुर्ग गऊको मारतेथे

परीक्षक—चुपकेसे अपने पास बैटे हुई (टकानन्द पंडितके कानमें) पंडितजी अगर आप हिन्दु धर्मसे गोकुशी साबित करदें तो कुरानकी कसम हम आपको एक हजार रुपया दिलायें

टकानन्द–एक हजार रुपये का नाम सुनतेही (परीक्षकके) कानमें हां! हां! हम वेदोंसे गोवध सिद्धकर सकते हैं

परीक्षक–(बादशाह से) खुदावन्द यह टकानन्द पंडितजी कहतेहैं कि वेदोंमें गौकुशी करनेकी आज्ञा है

बादशाह–(टकानन्दसे) क्यों पंडितजी वेदोंमें गोकुशी करना लिखाहै

टकानन्द–हां, महाराज! वेदोंमें गोकुशी यज्ञमें करनी लिखी हैं, इसी कारण से उस यज्ञका नाम गोमेध यज्ञ वेदोंमें लिखाहै

बादशाह–(जगन्नाथ पंडितसे) देखो पंडितजी टकानन्द पंडित क्या कहता है

जगन्नाथ–महाराज? टकानन्द क्यों न कहे, क्यों कि इनको ऐसी ही बातोंसे टका मिलताहै फिर "स्वार्थी दोषो न पश्यति" अर्थात स्वार्थीयोंको झूट बोलनेमें क्या दोषहै

बादशाह–तो क्या यह झूट कहता है

जगन्नथ–महाराज, चूले, चक्की, झाडू, उखली, पानी स्थान, याने इन पांच स्थानोंमें जो अनादृष्ट जीव गृहस्थीयोंसे मरजाते हैं उनके पाप निवृतीके लिये, तो हमरे शास्त्रोंमें नित पञ्च यज्ञ करने लिखें हैं, और जो प्रत्यक्ष जीव हिंसा करेंगे, क्या उनको पाप नही लगेगा। दुसरे बात ये है कि जब वेदोंमें गऊको "अवन्य:" (मारने के योग्य नही है) एसा लिखा है तो फिर क्या उसका वध करना भी लिखेगे। क्या तुमने और धर्म की पुस्तकों की भांति वेदोंकोभी परसपर विरुद्ध वाला पुस्तक समझा है, अजी वेदोंको अंधेरनगरी अनबुझ राजाका कानून न समझये कि जिसमें यह लिखा हो कि अगर कोईअनजानसे चींटी, आदि छोटे जीवभी मारगा तो उसको दण्ड होगा और जो प्रत्यक्ष वडा जीव तिसपरभी उपकारीको मारेगा तो उसको कुछ भीदंड न होगा। एसा ईश्वर वाक्य वेदको न समझाय

टकानन्द–"वेदकी हिंसा हिंसा न भवती" अर्थात वेदोंमें जो यज्ञके बारेमें हिंसा करना लिखा है वह हिंसा नही कहाती है

जगन्नाथ–हिंसा क्यों नही कहाती

टकानन्द– यज्ञ पशु स्वर्गमें चला जाता है इसलिये वह हिंसा नही कहाती है

जगन्नाथ–यदि यज्ञ पशु स्वर्गको जाता है, तो उस पशुके बदलेमें यज्ञ करता अथवा यज्ञ कराता या उसके कटुम्बी यज्ञमें वली दान कर या करा के स्वर्ग में क्यों नही जाते हैं

टकानन्द–क्रोधसे क्या वैदोंमें गोमेध यज्ञ करना नही लिखा है

जगन्नाथ–लिखा है

टकानन्द–तो क्या गोमेध यज्ञमें गऊ नही मारी जाती थी

जगन्नाथ–नही

टकानन्द–तो "गोमेध" शब्दका क्या अर्थ है

जगन्नाथ–गोमेध दो शब्द हैं एक गोशब्द दूसरा मेध शब्द है, गो कहते हैं अन्नको अर्थात जो प्राणीयोंके खानेमें आवे है उसका नाम गो है, देखो गऊका दूध धृत खानेमें आता है, इसालिये धृतका नाम गो है, और मेध कहते हैं पवित्रको, अर्थात पवित्र अन्न जो है गो धृत जिस यज्ञमें वहही अग्निमें डाला जावे उस यज्ञको*गोमेध यज्ञ कहते हैं गऊ मारकर उसके मांसको यज्ञमें नही डालते थे,देखो गोमेध शब्द ऐसा है जैसे रघुवंशमें "मुनी होमधेनु"लिखा है अब यदि कोई "मुनी होमधेनु" का अर्थ गऊके हवनका अर्थात गऊको मारकर उसके मांस हवन करनेका लगावे तो उसको विद्वान क्या कहेंगे!–क्योंकि वशिष्टजीके पास तो एक ही नन्दनी नामक गऊ थी, फिर वसिष्टजी नित्य कहांसे गऊ ला कर हवन करतेथे, केवल मुनी होमधेनुका येही अर्थ है कि वशिष्टजी नित्य नन्दनी गऊके धृतसे हवन करतेथे। पस ऐसेही गोमेधको जानो, कि जिस यज्ञमें केवल गो धृतही हवन होवे उस यज्ञका नाम गोमेध यज्ञ वैदों में लिखा है

---

* गोमेध, अश्वमेध, नरमेध, अजामेध इत्यादि यज्ञोंका हाल मालूम करना हो, तो गोरक्षा प्राकाश नामक पुस्तक गोसेवक प्रेस, मु० दशास्वमेध--काशी जीसे मगां देखीये

वादशाह—(महरजीराना पारसीसे) क्यों साहव तुम्हारे धर्म में कुरवानी के वारे क्या लिखा है

महरजी राना—खडा होकर—

(राग साखी, चाल मरहटी)

गोस्पन्दो जय जय पशु विचारा, थर थर थर थर कंपे ।
कतल स्थलको मारगलेतां, पलभी एक न जंपे ॥
दुःख है वहु भाई, करो तुम तोल मन मांई ॥ १
शूली जैसा संकट इसको, पलमां प्राण हरे है ।
भागे नासे भयसे त्रासे, शाप वहु उच्चरे है ॥
गिरावे नीरहै आखें: अनाचक रंकते सांखे ॥ २ ॥
वहु वहु पशु करे उपकारो, हाड चाम दुध धही देते ।
भार उठाय उपकार करे है, शीत ताप संकट लेते ॥
उपकारी हैं प्राणी, खरे खर गुणकी खाणी ॥ ३ ॥
वहमन अम शास्पन्द है मोटो, जो गोस्पन्द का नाथ ।
कतलके पाप करमोंसे, कंपे है दिन रात ।
विवेकी वात तुमे, विचारो जल्दी या समय ॥ ४ ॥
गोश्त हराम किया खुद मुंहते, पेगम्बर जर थोस्ते ।
दादार होरमज्द के हुकमोंसे, मज़हव रस्ते जोते ॥
कहुं क्या कवीतासे, नहीं कही वात नई कहींसे ॥ ५ ॥
जीवन चार दिननका चटको, माथे मौत भ्रमे है ।
जुल्म करे जो दोज़ख पावे, जहां पीडा हर समे है ॥
खरो खर हित इच्छो, छोडदो मांसको पिच्छो ॥ ६ ॥
जीव सवका इक सम जानो, करो न किसीका घात ।
तेराभी सेवक समय आयेगा, करेगा क्या पंचात ॥
जवाव तव क्या देगा, अल्ला हिसाव जव लेगा ॥ ७ ॥

वादशाह—(पादरी रेदीफनी साहेवसे) क्यों पादरी साहव आपकी कितावमें कुरवानेके वारेमें क्या लिखा है ।

पादरी साहव—खडाहोकर

(राग अंग्रेजी)

आल वेज फर विड्से, वाईविल ने वताई है ।
ऐन्डधी सन आफ गाड निज, मुख फर्माई है ॥ आ०

सी थी चेपटर थर्ड मिका, आयतमें सुनाई है।
चैप्टर एट्थ हुसिया, पशुअन सुखदाई है॥ आ०
डू नाट डिसट्राय फार, मीट गाड्स वर्क।
चैपटर फोरटीन्थ आयत, रोमनमें आई है॥ आ०
ड्रिंकिं दी वाईन, एँड इटिं थी डेड्स लेफ्श।
आपही बतावो यामें, कौनसी भलाई है॥ आ०
फार दोज़ मेन विथ, आफिंस टु ईट इट।
मेक देम वीकेड, आफेन्डेड सदाइ है॥ आ०
फारह्वाट् पर्पजथी, मलटी ट्युड सैक्री फाईस्।
अंटू मी थी लार्ड सेथ, जाकी प्रभुताई है॥ आ०
आई एम फुल आफदी, बरन्ट ऐमूस आफ रिंगस।
फैट वीस्ट टु की, चिक नाई नही भाई है।॥
नेवर आई लाईक थी, बुलाक्स नार गोट्स।
वल्ड् चैप्टर फर्स्ट, आई ज़ाह में गनाई है॥ आ०
वीस्ट मर्डरर वेन, इस्मड दिज़ हैंड्स।
फोर्थ फार भाई प्रेइग, जो फर्ज अदाई है॥ आ०
आई विल हाईड माई, आईज़ फ्राम देम
सेवकने बात शाह बाईबिल, की सुनाई है॥ आ०

बादशाह—(फेजी आदी मुसलमानोंसे) आप लोगभी इस बारेमें अपनी २ राय जो होसो बताईये।

फेज़ी—खडा होकर

(राग अरे लाल देव इस तर्फ जल्द आ)

सुनाताहुं मैं वह जो पुछा हजुर। गुजरता है इस वक्तमें यह अमुर॥ जो इन्सान दुनियामें हैंग गरुर। वह अल्लाकी बखशिशके नही हैं मशकूर॥ बदीमें हैं शामिल नेकीसे मफसरुर। मचाते फिरत वह हैंगे फतूर॥ नही करने लायक वह करते जरूर। जो चाहते हैं दिलमें वह करते मशकूर॥ निकाला नैया हिन्दमें है दस्तुर। नही करने लायक वह करते मगरूर॥ वह गाय कुशीकी रसम है हजुर। कि जिस्से हुआ हिन्द है चूर चूर॥ करो रसम यह जल्दी से शाह

दूर । नही तो गरक हिन्द होगा जरूर ॥ जरा गौरकर आप देखें हजुर । कि है हिन्द गऊ से ही फायेज मंजुर ॥ क्या है तवंगर गनी क्या है हुर । है गऊकी वदौलत हर यक मुंहपे नूर ॥ नही समझत हैं घमडी गरूर । करें शीर शीरीं समुद्रको दूर ॥ येही देख हिन्दु हैं होते मकहुर । तपैं गुस्सेसे जैसे तपता तंदूर ॥ गऊके लिये जान देते मसरूर । मगर गो कुशीके ना हैंगे मशकूर ॥ ये सेवक ने सच कर दिया है मजकुर । जो हो आपकी समझ कीजे हजुर ॥

२ हकीम हमाम—उठकर

(राग)

है फायदे मन्द जानवरों का कटा नहीं अच्छा ।
लिखा कुरां हदीसमें. जर्र पहुंचाना नही अच्छा है ॥
देखो घोडा जाईज़ था, हजरतने ना ज़ाईज किया ।
है यह फायदे मन्द, इसका कटाना नही अच्छा ॥
वैसेही गाय वैल भी, हिन्दको फायदे मन्द हैं ।
फिर इनका यां पै कुरवान, तो कराना नही अच्छा ॥
गोश्त गऊका है मुज़र, दुध करता नही जर्र ।
फिर मुज़र सहत गोश्तका, खिलाना नही अच्छा ॥
काहोल ऐसे फैल पर, जिसमें नहो कुछ सूद ।
घी दुध छोड हाड का तो, चवाना नही अच्छा ॥
अक्सर शरीफो आलम, जो होते हैं मुसल्मान ।
वह समझते हैं किसी कोभी, दुखाना नही अच्छा ॥
जाहिल हठी इस बात में, समझते हैं सवाव ।
कि है गैर दीन वालोंको, सुख पहुंचाना नही अच्छा ॥
पर गोकुशीसे नुकसान तो, सबको हैगा है वडा ।
मगर नही समझते मुरख, है इसका कटाना नही अच्छा ॥
हट धर्मीसे हैंये वहरे, नही समझानेसे समझते ।
है विना आपके सेवक, उनका समझाना नही अच्छा ॥

ह० अव्वूलफते—खडा होकर

(पितासुत मात धन नारी यह. राग)

जो पुच्छा आपने अय शाह, वह हम तुमको सुनाते हैं ।
करेंगे ना तअस्सुव कूछ, खुदाका खौफ खाते हैं ॥ जो०
कलील मिनल् शफ़कतु खैरमिन, कसरतुल जो इबादत है।
हमारे मज़ब के बानी, रसूलिल्ला फरमाते हैं ॥ जो०
खलीफा अव्वलने ये हुक्म, सपे सालरको दिया ।
करो फते मुल्क जिसको, न करना यह बताते हैं ॥ जो०
कि जिनसे मुल्कहै सर सब्ज़, नजर रखना हैवानो पर।
न होवें कत्ल वह हरगिज़, यह हम तुझको जताते हैं॥ जो०
फिर उनकी तुम नसीहतपर, करते क्यों नही हो अमल।
क्या यह हिन्दके गऊ बैल, नही फायदा पहुंचाते हैं॥ जो०
यह सारा हिन्दोस्तां हैगा, फक्त गऊ बैलसे सर सब्ज़ ।
नाहक जाहिल कतलकरके, जिन्नत दोज़ख बनाते हैं॥ जो०
तुमीं सोचो ज़रा दिलमें, क्या क्या हैं फायदे इन्नसे ।
कि घी और दूध मखन अन्न, येही सबको खिलाते हैं॥ जो०
जो खाकर यहभी खुश होते, व लेकिन फिर नही टलते ।
नहीं मालूम, यह फिर भी तो, नहीं क्यों तरस खातेहै॥ जो०
लिखा हदीसमें देखो, जो है फरमां रसूलिल्ला ।
जो इन चोरोंको करते हैं, वह ही दोज़खमें जाते हैं ॥ जो०
येहीं है नाम चारोंके, ज़रा देखो इन्हे पढकर ।
कि ज़ायेबुल बकर ही अवल, ज़िबह गाये बताते हैं ॥ जो०
दोयम कातुल शजर समझो, जो काटेहैं दरख्तोंको ।
वलेकिन उन दरख्तोंको, जो फल हमको खिलाते हैं ॥ जो०
सोयम दायमुल खमर हैं वे, जो मैको नोशकरते हैं ।
हैं बाएअल वह बशर चौथे, जो आदमको बिकाते हैं ॥ जो०
इन्हे तो दीन अपनेकी, नही है खबर अय सेवक ।
पडे दरया तअस्सुबमैं, हाय! यह गोते खाते हैं ॥ जो०

नवाब खानखाना—उठकर

(भजन, कजली)

सुनलो वात हमारी शहनशा, ज़रासी चित धरके तुम कान । बिना गऊके हिन्दु यवनका, होगा नही

कल्यान ॥ सु० ॥ खेती, बारी, पुरओरु गारी, जितना हैगा समान । गऊके सहारे सभी चलत है, देखो देकर ध्यान ॥ सु० ॥ माखन, छाछ दही और दूध, पिलाती सबको समान । इन्हे ही खा, पी, हम तुम सबीही दीखतहैं पहलवान ॥ सु० ॥ ऐसी भलाई करे जो हमरी, वाजीब नहीं कुरबान भलाईके बदले करे जो बुराई, नहीं वह है मुसल्मान ॥ सु० ॥ हमारे नबीका सब मोमिनको, बडा है यह फरमान ।करे जो भलाई रहो तुम सहाई, न रहना कभी गलतान ॥ सु० ॥ नेकीके बदले करे बदी जो, जानो वोही शैतान । सेवक उसका टीकान, होगा जो है दोजख स्थान ॥ सु० ॥

अब्बुलफज़ल—खडे होकर

(राग गजल)

जो मंन्ज़ूर हो शाह हिन्दकी भलाई । करो गोकुशी बन्द मिटे सब तबाई ॥ जो ॥ सतानेके अहले हनूदके कारन । रसम जाहेलोंने हैगी चलाई ॥ जो ॥ न अहले शरीयतमें एसा लिखा है । न एसा हुकम कहीं हैगा खुदाई ॥ जो ॥ विना गोखुशीके रहेगा न ईमान । एसा लिखा हो तो देको बताई ॥ जो ॥ लेकिन बताते शरीयत लिखा हम । सताबो किसीके दिलको नराई ॥ जो ॥ वानी मज़बकी घडी यह नसीहत । करोगे भला तो होगी भलाई ॥ जो ॥ खुदा रेहम करता नहीं उस वशर प्र । कि जिसने किसी दिलपै है चोट लाई ॥ जो ॥ क्या कुछ विगाडा है इनका गऊने । जो नाहकही उसपै छुरीहै उठाई ॥ जो ॥ है गऊ एकही दुनियाकी फायेज़ गज़ुर । खिलाती है सबको यह गोरस मिठाई ॥ जो ॥ है इस्सीसे सहारा फकत जिन्दगीको । न वाजिब है करना फिर कज अदाई ॥ जो ॥ देखो तजारत ज़रायत सफरमें । दिलो जानसे यह तो

होती सहाई ॥ जो ॥ ज़रा गौरसे सोचो तुम अप-
नेजीमें । यह क्या क्या है करती जगकी भलाई ॥जो॥
करोदूर तुम सबके दिलसे तअस्सु। छोडावो यह पैशा जो
हैगा कस्सई ॥जो॥ गज़ब है पिलावे जो नित दूध इन
को, उसीपै करें यह हैं तेग आजमाई ॥ जो ॥ कहांसे
निकाली है, यह रस्मो आईन। इबज़नेकीके हो जो करते
बुराई ॥ जो ॥ करोगे रेहम तो पाओगे जज़ाभी ।
ख़ुदा हैगा सेवक जो हाजार न्याई ॥ जो ॥

परीक्षक-(चुपकेसे मुल्लांना अबदुलकादर जनूनी कानमें) देखो साहब यह फैजी अब्बुलफल वगैर मुसल्मानोको क्या हो गया है, जो यहभी हिन्दुओंकी तरफदारी करने लग गये हैं, अबतो ज़रुरही गो-कुशी वन्द हो जायेगी। अगर अब आपमें हिम्मत हो तो कुछ कर-दिखावो, वरना वक्त जाता है? देखो अगर इसवक्त आप कुछ कर-दिखावोगे तो सारे मुसल्मान आपकी इज्जत करेंगें, और जो कहोगे सो करेगे

मुलांना-जोशमें आ, खडा होकर

[राग मानेगा मेरी बातें न होवेगा पछताना०]

काफिरोंकी तर्फदारी, तुम सब करते हो भला ।
तुमरी बातें माने न शाहा, चाहे तुम फाडो गला ॥का०
चाहते हो बन्द गोकुशी तुम, बादशाहको वरगिला ।
हरगिज़ मोमिन मानेगे न, जो तुमदी हैगी सल्ला ॥का०
इसलामको तुम छोडके, अब काफिरोंसे जा मिले ।
इस्से हमरी रस्मोंको तुम, दिया चाते हो धूर मिला॥का०
खाके रिशवत काफिरोंसे, दीन दुनिया दी भूला ।
हुये हो काफिर दोजखी तुम, छोडो शाहको तो भला॥का०
करेंगे रसमे मारके गऊ, आलिहोंको जोश दिला ।
इसलामको रोशन करेंगे, काफिरोंसे करकला ॥ का०
लूटेंगे मारेंगे हमतो, काटेंगे इनका गला ।
काफिरोंको ज़ेर करना, जिस्से रहे यह मुबतला ॥ का०

हकीम अब्दुलफतह—मौलानां साहब हमलोग हिन्दुओंकी तर्फ दारी नही करतेहैं, जो आप हमलोगोंको नाहक गालीयां देने लग गये हैं, क्या आप ईमान से बता सकेते हैं कि मुसलमांनी मज़हब गऊ ही की कुरवानीपर मुनहसर है। मौलांना साहब? अस्सुबको छोड कर ज़रा कुछ विचार करो, और कुरान शरीफ पढो, क्योंकि कुरान शरीफ मुसलमानोके एतकादकी कितावहै, कुरान शरीफकोही मुसलमान कलाम ईलाही (ईश्वर वाक्य) समझते हैं, कुरान शरीफही मुसलमानी धर्मकी जडहै। इस्से कुरान शरीफको मानना मुसलमानोका फर्ज है। तिस कुरान शरीफमें गऊकी कुरवानी करने का कहींभी हुकम नही लिखाहै। हां? ऊंटकी कुरवानी लिखीहै वह भी मक्केमें, वह भी हज्जके वक्त। क्योंकि उस वक्त मुल्क २ के हाजी मक्केमें जमा होतेहैं, और मक्केके आस पास सुखी पहाडी भुमी होनेसे खेती कुछ नही होती है, खेती न होनेसे अन्न कहांसे आवे जो लाखों आदमी खा सकें, इस लिये ऊंटकी कुरवानीका हुकम दियाथा, क्योंकि ऊंटसे एक कटुम्बका पेट भर सकताहै। दुसरे कुरानके वाद मुसलमानो के यहां सुन्नतहै, और सुन्नत कहते हैं अच्छे वजुर्गों (बडों) के राह पर चलनेको, सो मुसलमान वजुर्गों में हजरत इब्राहीमने कुरवानी चलाई है, मगर उसनेभी दुंवे-केही कुरवानी कीथी, न के गऊकी (तीसरे) मुसल्मानोंके यहां खुतवा, खुतवा कहते हैं जो जूमेके दिन मसजिदोंमें पढा जात है, खुतवे में खुदा व रसूलकी तारीफ और उनके पीछे मुसलमान खलीफा लोगों की वंशावली होतीहै, यह मुसलमानोके लिये मान्यहै, मगर कुरान और सुन्नतके वाद उस खुतवेमें भी वकरे मेंढे न मिलने पर "वकर" या वकरतुन" लफज लिखाहै जिसके मैंने मुसलमानोंने गाय के ले लियाहैं, मगर इसके मैने जंगली जानवरोंके हैं॥

वकर लफ्ज आनेका मतलब यह है कि जब मेढा वकरा ऊंट न

मिले तव इन जानवरोंकी कुरवान कीजावें लेकिन ह रवक्त मारनेकी आज्ञा नही है,

मौलाना—वकरके मैने गाय वैलके हैं, देखो सूरा वकरमें गऊके पूजन वावत जहां आया है वहां वकरतन लिखाहै और हदीस में भी जहां गऊकी कुरवानीकी वावत आयाहै वहांभी वकरतन ही लिखा है.

ह. अव्वुलफतह—गायको अरवी जवानमें "सवारा" और वैलको सोर कहते हैं, अगर इनकी कुरवानी की वावत हुकम होता तो कुरान वगैरः कितावोंमें सोर, सवारा लफज जरुरही आते, मगर यह लफज नही आये हैं, और आपने जो कुरान हदीसका हवाला दियाहै, इससें हम आपसे यह पूछते हैं कि वकरतन के मैनै क्या खास गायकेही होते हैं या वैलके भी

मौलाना—गायकेही होते है.

ह. अव्वुलफतः—वाह तुम्हारी अकल, जरा " शरा कामूशके २८९ पन्नेको तो देखीये कि उसमें वकरके मैने वहुत गाय वैलके लिखें हैं यानही, वकर जमाहै (वहु वचनहै) और वकरतनके मैने एक जोडे गायवैलके लिखे हैं याने वायद (एक वचनके) हैं, अव अप यह वतायें के हदीसकुरानमें जहां गऊकी कुरवानीके वारेमें लफज लिखा है उसके मैने दोनोके होते हैं. यानही। तीसरी वात यह है कि आप वहां गाय वैलकेही अर्थ क्यों लेते हैं क्योंकि हम पीछे कह आये हैं कि वकरके मैनेजंगली पशु के होते हैं। गाये वैलके नही होतेहै. अगर गाय वैलके होते ! तो सोर सवारा क्यों नहीं लिखदिया। पस इस्सेयह सावित होताकि यह फक्त मुसल्मानोके तअस्सुवने वकर वकरतनके मैने गाय वैलके कर लियेहैं जैसे " इदुल जौहा " के मैने जानवरोंकी कुरवानीके होते हैं और

* जिद्दसे वकर वकरतुनका अर्थ गाय वैलका वनालियाहै. यदि आपकी इच्छा इस विषयको देखनेकी हो तो " गोरक्षा प्रकाश दूसरा भाग गोसेवक प्रेस दशास्वमेघ काशीसे मंगा देखीये.

अब इन्होने "इदुल जौहा" के बदलेमें बकरीद बना गऊकी कुरवानीके बना लिये हैं? क्यों साहब हम आपसे यह पूछते हैं कि यह "बकरीद" लफज कोन भाषाका है, अगर कहीयेकिअरबी का हैं तो अरबीमें तो खास इदुल जौहा ही आता है अगर कहोकि तो इसके मैंने बकरे की इदके निकलते हैं तो फिर गऊको क्यों मारतेहो-पांचवीबात यह है कि अगर बकरतुनके मैंने आप गायके लेते हैं तो तिबवालेने लबनुलबकरतुन, समनुलबकरतुन क्यों नही लिखा है, क्यों "लबनुलबकर," "समनुलबकर" लिखाहै क्योंकि बकरके मैंने तो आप तअझबी लोग गाय बैलके लेतेहैं, इस्से मालूम होता है कि अबमें गाय बैल दोनोही दुध देतेहै। हाय तअस्सु तू कैसा जबरहस्त है, कि जंगली जानवरोंके नर मादाको जो एक तरहा गाय भैंसकी तरहा होताहै मुसलमानोके बजुर्ग उसको बकर कहतेथे उनकी औलादने तअस्सुबमें आ इस फायदेमन्द गाय बैलको बकर बनालिया, अजी जंगली जानवरोंको ही बकर कहे थे देखो "सूरुलबकर" यह एक गाय है जिसके मुहसें गोहरशबे चराग (एक तरहाकी मुहमें मणी होताहै जब यह गाय रातके वक्त घास चरनेके लिये दरयासे निकलती है तो इसको गोहरसे तमाम जंग रोशन हो जाताहै) दुसरी "जहरुल बकर" है इसके मुहसे संग फादजहर जो निकलता है जिसको दूधमें घिसकर पीनेसे बडे २ रोग दूर हो जाते हैं इत्यादि जंगली ही जानवरोंको बकर कहतेथे नके इनगाय बैलोको बकर कहतेथे क्योंकि इनगाय बैलोंको हमारे बजुर्ग सौर सबारा कहतेथे.

---

* गायका दूध गायका घी

* सिंघ, बाग, हरन, इत्यादि जानवारोंमें चाहे नरहो चाहे मादह हो देखने कहतेहै कि वह घर, बाम, हरन, भैया, हो पास रहनेसे नरको शेर, बाग, हरन, और मादाको शेरनी, बा न, कहस कतेहै

(राग भैरवी.)

तुम सब सुनो हमारी बात । सुनो हमारी बात ॥ तुम०
हुआहै साबित हर तरहासे, बुराहै गऊका घात ॥ तुम०
पेशकार पिरथी राज, लिखोतुम रुक्का जल्द ।
तमाम सूबों को करें, इस बातसे हम ज्ञात ॥ तुम०
रहें वेअपने सूबोमें, इस बातसे हुशियार ।
हर गिज़ न होने दे कभी, गऊ बैलका वे घात ॥ तुम०
फ़र मान शाहीके बमूजिब, रक्खें गऊका ख्याल ।
मारे जो गऊ बेलको कोऊ, काटें उसका हाथ ॥ तुम०

पृथिराज–(पेशकार, हाथ जोडकर) बहुत अच्छा खुदावन्द मैं अभी फरमान शाही तैयार करता हुं (यह कहकर) लिखना आरम्भ करता है।

बादशाह–(फेज़ीसे) वजीर साहब शहरमें ढंडोरा फिरवा दो कि कोई आजकी तारीखसे गऊकी नस्ल (वंश) को हलाक् न करें अगर कोई करेगा या कोई करायेगा तो करनेवाले का *हाथकाटवा दिया जायेगा और शरीक (सहायक) होनेवाले की उंगलीयां कटवादी जायेंगी।

व. फेजी–बहुत अच्छा जहांपनाह मैं अभी डूगडूगी वालेको भेजताहूं (अपने अरदलीको पुकारकर) करीम बख्श.

करीमबख्श–हाथ जोडकर, हाजीर सरकार.

फेज़ी–तुम डूगडूगी वालेको बुलालाओ.

करीमबख्श–(बहुत अच्छा सरकार, कहकर) डूगडूगी वालेको बुलाने जाताहै.

* रवीवारको और जिस महीनेमें अकबरने जन्मलियाथाउस महीनाभर में कोईभी जानवर मारानही जाता था अगरकोईमारे तोउसका हाथ और इसमें साथ देने वालेकी उंगलियां काटदेनेका हुक्म था देखो रसूम हिन्द दुसरा खंड पन्ना ८८

पृथिराज—खुदावन्द, फरमान शाही लिखकर त्यारहै, सुनलीजीने

बादशाह—सुनाओ,

पृथिराज पेशकार—फरमान शाही सुनाताहै.

(फरमान शाही)

नक्ल फरमान वाला शान जलालुद्दीन अकबर बादशाह गाज़ी मुतिब व मुहर अदरक व तुग़राये नशां हाय दफ्तर बादशाही मरकूमः सीज़दहयम यकम माह ज़िल हजः सं ९९१ हिजरी मुअझा मुन्त ज़मात बार गाह खलाफ व कारपर दाजान दरगाह सल्तनत व उमराये आली मकदार व जमीअ अमाल मोहालात व मुत सद्दीयान मुहमात मुमालके मह रुसहः ई दोलत अबद मुद्दत बिदानन्द, दर्रीं अवान अदालत उनवान व ज़माने मोदलित अकतरान फरमान वालाशान वाजबुल इज़ान लम्मः सद्दुर व अशअः ज़हुर याफ्त कि बदीद बानाये दानश व बीनिश हेवानात बे जुबानः किशवरे अफरी नश अनूद अज़ां जुमलः नौऐ गावान अज़ नरो मादह मन्शाये फवायद बिस्यार व सदर मुनाफः बेशुमार हस्तन्द ज़ेरा कि ज़िन्दगी इन्सान व हेवान मनूत व कलात व नवातात अस्त। बचूं हर दोजिन्स बे किश्तकार मुत अज़र दुशवार व किशूतकार बः कुलबःरानी मुत सव्वर दरीं सूरत गावाने मदार अलेफ आबादी आलम व वास्ते हयात हेवानात व बनी आदम अन्द, इन हदामे असास हस्ती चुनीं हेवानात मुबादरत नमूदन नामुस्तः हमून नज़र बर इमानी हम्बे उलअर्ज़ अरकाने दोलत व ईयाने हज़रत नीयते साफी तबीयत आफतावे सपेहरे इज़्ज़ हशमत हजरते मुअझा व हुसैन सलाह वुज़राये आली तदबीर इक्तज़ा बरां फर मुदाह कि दर तमामी मुमालके महरुसह रस्म गाओ कुशी मुतलक नमानद व बिल कुली मतरुक शुवद, बायद कि बबरोदा ई बरलीग़ कज़ा तंबलीग़ जमीई मुनतज़मान बार गाह आसमां जाह दरीं बाब तकैयद तमाम व ऐहतमाम, तमाम बकार बरन्द कि हसबुल हुकम अकदस आला

दरहेन विलाद व कसबात व कुरयात जिवह वकर व अमल न्यायद, अगर ऐहयान्न खिलाफे हुकमे वालाह एहदो मसदर गाओ कुशी खाहद गरदीद व गज़वाते सुलतानी कि नमूनः कहर रब्बानी अस्त मुवतला खाहद गरदीद व वसज़ा खाहद रसीद—फ़क्त

वादशाह—बडी खुशीसे मुहर करके तमाम सूबोंको भेजवादेतेहैं.

शिवदत्त—खडा होकर.

(राग देस या: धनाश्री.)

दिन दिन वढे तेरो राज । वढे तेरो राज ॥ दिन०
किया किसीने नही हिन्दमों, किया जो तुमने काज ॥ दिन०
डूवत था शाह पाप नदीमों, हिन्दका जो ये जहाज ।
वडी कृपाकी वचा दिया इसको, धन धन हो महाराज ॥ दि०
फूटका पेड जो था हिन्दमों, काट दिया तुम आज ।
मेलका वीज वो दिया तुमने, रक्खली हिन्दकी लाज ॥ दि०
उपकार तुमारा कहांतक गावें, तुम हो गरीव निमाज ।
ईश्वर तुमे चरंजीव राखे, सेवक सेहत समाज ॥ दि०

मौलाना—फरमान शाही सुन वादशाह और वजीर दिवान आदि नौरत्नो को मोहर करते और शिवदत्तको तारीफ करते देख, मजहवी जोशमें आ, खडा होकर वादशाह और मुसलमान एहल कारोंसे.

(राग सुथरे की वाणी तरहा.)

सच्चे दीनको छोड छोडके वने कुफरके भाई ॥
वडों के हुक्म तोड ताडके हिन्दुके हुये सहाई ॥
भेजो गोकुशी वन्दके लीये जो फरमान शाई ॥
दीनके पक्के नहीं मानेगे तुमारा हुक्म यहराई ॥
पीर औलीया और पैगम्वर से ये नसीहत पाई ॥
जो काफरमारे धर्म विगडे वह वहिश्तको जाई ॥

जितने आये हमरे वजुर्ग हिन्दोस्तानमें भाई ॥
हिन्दोस्तान जिन्नत निशान किया वैरान आई ॥
सोमनाथ मथुरा थानेसर नगरकोटमें जाई ॥
देव दुर्ग काशी कन्नोज जहां बुतपरस्ती छाई ॥
तोड फोडके उन देवलमें कीनीथी वध गाई ॥
मर्द पकड गुलाम वनाये लडकी वनाई लुगाई ॥
मोमिनहो इसलामको तुमने दियाहै दाग लगाई ॥
कभीन मानेंगे तुमरी वातें हम मारेंगे गाई सच्चे०॥

हकीम अवुल फतह—खडा होकर

(राग इन्द्रसभा, अरेलालदेव)

नवोलोजी मुह्यां ऐसे कलाम ॥
अरेवे मुरवत जुवां अपनी थाम ॥
ज़रा होशमें आ तू ऐहेमक नवन ॥
वुराईसे वाजआ संभाल अपनामन ॥
न सता हिन्दुओंको ये कहना तू मान ॥
है करना भलाई वतावे कुरान ॥
गोवधसे जो इनको सतायेगा तू ॥
कियेकी सज़ा अपने पायेगातू ॥

शिवदत्त—मौलानासे

(राग मधुर स्वर कहां थीं आ समलांय.)

अन्तरसे अभिमान, त्यागो अन्तरसे अभीमान ॥ टेक
एक पिताके जीवहैं सगरे, सृजेहैं ऐक समान ।
तुछ न समझो लेस किसीको, जतायाहै भगवान ॥ त्या०
तुछ समझा अवलीसने आदम, वनायाउसे शैतान ॥
दुख न देवो किसीको प्यारे, सवके प्राण समान ॥ त्या०
जैसा सुख दुख तुमको होताहै, वैसा पशुकोभी जान ॥
मांदे ताते भूखे प्यासे, काम करत देजान ॥ त्या०

अनाथोंके तुम मारन कारन, देत क्यों इतना ध्यान ॥
काम इन्सानके छोड छाड तुम, बनतहोक्यों शैतान ॥ सा०
दीन जनोंके दुख हरनेको, बनाय ईश इन्सान ॥
बनके सहाय परस्पर सेवक, करो सुधाको पान ॥ त्या०

मौलाना—क्रोधसे.

(राग नाटकी चाल.)

बसबस न बोल हमसे बात । बस०
अराकान, सुलतान, पशतेवान, नशबान ।
नहो काफर बद ज़ात ॥ बस०
खुदायेगान, फरमान, कामरान, शादमान ।
न कुछ यामें है जुरात ॥ बस०
शतावान, फरमान, सुलतान, बुरान ।
मोमिन करके गळका घात ॥ बस

जोगन—खडे होकर मौलानासे

(पद)

इसका नतीजा मिल जायेगा, मुल्लां इसका !
फिर जो तू बका, पडेगी सिर पै जूती ।
अरे दिवाने? चुप ॥ नती०
अरे शेखी न कर खुदासे जराडर ।
अरे नादाने, चुप ॥ नती०

मौलाना—खडे होकर

(पद)

अरी चुपरहो वैरागन ये क्या बके है । अरी०
किसकीहै ताकत नतीजा जो दे मुझे । अरी०

कानासिंघ—दरबारमें कूद मौलानाका हाथपकड क्रोधसे

(राग नाटकी चाल.)

यह क्या बका है शैतान, काटूं अभी तेरी जुबान ॥

नही सभाका रक्खें मान । करें शाहका अपमान ॥ यह०
क्या तू करेगा हिन्द वैरान । लेगा हिन्दु का ईधान ॥
और तोडेगा देवस्थान । करेगा गऊको कुरवान ॥ यह०
रक्खें किसका ये अभीमान । देखूं उसकी भी मैं शान ॥
लेऊं तेरी उसकी जान । रहे न तुमरा नाम निशान ॥ यह०

इतना कह झट कमरसे कटार निकाल मौलानापर मारनाही चाहता था.

वीरवल—कानसिंघको मौलानाका खून करते देख, झट पीछे से जा कानसिंघका कटारवाला हाथ पकडकर (कानसिंघसे) कानसिंघजी इस मरे हुये को क्यों मारते हैं? जानेदीजीये क्षिमा कीजीये.

कानसिंघ—खैर! आपके कहनेसे छोड देता हुं, नही तो वादशाह और सभाके अपमानका अभी इसको मज़ा चखा देता, (मौलानाका हाथ छोडते समय ज़रासी धक्का देकर) जा, राजा वीरवलने तुझे वचा दिया.

मौलाना—कानसिंहके. ज़रासी धिक्केसे. ज़मीनपर गिर पडता है, और धीर २ लाहोल विल्ला कुवत, इल्ला बिल्ला? भला काफरसे जान तो वच गई, इतना कह चुपके वैट जाता है.

वादशाह—कानसिंघको दरवारमें मौलानाकी ऐसी दशा करते देख (वीरवलसे) राजा साहव? यह वहादुर लडका किसका नौकर है.

वीरवल—वताना ही चाहता था, कि झट कानसिंघ वादशाहको उत्तर देता है.)

कानसिंघ—भारत केसरी श्री महाराजा प्रतापसिंघका मैं दास हुं.

वादशाह—अरे हमारे दुशमन प्रताप का तू नौकर है.

रा० मान—खुदावन्द यह नौकर नही है यह उसका छोटा भाई है इसको गरिफतार करना चाहिये.

शिवदत—राजा मानका यह वचन सुन, खडे हो क्रोधसे.

(राग, देस या धनाश्री.)

नहीं है तुमरे हिये में लाज । तुमरे हियेमें लाज ॥ नही०
पकडावत हो अरे कानको, जो आया धर्मके काज ॥ नही०
ग्रहमें आये को पकर लेना, मानत हो वडे काज ॥
येही वीरता रही अव तुममें, धन धन हो महाराज ॥ नही०
नही रहतीहै उसमें वीरता । जो करत धर्मका त्याज ॥
सूरवीरतारहेहै उसमें । जो करत धर्मका काज ॥ नही०
घरमें वैर विरोध मचाकर । किया पतित काज ॥
क्षत्री धर्मको दे तलांजली । अगके भयेहो जहाज ॥ नही०
कपटी कुकरमी मिथ्या-वादिनके, तुम सेवक सिरताज ।
याद रक्खो, दंड पाओगे इसका, जव पकरीयें यमराज ॥
नही ०॥

कानसिंघ–क्रोधसे

(राग देस या धनाश्री)

क्षत्रीके अनोखे भये तुम पूत । अनोखे भये तुम पूत ॥ क्ष०
अपने पूरपनके वचन तोडके । फिरभी वनो हो सपूत ॥ क्ष०
तोड दियो निज नियम धर्म सव । हाय जैसे कांचों सूत ।
क्या वोलें हम तुमसे यहां पै । तुम हो निलंज कपूत ॥ क्ष०
जो तुम होते क्षत्रिय वीरज तो । करत न ये करतूत ॥
भाई त्याग संग करत न उनका । जिनसे लगत है छूत ॥ क्ष०
हाय ! पद संग विदेशन के तुम । अजी वने जात हो भूत ॥
कन्या देकर राजा कहावो । करनी करी अद भूत ॥ क्ष०
क्षत्रिय कुलको दाग लगाकर । कहावो क्षत्रिय पूत ॥
सेवक अवभी जावो सम्भल तुम । वनो असली रजपूत ॥ क्ष०

राजामान–कानसिंघके ये वचन सुन क्रोधसे अरे जरा मुंह सम्भाल कर वोल नही तो अभी यमपुर पहुंचादूँगा.

कानसिंघ–क्रोधसे हम तो खडे हैं, यमपूर पहुंचाओ या जाओ.

दोहा.

"मृत्युसे कायर डरे, जीवे मरे बहु वार ।
सूर वीर रणमों मरे, मरे है एकही वार ॥
मरना तो निश्चे लिखयो, परलौकक है एक ।
कायर जन डरकर मरे, वीर मरे कर टेक ॥

रा० मान—म्यानसे तलवार निकाल कानसिंघपर झपटता है.

जोगन–(रा० मानको कानसिंघपर झपटता देख वीना फेंक कमरसे कटार निकाल झट राजामान का तलवार वाला हाथ पकडकर) राजा साहब पहले हमसे दो हाथ करलो, पीछे कानसिंघ पै वार करना.

रा० मान–अजी एक तो तुम साधू तिसपर स्त्री, दुसरे निरापराध फिर हम व्यर्थ क्यों हाथ चलावें.

जोगन–जैसे भगवती स्त्री होकर महादेवजी की भांति दुष्टों का नाश करतीथीं, वैसेही हम तुम्हारे ऐसे पापियोंके नाश करने के लिये स्त्री नही हैं, परन्तु मर्द हैं.

रा०मान–हमने क्या पाप किया है.

जोगन–कानसिंघ ने तुम्हारा क्या बिगाडा है जो तुम उसपर हमला करनेको जाते थे.

रा०मान–उसने हमको दुर्वचन कहे हैं.

जोगन–तुमने खुद दुर्वचन सुनने का कामही किया है.

रा० मान–हमने क्या दुर्वचन सुनने काम किया है.

जोगन–कानसिंघने क्या कसूर कियाथा जो तुमने उसके पकडने के लिये बादशाहसे कहाथा.

रा०मान–वह हमारे शत्रुका भाई है, इसलिये.

जोगन–इसका भाई शत्रु होगा यहतो नही न है, अगर यहभी शत्रु होता तो यह यहां क्यों आता.

बादशाह—जोगनके यह बचन सुनकर (मनही मनमें) जोगन दुरुस्त कहती, अगर दुशमन है तो इसका भाई है नके यह। दुसरी बात यह है की शकता भी तो प्रतापका भाई ही था लेकिन वह प्रतापका साथ छोडकर हमारे पास आगयाथा, शायद यहभी प्रतापका साथ छोडकर हमारे पास रहनेको आयाहो (यह सोचकर राजा मानसे) राजा साहब जोगन दुरुस्त कहती है, दुशमन है तो प्रताप है नके यह लडका, इसलिये आप नाहक न उसपर हमला करिये,

रा०मान—बादशाह की आज्ञासे अपने आसन परबैठ जाता है

कानसिंघ—राजा मानको बैठते देख (ललकारकर) राजा साहब मत बैठ जाइये? आइये दोहाथ दिख लाई ये, जग निन्दा न पाइये

मान भंगसे मरना भला, जग निन्दा न सुहाये।
जीत शत्रु को जो मरे, जगत वडाई पाये ॥

बादशाह—(मनही मनमें) यह लडका बडाहीनिडर जवांमर्द है अपने पास रखने लायक है (प्रगट रुपसे) जवांमर्द लडके नाहक काहेकोतकरार करते हो अगर तुझकोकुछ जवांमर्दी दिखानी हो तो हमारी नोकरी करलो हम तुझको तेरे भाई शकताकी जगह देंगे

कानसिंघ—आपकी वडी मेहर्वानी है, मगर मुझे (राजा मानकी तर्फ इशारा करके) इनकी तरह लोभ नही है, जो मैं आपकी नौकरी करुं, मुझको चना चबाकर निर्वाह करना मंजुर है परन्तु अपने वडे भाई महाराज प्रतापका दासत्व त्याग करना मंजूर नही है

बादशाह—(मनही मन खुशहोकर) देखो यह कैसा भाईका मुहब्बती है, अगर हिन्दु आपसमें ऐसी ही मुहब्बत रक्खते तो क्या ताकतथी जो मुसलमान हिन्दोस्थान को ले सकते (प्रगट रुपसे) तो फिर तुयहां, किसलिये आया है.

कानसिंघ-(वीरवलकी तर्फ इशारा करके) राजा साहवसे पूछलीजीये.

वादशाह—(वीरवलसे) क्यों राजा साहव यह लडका यहां किसलिये आया है.

वीरवल—जेवसे महाराजा प्रताप सिंह का पत्र निकालकर, जहांपनाह यह लडका यह पत्र लेकर आयाथा.

वादशाह—(वीरवलसे पत्रले पढकर) खैर! गोकुशी तो हमने वन्दकरनेका तो हुक्म जारीकर ही दिया है, पर अवयह वताओ कि यह गऊकिसको देनी चाहिये.

रमज़ान—(हाथ जोडकर) हजुर यह गऊमेरी है इसलिय यह मुझको ही मिलनी चाहये.

कानसिंघ—इसगऊके लिये एतना झगडा हुआ है इसलिये यह गऊकिसी हिन्दुको मिलनी चाहिय, या इसे वादशाहको, रखना उचित्त है, और रमजानको इसका दाम मिलजाना चाहिये.

वादशाह—तुम्हारा कहना वहुत दुरुस्त है रमजानको इसका दामही मिलना चाहिये.

से०लक्षमीदास—तो हजुर जो इसका दाम वतायें मैं देदुं.

वादशाह—(रमजानसे) रमजान तूने यह गऊ कितने मैं खरीदी थी.

रमजान—खुदावन्द पचीस रुपयको

वादशाह—तू झूठ वक्ता है

रमाजान—सरकार दरया फ्फकर लें

वादशाह—तूने यह गऊ कव, और किस्से खरीदी थी.

रमजान—खुदावन्द, वहुत दिनहुये हैं. इसी शहरमेंसे लीथी.

वादशाह—उसका नाम पता वता, किस्से लीथी उस्से दरया फ्फकरलें और तुझको इसकी कीमत दिला दें.

रमजान—(मनमें अगर पता बताऊंगा झूठापड जाऊगा सोचकर) खुदावन्द जिस्से खरीदी थी उसका मैं नाम पता भूल गयाहुं.

बादशाह—(रमजानसे) घबरा मत अभी तुझे यादहो जाताहै (खुंखारसिंघ जमादारसे) खुंखारसिंघ ज़रा इसको पांच चार कोडे तो लगादे.

रमजान—(कोडेका नाम सुन्तेही थरथराकर) सरकार स्वार्थी चौबेसे जो अजमेरी दरवाजेमें रहता है.

बादशाह—अभी तू झूठ बोलता है.

कसाई फतेमुहम्मद—(हाथ जोडकर) ख़ुदावन्द रमजान झूठ नही कहता है.

बादशाह—तूने कैसे जाना कि रमजान झूठ नही कहता है क्या तू गऊ खरीदने के वक्त रमजान के साथ था.

क० फतेमुहम्मद—नही हजुर मैं साथ तो नही था, मगर जिसका यह नाम लेता है उस्से हम लोगभी अक्सर गऊयें खरीद लाया करते हैं; इसलिये मैंने कहा है कि यह झूठ नही कहता है.

बादशाह—क्या स्वार्थी चौबे गऊओंका रोजगार करता है.

क० फतेमुहम्मद—गऊ बैलों के व्योपारीयोंकी तरह तो वह रोजगार नही करता है, मगर जब उसके पास तीन चार गऊयें हो जाती हैं, तब वह हम लोगों के हाथ बेच देता है.

बादशाह—उसके पास इतनी गऊये कहांसे आती हैं. क्या वह चोरी करके तो नही लाता है.

क० फतेमुहम्मद—नही खुदावन्द वह चोरी करके नही लाता है उसको हिन्दु लोग खैरात (दांन) करके देते हैं, मगर ऐसी गऊ देते हैं जो सिवाय हम लोगों के और कोई नही ले सकता है.

बादशाह—और कोई क्यों नही ले सकता है.

क० फतेमुहम्मद—अक्सर वुड्ढी दूध हीन, ऐसी गऊये उसके यहां आती हैं, सो उनको सिवाय हमारे और कोन ले सकता है, हजुर ब्राह्मण लोग ऐसी गऊयें तीन चार रुपयपर हम लोगों के हाथ बेच जाते हैं अगर झूठ हो तो सरकार स्वार्थी चौबेको बुलाकर दरयात्फकर लें.

बादशाह—(कोतवालसे) कोतवाल साहेब कल स्वार्थीको हाजर करना (अहलकारोंसे) कल दरवार फजर (सुभा) से होगा इतना कह तखतसे उतर महलको जाते हैं.

अंक ३ परदा ८

स्थान—उदेपुर एक पाठशालामें.

लडके आपसमें खेलनेकी बात चीत कर रहे हैं.

आनन्दसिंघ—लडकोंसे.

(राग कंगन वा मोरा करसे सरक गयो रे.)

आवो आवो लडको आज यहांपै खेलें कूंदरे ।
जीवनसिंघ—क्या गुरुजी नही हैं रे.
ठाकुरसिंघ—वे घरको गये हैं रे.
हरनामसिंघ—फिर किसका डरहै रे.
आनन्दसिंघ—आवो अवो लडको आज यहांपै खेलं कूंदरे ॥
हरीशंकर—कहीं आ गये गुरुजी तोरे।
कृपाशंकर—खेलका मजा मिलजाये गोरे ॥
ठाकुरसिंघ—गुरु आनेका नही है ठीकाना.
हरीशंकर—तू कैसे है यह जाना.
आनन्दसिंघ—मैं ठीक कहुं हुं गुरुजी गयेहैं घरको अकेलेरे ॥अ०
हरीशंकर—है खेलसे पढना अच्छा रे.
कृपाशंकर—न पढोगे मांगोगे भिच्छा रे.

आनन्दसिंघ—वाह! बडाहै तू तो सियाना,

कृपाशंकर—नही तुझसाहूं मैं दिवाना,

आनन्दसिंघ—लडको आवो आवो मारें इसको यां से ढकेलें रे॥ आवो०

कुंवर अमरसिंघ—नही लडना हैगा अच्छारे.

ठाकुरसिंघ—यह समझका है गा कच्चा रे,

कृपाशंकर—हां! तू तो है गाहै पक्का,

जीवनसिंघ—अरे! देवो इसको धक्का,

आनन्दसिंघ—जावे जावे अपने घरको हम नही इस्से खेलेंरे॥

कुं० अमरसिंघ—अरे, तुम बुरा न इसका मानोरे,

हरीशंकर—ये कहता सत्य ही जानो रे,

ठाकुसिंघ—ब्राह्मणका काम है पढना,

आनन्द—है क्षत्रीको रणमें लडना,

आनन्दसिंघ—आवो आवो लडको आज यहांपै खेले कूदें रे

कुं० अमरसिंघ—ब्राह्मण कोही विद्या पढना,
क्षत्रीको कुछ नही उच्चरना।

ठाकुरसिंघ—हां, हां, ब्राह्मण कोही विद्या पढना,

आनन्दसिंघ—है क्षत्री कोही रणमें लडना,

कृपाशंकर—अरे, खस, खस,
विद्या पढना रणमें लडना

हरीशंकर—अरे सुन, सुन,
विद्या पढना, दानका करना, हरगिज़ कभी न रणसे डरना,

कुं० अमरसिंघ—भाई हमारे पिताजीने तो हमे यह सिखायाहै
विद्या पढना, दान का करना,
सतपै चलना, धर्म पै लडना,
गोब्राह्मणकी रक्षा करना, यह क्षत्रीको उचित्त है करना,

नकेसव—ठीक है, ठीक है.

आनन्दसिंघ—बुरा मुहं बनाकर, कुछ समझे तो हैं ही नही थीक है थीक है बक दिया। अरे सुनो,

कसरत करना, बदनको भरना, तब तो होगा रक्षा करना

सबकेसब—ठीक भाई ठीक है.

इसका बताना ठीक अब जाना, बिना कसरत के हार है खाना,

अनन्द—अरे हारकाखाना, दुम दबाकर घर भग जाना.

सबकेसब—हां! हां! ठीक ठीक,

आनन्द—तो आओ फिर कुशती लरें, कुशती लरें, हाथ धरें पट्टा खेलें दणड करें, एक दोडे दूजा धरे॥ आओ०

एक छोटा छोकरा रमण लाल—झूटे ही चिल्ला कर! अरे गुरुजी आते हैं गुरुजी आते हैं.

सबछोकरे—यह बात सुन! झट दोडकर पाठशालके अंदर चले जाते हैं.

अंक ३ परदा ९.

स्थान बादशाही दरबार.

बादशाह मय मुसाहियोंके बैठे हैं.

(कोतवालका प्रवेश.)

कोतवाल—सलाम करके, ख़ुदावन्द स्वार्थी हाज़र है.

बादशाह—स्वार्थीको देखकर (स्वार्थीसे) क्योंरे, स्वार्थी तेरा ही नाम है.

स्वार्थी—हां! महाराज, मेरा ही नाम है.

बादशाह—तूने (गऊकी तर्फ ईशारा करके) ये रमज़ान के हाथ बेंची है.

स्वार्थी—(मनही मनमें) हाय, अबक्या करुं, यदि नही बताता हुं तो खराबी है और जो बता देता हुं तो भी खराबी है)

बादशाह—क्रोधसे? क्यों बे बताता क्यों नही हैं.

स्वार्थी—हाथ जोड कांपता हुआ, हां! खुदावन्द मैने वेची है.

शिवदत—स्वार्थीको हां, कहते सुन, झठ खडे हो स्वार्थीको क्रोधसे.

(राग, नाटकी नैईचाल)

अरे पापी दुरा चारी, धिक मात है तेहारी। अरे०
अरे, हती नही भली नारी? वडी थी वो वदकारी।
जनी तुझे जो अनारी? कीनी धर्मकी खुआरी॥ अरे०
अरे, ब्राह्मण जन्मलेके, जन्मलेके जन्मलेके,
किया कर्म वडा नेके, वडा नेके वडा नेके,
वना तू यवन संगी, बुद्धी गई वैसी रंगी,
वनके दान अधीकारी, काम करता है अनारी॥ अरे०
अरे, नीचभी है गऊ को माने, ब्राणह्म होकर तू वेचाने,
पाप नाही यामें जाने, न माने न पहचाने,
पाप तेरे मन आवी, ललचावी फुंसलावी,
तुझे नाही समझ आवी, कैसा मज़ा है चखावी,
पास यमके पहुंचाई, दण्ड ईसका दिलाई,
देगा वहां तू दुहाई, होगा कोऊ न सहाई,
सेवक होगा ये लाचारी, पापकारी दुखीयारी॥ अरे०

वीरवल—(शिवदतसे) ब्रह्मचारी ज़रा वादशाहको सब हाल पूछ लेने दीजीये पीछे जो आपकी इच्छा हो इस्से कहियेगा

शिवदत—वीरवलका यह वचन सुन वैठ जाता है.

वादशाह—कितनेको वेची है.

स्वार्थी— ९) रु० कोवेंची है.

वादशाह—(रमज़ानसे) क्रोधकर क्योंबे तू झूठ क्यों वोला कि २९) रु, को लीथी) खैर, इसका मज़ा चखाऊंगा– (से० लक्ष्मी दास से सेठसाहव तुम राजा और प्रजा द्रोनोके खैरखाह हो इसालिये तुम इसगऊको अपनेघरले जाओ.

से०लक्ष्मीदास—जहां पनाह, इसका दाम क्या दुं.

वादशाह—कुछ नहीं, यह तुमको इनाम मेंदी गई है.

से० लक्ष्मीदास—अपने नौकरको बुलाकर गऊ अपने घरमें भेजवा देते हैं.

(करीमवखशका प्रवेश.)

करीमवखश—सरकार डूगडूगी वाला हाजर है.

फैजी—तू शहर, में जाकर खबरकर आ कि जो कोई गऊकी नसलको आजकी तारीखसे जिवाह (वध) करेगा उसके हाथ काट दिये जायेंगे और जो इसमें शरीक होगा उसकी ऊंगलीयां कटवादी जायेंगी.

डूगडूगी वाला—(वहुत अच्छा सरकार) कहकर शहरको जाता है,

वादशाह—(मुहंमें ऊंगली दवाकर) तोवा तोवा, तोवा, हमको तो यह आज मालूम हुआ कि हिन्दु तिसपर आला (वडी) जात ब्राह्मण भी कस्साईयोंके हाथ गऊयें वेचते हैं (वीर वलसे) क्यों राजा साहव यह क्या बात.

वीरवल—ऊठकर, उत्तरदेना ही चाहता था कि झट शिवदत खडा होकर कहने लगा? महाराजाधिराज सुनीये.

(राग हमको छोड गये वेनी माघो ।)

जिसके वीरजमें फर्क है न राई ।
वह हिन्दुका पूत न वेचेगा गाई ॥ जि०
कैसा भी कश्ट पडे क्यों न आकर ।
तो भी तजेगा न गो सेवकाई ॥
मात समान पालेगा गऊको ।
प्राणान्त तक न तजेगा गाई ॥ जि०
मत पितामें फर्फ है जिसके ।
वोही वेचेगा गऊ को है भाई ॥
मेरे वचन को सत्यही जानो ।
चाहे सेवक तुम लो अजमाई ॥ जि०

अये, वादशाह सलामत, ब्राह्मण की बात तो दूररही मैं सत्य कहता हुं कि जो छोटी जातका हिन्दु भी ठीक मांबाप का वीर्य होगा वह भी गऊ को करसाईको कौन कहे कभी किसी अंजान हिन्दुके हाथ भी नही वेचेगा.

वादशाह—देखो तुम्हारे रुबरु स्वार्थी ने गऊ वेचनेका अकरार किया है.

वीरवल—जहां पनाह मेरी समझ में तो स्वार्थी जुरुरही ब्राह्मणके (वीर्य) का नही है.

वादशाह—यह हम कैसे कहें कि यह ब्राह्मणके नुतफे (वीर्य) का नही है.

वीरवल—यह मैं आपको अभी सावितकर देखाता हुं. कि यह ब्राह्मणके वीर्य का नही है.

वादशाह—अच्छा ! कर दिखाओ.

वीरवल—झट वादशाहके चोवदार खुंखार सिंघको बुलाता है.

खुंखारसिंघ—(हाथ जोडकर) राजा साहेव क्या आज्ञा है.

वीरवल—तुम अजमेरी दरवाजेमें जाकर गौपाल चौवेकी स्त्री (स्वार्थीकी तर्फ ईशारा करके) इसकी मांको बुला लाओ.

खुंखारसिंघ—(वहुत अच्छा) कहकर बुलानेको जाता है.

वादशाह—राजा साहेव हम जहांतक देखते हैं कि हिन्दुओं का दानही हिन्दु धर्मको नुकसान करता है, देखो हिन्दुओं के दानसे लाखों वल्के करोडों आदमी आलसी और वेइल्म (अनपढ) होगये और होते जाते हैं, क्यों कि जव मुफ्तमें पेठभर खानेको मिले तो मनुष्य जरूर ही सुस्त (आलसी) होजाता है, और फिर सिवाय वदमाशीके उसको और कुछ नही सूझता है, यह रोजही देखनेमें आता है, कि हिन्दुओंके दांनके सववसे कितने साधूवन वैठें हैं और वनते जाते हैं, इनसाधूओं मेंसे सौमें पांच साधू अच्छे होंगे वाकी सवके सव माल खा २ कर और गांजा, भांग अफीम दारु पी २ कर सिवाय वद मांशीके और क्या करते हैं, देखो कुरुक्षेत्रमें जव इन-

साधुओंकी आपसमें लडाई हुईथी, हमने उसीवक्त जानलिया था कि यह साधु नही है. लेकिन यह वद मारा हैं, इसलिये हमने इनको आपसमें लडने की इजाज़त देदीथी, * क्यों कि इनका नाश होना मुल्कके लिये अच्छा था, तुम्ही सोचो कि लडना झगडना साधु ओंका काम है, हम कह आये हैं कि जब आदमीको मुफ्तमें खानेको मिलता है तब उसको ऐसी ही बातें सूझती हैं, अब ब्राह्मणोका हाल सुनीये? बेशक यह साधुओंसे कुछ अच्छे हैं क्योंकि यह ग्रहस्ती हैं इनके दान देनेसे ग्रहस्तका पालन होता है और ग्रहस्तके सबबसे यह बद माशी भी नहीं करते हैं लेकिन मुफ्तके मिलनेसे यह भी आलसी और बेईलम (विद्या हीन) होते जाते हैं, जब हम हिन्दु शास्त्रों की बातें सुनते हैं तब हम तअज्जब होजाते हैं कि पीछले जमाने (समय) के ब्राह्मण कैसे २ इलमदां (विद्यवान) थे और जब हम इस जमाने के ब्राह्मणो को देखते हैं तो इस जमाने के ब्राह्मणो में वैसा एक भी ब्राह्मण नही पाया जाता है, अजी उनकी बात दुर रही! (पंडित जगन्नाथकी तर्फ ईशारा करके) हमारे पंडितजी जैसे भी विद्यावान नही मिलते हैं (बीरबलकी तर्फ इशारा करके) राजा साहब उस रोज़की बात तो ज़रा सुना दो.

बीरबल—जहां पनाह—किसरोज़की बात.

बादशाह—जब हम तुम दोनो एक दिन रातके नौ बजे सराये में गयेथे और एक मुसाफ़रने जब भठीयारीसे एक नौकर कई गुणो वाला मांगाथा तब उस भठीयारीने एक ब्राह्मण को लाकर मुसाफर से क्या कहाथा हम भूलगये जरा सुनादी जीये.

बीरबल—(शर्मीकर) बेशक जहां पनाह इस समय हमारी जात उस भठीयारीके कथनानुसार ही है—मगर मुझे भठीयारीकी बात याद नही रही क्या कही थी.

---

* सं १५६७ ईको कुरुक्षेत्रमें सन्यासी और योगीयोंमें खूब तलवार चलीथी यदि अबभी हमारी प्रजापाल न्यायशील गवर्नमैन्ट तीर्थोंमें ध्यान न रखे तो सं १५६७ ईवाले युद्ध सेभी बढकर इनमे राजे ही युद्ध हुआकरें.

ह० अब्बुलफते—(बीरीवलसे) राजा साहब बहाना न की जीये सुना दीजीये, जरा हमभी सुनलें भाठियारीने क्या कहाथा.

वीरवल—हकीम साहब मैं सच कहता हुं मुझे याद नही है.

वादशाह—अजी, शरमाईये नही सुनादी जीये कुछ आप वैसा काम थोडा ही करते हैं जो आप छिपाते हैं.

वीरवल—(वाद शाहके वहुत हट करनेपर) जहां पनाह! उस मुसाफरने भठीयारीसे यह कहाथा कि.

" ला भठीयारी ऐसा नर, पीर बावरची विशती खर"

याने हमको एक ऐसा नौकर लादे, जो पीर भी हो, बावरची रसोई (का कामभी जानता हो, विशती याने) पानी भरनेका कामभी करना जनता हो, खर याने बोझाभी उठा सकता हो—ऐसा आदमी हमको लादे तव भठीयारीने एक ब्राह्मण को लाकर उस मुसाफरके सामने खडाकर दिया और कहा कि जैसा आदमी तुम चाहतेथे वैसा आदमी यह है, यानें हिन्दु लोग इससे रसोई भी वनवाते हैं पानी भी भरवाते हैं वोझाभी उठवाते हैं, और फिर पीर याने ब्राह्मण समझ कर पालागन भी करते हैं.

वादशाह—और दरवारी लोग विरवलकी यह वात सुनकर हंस पडते हैं.

वादशाह—फिर ऐसे साधू ब्राह्मणोको दान देनेसे कुछ लाभ हो सकता है.

वीरवल–कुछभी नही और उलटा पाप होत है, क्योंकि दानका अधिकारी वह ब्राह्मण साधू है जो अपने धर्म कर्ममें रहता है जिस साधू ब्राह्मणने अपना धर्म कर्म त्याग दिया, तो फिर वह दानका पात्र नहीं है.

वादशाह—तो फिर हिन्दु लोग ऐसे लोगोंको क्यों दान देते हैं.

वीरवल—जहां पनाह आजकल हिन्दुलोगों का दान खुशामदीही खा जाते हैं या अदलवदल करअपने काम में लाते हैं.

वादशाह—कैसे?

वीरवल—जो साधू ब्राह्मण खुशामद करता रहता हैं या तो उसकोदान मिलता है, और या दान उन ब्राह्मणोंको मिलता है जो जात बरादरी के घरोंमें रसोई बनातेहैं या कोई और नौकरी करते हैं। जैसे हमने दान किया तो जितनी हमारी बरादरीमें ब्राह्मण नौकर होंगे हमने उनके मालिकों को भेज दिया जब हमारी बरादरीमें किसीने दान किया तो उसने हमारे ब्राह्मणाको भेज दिया, ऐसा दान आजकल होता है। दानाधिकारीयोंको एक मुठी अन्नभी नही मिलता है, क्यों कि वह किसीकी खुशामद नही करते हैं। अभी एक महीना हुआ है कि (गोकुल दासकी तर्फ इशारा करके) इनसेठ साहबकी माताजी* मरते समय एक लाख रुपया दान करके मरीथीं, इन्होंने वह सब रुपया अपनी बरादरीके नौकर ब्राह्मणो को बांट दिया है, पूछीये किसी पात्र ब्राह्मण को एक पैसाभी दिया है, यादि उसी लाख रुपयें की एक ब्राह्मण बालकोंके वास्ते पाठशाला और क्षेत्र (अन्न-शाला) खोल देते तो कितना पुण्य होता, मगर हमारे इनसेठोंको यह बुद्धी ही कहां जो ऐसा करें, काहिये फिर धर्मकी उन्नती कैसे हो सकती है.

बादशाह—तो गोदानभी ऐसे ही ब्राह्मणको देते होंगे.

वीरवल—जीहां ! जो गो दान अधिकारी हैं उनको नही देते हैं, खुशामदी विद्याहीन ही ले जाते हैं.

शिवदत्त—खडे होकर, महाराज दानका हालमें सुनाता हूं.

(राग लावणी)

आज कलका दान शहा जी, हिन्द की करता है तबाई।
सेठ महाजन, नही समझते इनकी मति गई बोराई ॥
विद्याहीन जो होवे ब्राह्मण घरकी करे जो सेवकाई ॥
उसीको देके दान महाजन वडा समझते पुण्य न्याई ॥
या देते हैं उस साधूको, धन हो जिसके सवाई ।

* मुम्बईमें भी एक मार वाडन एक लाख रुपया दान करके मरीथी, वह दान भी वैसेही ब्राह्मणोंके पेटमें पढ गया,

और जिस के मठमे, भांड पतूरीया रात दिवस जावें धाई ॥
ऐसोंको जव दान मिले तो, अधर्मकी क्यों न हो अधिकाई ॥
आज०

काम करन लगे सवी राक्षसी, भूल गये हैं द्विजताई ॥
अपूज पूजने, लगे कहे हैं सिरपर देवी मां आई ॥
वली दानकर मांस उडावें, नहीं माने हिंसा राई ॥
वेद धर्म को, त्याग चलाई अव इन्ने है धुरताई ॥
नीच कर्म अव करें व्राह्मण, भूल गये अपने ताई ॥
प्रोहित पाधा वन, करें दलाली कंन्यागल फांसी लाई ॥
ऐसे व्राह्मणको सेठ महाजन, दान देत हैं अधि काई॥ आज०
धूर्त दुष्ट अव वने हैं साधु, साधुन की खोई सेवकाई ॥
नार मोई या, सम्पत खोई हुई किसी से हो लडाई ॥
मुंड मुंडाकर इक धेलेमें, कफनी लाल गले पाई ।
मुंह कालाकर, वन गये ओघड योगी जंगम गोसाई ॥
कोई वैरागी कवीर पंथी, कोई वना नानक शाई
भक्षाभक्ष, सवी यह खाकर दिखाते अपनी सिद्धाई ॥
सेठ महाजन इन्हे पूजते, नही जानतहैं ठग् गाई ॥ आज०
ऐसे ही पतित व्राह्मण साधू, वेचन लगे हैं अवगाई ॥
अधर्म फैलावें, वढा जगत में रोके इन्हेनकोऊ जाई ॥
हिन्दु फंसे हैं इनके जालमें, देत न इनको दिखलाई ॥
रात दिवस करें, इनकी सेवा मती गई है वोराई ॥
लंठ उचक्के मजे उडावें, खाके दूध घृत मिठाई ॥
फाके करते, संत व्राह्मण मिले न उनको इक पाई ॥
येही पापसे सेवक भारत, है रसातल इकदिन जाई ॥ आज०

वादशाह—जैसा तुमने व्यान किया है वेशक हिन्दु धर्मकी इन्ही वदमाश साधू व्राह्मणोने वुरी हालतकर रक्खी है.

(खूंखार सिंघका प्रवेश.)

खूंखार सिंघ—जहां पनाह, स्वार्थी चौवेकी मां हाजर है.

वीरवल—खडा होकर (स्वार्थी चौवेकी मां ज्ञान देवीसे) देवी तुझको यहां एक वात पूछने केलिये वुलवाया है, यदि तू सत्य २ वता देगी ? तो हम तुझको अपनी माताकी तरह मानेंगे, और जीतेजी तक तेरी सेवा करेंगे। और अगर तू झूठ वोलेगी, तो तेरी ऐसी वुरी दशा होगी जो आज तक किसी की न हुई हो कीजा वेगी ? क्योंकि वादशाहको तेरी सारी हालत मालूमतोहोगई है केवल अव वह तेरे मुहंसे सत्यझूठको मालूम करना चाहते हैं, इसलिये तू परमेश्वर को सन्मुख जान कर ठीक २ वात वता दे.

ज्ञान देवी—(हाथ जोड कांपती हुई) महाराज आप पूछें जो मुझे मालूम होगा ठीक २ कहदूंगी.

वीरवल—(स्वार्थीकी तर्फ ईशारा करके) देवी यह लडका तेरे पतीसे है या किसी औरसे (तलवार निकालकर) सच वता नहीं तो अभी मारता हुं.

ज्ञान देवी—हाथ जोडकांपती हुई महाराज मारो मत मैं वताती हुं.

वादशाह—(वीरवलसे) राजा साहव मतमारो वताती है (ज्ञानदेवीसे) अच्छा वता.

ज्ञानदेवी—हाथ जोड़कर.

(राग)

महाराजा जी यमुना स्नान जो गई।
राहमें अति विपत इक् भैई ॥ महाराजी०
घरसे अधे राह जव गई वर्षा अति ही भई।
इस कारण इक घरके नीचे, खडी जो होमैं गई ॥ महा०
आचानक इक यवनने, आकर कमरसे पकर लैई।
उठाकर वह उसघरमें लेगयो, छुरी दिखाई नैई ॥ महा०
मैं अवला छुरीं देखकर, अति भैयभीत भैई ॥
उतार दिया सवी जेवर उसको, तोभी इज्जत न रही ॥ महा०
वडी अधर्मणी पापी हुं मैं, जान न मैरी लैई।
उसी पापके कारणसे यह, है दुष्ट सन्तान भैई ॥ महा०

यह अधर्म भैयाहै मुझसे, वात मैं सच कही
चाहे मारो जीती राखो, पापी सेवक हुं सही ॥ महा०

वादशाह—(विरवलसे)राजासाहव तुम्हारा और शिवदतजी कहा ठीक निकला, झठ तखतसे उतर ज्ञान देवीसे.

(राग)

जल्दी तू मुझको वतादे वह रहता कहां पै दुष्ट है। जल्दी०
क्या है नाम उसका जिसने किया भ्रष्ट है। जल्दी०
कान कटावूं नाकटावूं कटावूं उसके हाथ।
फिर करे न कभी सेवक किसे वह नष्ट है। जल्दी०

वीरवल—अय? देवी तूं उसका जल्दीसे वादशाह को पता वतादे यह उसको पकड मंगावें और उसके पापका मजा चखावें.

ज्ञानदेवी— महाराज यमुनाजीके : चौरस्तेवाली मसजिदके पासवाले मकानमें मेरा धर्म नाश हुआ था, अवमैं नही जानती हुं कि वह उसमें रहता है या नहीं और अव मैं उसकी सूरतभी नही पहचान सकती हुं क्यो कि अठरा उन्नीस वर्षकी वात है.

हरीदास वनीया—झटखडा हो हाथ जोडकर? महाराजाधिराज उस मकानमें ऐसी २ वदमाशीयां होती हैं जिसका मैं व्यान नही कर सकतां हुं, अभी थोडे दिन हुये कि मैं और मेरी लडकी जो १६वर्ष कीहै और एक लडका, तीनो प्रातःकाल यमुना स्नानको जाते थे, पीछे से आकर एक मुसल्मान जिसका नूरा नाम है मेरी लडकीको उठाकर उस मकानमें ले गया, जव मैं और मेरा लडका उसके पीछे उस मकानमें गये तो हम दोनोंको पांच छे मुसलमानोंने वहुतही मारा और मेरी लडकीको वेईजत किया और सव ज़ेवर भी उतर लिया, जव मैं कोतवाल साहवके पास गया तो उन्होने भी मेरी दाद न सुनी, और जव मैं घंटा वजानेकोआया तो कल्लु मियां ने पहरे वालेसे हटवा दिया आखर लाचार होकर चला गया, आज आम दर-वारकी खवर सुनकर फरयादके लिये चला आया हुं मेरी भी फरयादकी दाददी जावे.

कोतवाल—(हाथ जोड़कर) खुदावन्द न्यामत, यह सरासर झूट वक्ता है उस मकानमें कोई वदमाश नही रहता हैं उसमें तो एक सैयद अवदुल हक्क हाजी रहते हैं.

हरीदास—हम झूटे यह ब्राह्मणी झूटी आपसच्चे, क्यों न हो? जब आपको चुपके घर बैठे बिठाये आधा हिस्सा मिल जाये तो क्यों? न उनकी आप तारीफ करें कि वह हाजी हैं और हम पाजी हैं.

वादशाह—तुम वता सकते हो कि उस मकान में कितने वदमाश रहते हैं.

हरीदास—महाराज वह मकान तो वदमाशोंका अड्डा है कभी उसमे दसभी होते हैं और कभी ज्यादहभी होते हैं.

वादशाह—हमने तो उस मकानका हाल आजही सुना है.

हरीदास—महाराज किसकी इच्छा है जो आपको उसमका नका हाल वता अपने सिर पर कमवखती लेवे, कारण यह है कि आपके दोनों खवासभी उनसे मिले हुये हैं, इनमेंसें एकनएक आपके पास हर समय रहताही है, इस सववसे किसीकी ताकत कहनेकी नही पड़ती है, क्योंकि कहनेवाला यह समझता है कि अगर मैंने कहातो उनको और कोतवाल साहवको यह खवर करदेंगे तव वह हमारा सत्यानाश करदेंगे क्योंकि आप कोतवालसे पूछेंगे, कोतवाल कह देगा यह झूठा है फिर नाश हुआ या नहीं.

वादशाह—तुम उन वदमाशोंका जो उस मकानमें रहते हैं नाम वता सकते हो?

हरीदास—महाराज! मैं तो अपना कुटुम्ब उनके डरके मारे जैपूरमें भेज दिया, केवल अपना उनके हाथसे मरना ठान उनकी आप तक खवर पहूंचानेके लीये ही यहां ठहरा हुआहुं, चाहेवह मुझे अवमार हीदें मैं उन वदमाशोंके मुखीयोंका नामवताही देताहुं! डरसे थुथलाकर स, स, स, कह फिर रुक जाता है.

वादशाह—डरेमत हम आजही उनका नामो निशान दुनियासे मिटादेंगे तू वेखोफ (निडर) होकर उनका नाम वतादे.

हरीदास—(फिर हिम्मत करके) महाराज, समदू, नूरु, हसना, चरागा, रमजान और रमजानका बाप महम्मदु, और इन सबका पीर उसताद (गुरु घंटाल) सैयद "अबदुल हक्क" है इनके सिवाय औरभी बहुतसे हैं जिनका मैं नाम नही जानता हुं

बादशाह—नामसुन(खुंखार सिंघसे)खुंखार सिंघ तुम फाटक पर खडे रहो, देखो दरबारसे (सिवाय महावीर सिंघ सुबेदारके और कोई बाहर न जाने पावे

खुंखारसिंघ—बहुत अच्छा सरकार, कहकर (फाटक पर जा खडा होता है)

बादशाह—(महावीर सिंघसे) सरदार साहब तुम अभी हरीदास और कुछ सिपाहीयोंको संगले बदमाशोंको गिरफ्तार करलाओ.

महावीरसिंघ—(बहुत अच्छा जहां पनाह कहकर) हरीदासको संगले कंपमेंजा, कुछ सिपाहयोंको ले, उस मकानपर जाता है.

बादशाह (दीवान टोडर मलसे) दीवान साहब (ज्ञान देवीकी तर्फ ईशारा करके) इस नेक बखत औरतको ९००) रु० इनाम देकर इसको इसके घरमें पहुंचादो, और (स्वार्थी की तर्फ इशारा करके) इस हराम जादे लडकेको रमजानके साथ हवालात में भेजवादो, और आप लोग सब कल फजर ही (सुभा) को तशरीफले आईयेगा, इतना कह बादशाह महलको जाता है, और सबकेसब अपने अपने घरको जाते हैं

अंक ३ परदा ११

स्थान दिल्ली नगरका एक बाजार.

डूगडूगीवाला—बाजारमें जा ढोलको जोरसे बजाकर, भाईरे "खल्क् खुदाका हुक्म बादशाहका" जो कोई आजसे गऊकी नसल (वंश) को मारेगा उसके हाथ काटदिये जावेंगे, और जो कोई मारनेवाले का शरीक होगा उसकी ऊंगलीयां काटदीं जावेंगी

सज्जन मुसलमान—खुशहोकर, वहुत अच्छा हुआ रोज़का टंटा मिटा, अव हिन्दु मुसलमानोंका आपसमें मेलहो जायेगा, और आरामसे दोनो रहेंगे

कुटल मुसल्मान—हायरे! वादशाहने यह क्या गज़व किया, जो यह हुक्म जारीकर दिया, दांत्त पीसकर, क्याकरें कुछ वस नही चलता है, नही तो इस काफरको तखतसे उतार कर इसकी वोटी२ कर डाते, खैर कोई उपाय करेंगे—डुगडूगी वाला खवर करता हुआ दूसरे वाज़ारको जाता है
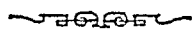
अंक ३ परदा. १२

स्थान—वादशाहका प्राईविट कमरा.

वादशाह कमरेमें वैटे हुये एक पुस्तक पढ रहे हैं.

(महा वीर सिंघका प्रवेश.)

महावीरसिंघ—(हाथ जोडकर) जंहां पनाह सव वदमाशों को गरिफ्तार कर लाया हुं.

वादशाह—हमारे सामने लाओ.

महावीरसिंघ—सव वदमाशों को वादशाहके सामने खडा करता है.

वादशाह—(महा वीरसिंघसे) सुवेदार साहव ज़रा तुम नीचे जाकर वैठो जव हम पुकारें तव उपर आई येगा.

महावीरसिंघ—वहुत अच्छा खुदावन्द कहकर नीचे जाता है.

वादशाह—सव वदमाशोंको अपने पास वैठा (धोखा देकर) हमने ? सुना है कि आप लोग वडे पक्के दीन दार मुसलमान हैं कहये आप लोगोंने कुछ पाक दीन की भी तर्क्की की है या खाली नामके ही दीनदार हैं, अगर काहिये कि दीनको तरक्की देना वादशाहका काम है, तो हम तो वडे २ मुजी काफरोंकी फिकरमें थे कि विना लडाई झगडेके यह हाथ लग जावें, यह सोच कर वडे २ काफरोंसे दोस्ती पैदाकर उनको अपने जालमें फंसा लिया

है, अब वह थोडीही दिनकेबाद सबके सब सचे दीनमें आ जा-येंगे, मगर छोटे २ काफरोंका मुसलमान बनाना तो तुम्हारा काम था सो यह बताओ कि तुम लोगोंने इनके बारे में क्या २ किया है, क्या? अबतक कोई आदमी या लडका या औरत किसीको मुसल्मान बनाया है या नही.

सबके सब—हजुर यह काफर बिना तलवारके कभी भी मुसलमान होनेवाले नही हैं, जब इनके खून से मट्टी छानी जाती थी और इनकी लडकी जोरु छीनी जाती थीं तबभी यह जल्दी अपने धर्मको नही छोडतेथे, और अबतो यह हजुरकी मेहरबानी के सबबसे शेर बने हुये हैं। भला अब यह क्योंकर मुसलमान हो सकते हैं.

बादशाह—यह तो हमभी जानते हैं, कि हिन्दु मरजाना कबूल करते हैं, मगर मुसलमान होना कबूल नही करते हैं, लेकिन अगर तुम को सच्चे दीनकी कुछभी तरक्कीका ख्याल होता, तो क्या? इनकी औरतों कोभी खराब न करते। अगर खराब करते, तो तुमारे नुत्फेसे जो पैदा होते, वह जरुरही मुसल्मान होते, देखो हमने किसीकी जबानी सुनाथा कि गोपाल चौबेका लडका स्वार्थी (सैयद अबदुल हक्कहाजीकी तर्फ ईशाराकरके) सैयद साहबके जो नुत्फे (वीर्य्य) से है, उसके बिलकुल ख्यालात मुसल्मानोकी तरह के हैं, और अब वह ईदके दिन मुसल्मान होनेवाला है, अगर ऐसेही तुम सब लोग काफरोंकी औरतोंको बिगाडते, तो कितनेही स्वार्थी जैसे पैदा हो जाते.

सबकेसब—खुदावन्द सैयद साहबकी तरह तो हम लोगोंनेभी काफरोंकी कई औरतें बिगाडी हैं.

बादशाह—कैसे बिगाडी हैं, क्या वह तुम्हारे घरोंमें आती हैं.

सैयद—जहां पनाह, वह हमारे घरोंमें तो नही आती हैं, मगर जब वह कार्तिक या माघमें जमुना नहाने को या बडे पीरकी ज्यारतको जाती हैं, तब हम किसी न किसीको खराब किये बिना-नही रहते हैं.

वादशाह—शावाश, शावाश, खूब करते हो, आजसे और ज्यादह करना, देखो हमभी कल दो तीन वडे २ मूर्ज़ीयोंको अछसूवाह (प्रातःकाल) ही मुसल्मान वनायेंगे इसलिये आज रातको तुम लोग नीचेवाले कमरेमें ही आराम करो, और कल उनका मज़ा देखो.

सवकेसव—बहुत अच्छा खुदावन्द, कहकर सवकेसव नीचे वाले कमरेमे जाकर सोय जाते हैं.

वादशाह—महावीरसिंघ को पुकारते हैं.

महावीरसिंघ—(आवाज़सुन, पास जाकर) खुदावन्द हुक्म.

वादशाह—देखो? वदमाश सव नीचे सोने गये हैं इनपर खुफीया तौरसे पहरा रक्खना.

महावीरसिंघ—बहुत अच्छा सरकार.

वादशाह—इतना कह महलमें जाता है। और महावीरसिंघ नीचे जाकर खुफीया तौरका पहरा खडा करता है.

अंक ३ परदा १३

(वादशाह--मये अपने नवरत्नो के दरवारमें वैट जाते है.)

वादशाह—(नवरत्नोंसे) हमने रातको वद माशोंसे ज्ञान देवी ब्राह्मणीका हाल वडे फरेव से मालूम कर लिया है। अव उनको यहां बुलाकर आप लागोंके रुवरु सजा देताहुं (महावीरसिंघसे) सरदार साहव उन सवको यहां ले आओ.

महावीरसिंघ—जो आज्ञा, कहकर लेने जाता है.

वरिवल—जहां पनाह, ब्रह्मचारी जी ने सत्य ही कहाथा, कारण यह कि "तुखम तासीर सोवते असर" याने वीर्य का गुण और संग का असर नही जाता है

वादशाह—वेशक नही जाता है

(महावीर सिंघका प्रवेश)

महावीरसिंघ-(सलाम करके) जहां पनाह रात वाले मनुष्य हाज़र हैं.

बादशाह—सबको यहां ले आओ.

महावीरसिंघ—बाहेर जाकर सबको दरबार में ले आता है.

बादशाह–(नवरत्नों की तर्फ इशारा करके) अये, साहिबो ज़रा इन कम्बख्त हराम जादोंकी उपरी सूरतको तो देखो, कैसे औलीयाओं, हाजीयों कीसी है, और भीतरी सूरत इनकी शैतान कीसी हैं (सैयद अबदुल हक्क की तर्फ ईशारा करके) क्यों हाजी साहब दुसरोंकी बहु बेटीयोंको खराब करनाही हज्जकरने का नतीजा है, क्या कुरान शरीफसे तुमने यह ही नसीहत पाई है, जो तुम ऐसा काम करते हो (ऊठकर क्रोधसे)

(राग)

मेरे तुम राजमें गुनाहके फैलाने वाले।
भबकी दिखलाने वाले, रैयत सताने वाले।
बुरासिखलाने वाले, आफत माचने वाले।
लेकर ज़र हाथमें मल्दारसे फिर जाने वाले। मेरे०
मेरी तुम रैयतके कोनथे सताने वाले।
कातिल ख़ूंखार बन, हुल्लडके मचाने वाले,
ज़नको सताने वाले, गऊकें कटाने वाले।
मन्दर गिराने वाले, बुतके तुडाने वाले,
सूरत हाजी, दिलके पाजी, बनके काजी,
रहते राजी, हो दोज़खमें जाने वाले॥ मेरे०

सैयद—खुदावन्द हमने तो ऐसे कसूर नहीं किये हैं

बादशाह—क्रोधसे,

(राग होली)

बडे हो दगा खोर भारी। मिटाऊं खो यह तुमारी। बडे०
छीन झपट करो तुम नारिनसें। और करो ज़नाह कारी।
न डर मेरा न खौफे खुदाका। किया जुलम तुम है जारी।
लानतहै तुमरी महतारी॥ बडे ०

मनमें तुम ये समझ लियाथा। उडायेंगे मज़ा ऊमर सारी॥
कभी न गुनाहका घडा फूटेगा॥ आयेगी सज़ाकी न वारी॥
रहेंगे सदा गुलज़ारी ॥ वडे०
अरे शैतानो हेवान वेईमानो । गुनाह किये तुम भारी ॥
इन गुनाहका इवज़ तोयह है । जाये गरदन तुमरी मारी॥
पर वख्शूं हूं जान तुमारी ॥ वडे०
लेजा सेवक इनको जेहलमें । रहें ऊमर वहां सारी ।
कोल् चक्की का काम कराना । मज़ा चक्खें उनकाभारी ॥
किया जो ज़ुनाह पर नारी ॥ वडे०

सवकेसव—हाथ जोडकर खुदावन्द मुआफ कीजीये फिरकभी ऐसा काम न करेंगे.

वादशाह—(क्रोधसे)

(राग, हाये मां केसे धरुमें तो धीर)

अरे तुमने वडीकी है तकसीर । अरे
होता जो डर न करते ज़वर । देते किसे न पीर ॥ अरे०
इसका मज़ा अव चाखो वहां पै॥ लेजा दरोगा असीर ॥
अरे०

दारोगा—सव वदमाशों को ले चलता है.

वादशाह—(स्वार्थिकी तर्फ इशारा करके) अजी इस हराम जादे को भी लेतेजाओ.

स्वार्थी—महराज मेरा क्या कसूर है ?

वादशहा—तू वेईमान (अधर्मी) है इसलिये तुझ जैसों कोभी खुला रखना मुनासव नही है? दारोगा इसको लेजा.

दारोगा—धक्के देकर स्वार्थीको भी सवके साथ जेहलकोले जाताहै.

शिवदत्त—खडे होकर,

(राग परज० ठुमरी.)

तुम जीयो शहंनाशा लाख वरस । तुम०
यह गोवध दुखको सहत सहत ।

हिन्दु थकीत भयेथे कहत कहत ॥
पर सुनता नहीथा कोई शखस ।
किसीको नही आता था तरस ॥ तुम०
कई ही वादशाह आये इते ।
लखि दशा दयाके द्रिगनि चितै ॥
उनके न दया कभी हृदय ज़रस ।
वह लूट मारके ही रहत हरस ॥ तुम०
खलनीच कुकरमी थे वहनर ।
थे खौफे खुदासे वह निडर ॥
दुख देते थे वह नीच सरिस ॥
जैसे चंदको वे ले है राहु गरस ॥ तुम
हति उन्है लीन जब आप राज ।
तबसे हिन्दका सुधरा क़ाज ॥
सदा ऐसी ही दृष्टि रक्खना पुरस ।
सेवकको हैगा यह ही हरस ॥ तुम०

सबहिन्दु—खडेहोकर

(राग)

अघहारी, जयकारी, सुनी विन्ती हमारी, त्रिपुरारी, गतितारी, अतिन्यारी, न्यायकारी उपकारी ॥ अघ० गौरवर्णा अंग पै विराजत फणी, चन्द्र शेखर हो देव-नके चुडामणी, भस्म धारी, उपकारी आरत हो हणी । चरणे, शरणे, स्मरणे दुख हरता, सुखकरता, ऊर धरता, शशिधारी ॥ अघ० भारत आरत का कष्ट निवारा, भगतन का सब काम सुधारा, हो उपकारी असुरारी है नाम तुमारा । यवन दमनकरके अमन, भारीउवारी, मारी त्रिपुरारी, नाओ तारी, ॥ अघहारी० ॥ पापी पापसे मरे धर्मी धर्मसे तरे,

जैसी करणी, वैसी भरणी, करणीपार उतरणी, करणी तैसे भरणी, आवो धावो शिवके चरणी, सेवक वैतरणी, पार उतरणी हर शरणी, हितकारी दुखहारी जाऊंवारी विलहारी । अघ०

बादशाह—आज वहुत देर दरवार लगेको हो गया है इसलिये अव वरखास्त करता हुं, यह कह कर बादशाह तखतसे उतर कर महलकी तरफ चलते हैं.

हिन्दु— वडे जोरसे पुकार कर—"वादशाह का जै जै कार हो और राज्य अटल वनारहे, यह कहते हुये अपने अपने घरको जाते हैं.

अंक ३ परदा १४

स्थान— किलेका फाटक.

कानसिंघ, जोगन और शिवदतकी इन्तजारीमें खडा है.

कानसिंघ—जोगन और शिवदतके वाहेर आनेपर (हाथ जोडकर जोगनसे) माताजी आप यहां कहांपर निवास करते हैं.

जोगन—मेरा आसन यमुना जीकी धर्म शालामें है

कानसिंघ—हमभी तो धर्म शालाके संगवाले मकानमें ही रहते हैं पर आपका तो आज तक वहां दरशन नही हुआ.

जोगन—हम दिनको तो वहां रहते ही नही हैं, रातको वहां जाकर सोय रहते हैं, सूर्य्यके निकलनेके प्रथमही वहांसे निकल जाते हैं.

कानसिंघ—ठीक. पर आप आज मेरे स्थानको पवित्र कीजीये भोजनकरके धर्मशालामें चले जाईयेगा.

शिवदत—माताजी चलीये भोजन करके आप धर्म शालाको चली जाईये गा और मैं अपनी कुटीयाको चला जाऊंगा

जोगन—(मनही मनमें) अव प्रगट होनेमें कुछ डर नही है, क्यों कि कार्य्य तो होही गयाहै (प्रगट रुपसे) अच्छा चलीये तीनो जाते हैं

अंक ३ परदा १९

स्थान— यमुना जी पर कानसिंघका मकान.

शिवदत, कानसिंघ, योग नं तीनो बैठे हूयेबातें कररहे हैं.

शिवदत—(जोगनसे) माताजी आपका मठ किस देशमें है ?

जोगन—मेवाड देशमें.

कानसिंघ—कोन गाओं में ?

जोगन—उदे पूरमें.

कानसिंघ—उदेपूरमें कोन जगहपर ?

जोगन—दिवान कृष्णसिंघके मकानके पास.

कानसिंघ—वहां तो कोई मठ नही है क्योंकि हम तो रोज ही दिवान साहेबके मकानपर जाते हैं,—,

जोगन—जीहां ! मैंभी आपको रोज ही वीरेन्द्रसिंघकी वैठक में देखती थी

कानसिंघ—(मनही मनमें) यह पतातो ठीक २ वताती हैं, परन्तु वहां मठ तो कोई नही है यह कैसे जानती है, इस्सी सोचमें चतुरसिंघको पुकरता है.

जोगन—चतुरसिंघ कोन है ?

कानसिंघ—एक रजपूत है, रस्तेमें हमसे उस्से भेंठ होगई थी, तवसे वह हमारेही साथ रहता है, परन्तु नजाने वह आज अभीतक क्यों नही आया.

जोगन—हंसकर, वह चतुरसिंघ आपके पासही वैठा है जो आज्ञाहो सो कहीये, इतना कह झट कपडेसे मुंह परकी भस्म पोछ कपडे उतार अपनी असली सूरतमें आकार (कानसिंघसे) राजासाहिबका जै, जै, कार हो

कानसिंघ—भवानी चन्द्रकी सूरत देख, हंसकर

(राग देस)

तेने खूब दिखाई अपनी ईयार । तेने०
नहीं परख सका कोई सूरत तेहारी,

वडे वडे दरवारी धूर आंखोमें तैं डारी ॥ तेने०
न पहचान सका मैं भी शक्ल हुं तुमारी,
छोटि उमरसेही हमारी तुमारी है यारी,
वडाई करुं क्या तुमारी नही जिव्हा है हमारी ॥ तेने०
तूने विपत गऊ की है गी है निवारी ॥
मैं दिलाऊं गा महाराजा से इनाम तुझे भारी ॥
सेवक जाये विली हारी, काम किया उपकारी ॥ तेने०

भवानीचन्द्र—कानसिंघसे

(राग धनाश्री)

कोऊ मैंने किया न एसो काम, जिसके वदलेमें पाऊं इनाम ॥ कोऊ ॥ गऊका वचाना है धर्म हमारा, कह गये ऋषी और राम। तुम मित्र दूजे स्वामी हमारे, तीजा था धर्म-काम ॥ कोऊ ॥ इसीलिये मैं हुआ सहायक होवे न खाम यह काम ॥ सेवक किसके इवज दलाओगे, तुम मुझको इनआम ॥ कोऊ

कानसिंघ—खैर! घर चलनेपर देखा जायेगा, अव भोजनका प्रवंध करो,

अंक ३ परदा १६

स्थान—एक गार.

(परीक्षक गारमें वैठेहुये रोरोकार.)

(राग मरसिया)

हाय, हायरे वुरा किया शाहने ये काम, वुरा०
वुरा किया शाहने ये काम।
और मुझको किया जगमें वदनाम। हाय०
मैने मेहनत कीथी कैसी भारी।
शाहन धूरमें मिलाई सारी।
और उलटी कीनी मेरी खुवारी ॥ हाय०
अव मुंह कैसे दिखाऊं मुनीको।

देंगे श्राप खबर जो सुनी तो ॥
विन विगाडे न छोडूं धूनी को ॥-हाय०
शाह मरे तो गडवड मचाऊं ।
फिरसे गोवधको जारी कराऊं
तब तो कल युगमें जग कहाऊं । हाय०
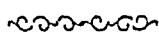
~~~

अंक ३ परदा १७

स्थान—एक सडक.

एक सडक पर कुछ कैदी सडक कुटते हुई
खडे होकर बातें करते हैं

सैयद अवदुल हक हाजी—

(राग नाटकी)

वेडी है पगमें परी, झापड माथे खाता
सिपाही सारका ॥ वेडी
दोह० कैसा मजा उडयाथा अवतक मैने यार ।
नही मुझे मालूम था हुंगा इक दिन खुआर ॥
मकान गया, जेल खान भया,
शाद मान गया, परेशान भया
तकीयान गया, कोयान भया ।
गुलमान थेया, नातवान भया
पायान गया, शैतान भया ॥ वडी है०

स्वार्थी—सैयदसे

(दोहा)

ब्राह्मणके घर जन्मपा, किया नीचका काम ।
नीच कर्मके कारणे पाया बुरा अंजाम ॥
दिंचाल भया, घर माल गया, पैमाल थया, यह हाल भया ।
~~~

हैवाल थया, सुखकाल गया, नव काल भया, सिरलाल भया।
सव वाल गया, जेहल काल भया॥ वेडी है०

सिपाही—एक दरखतके नीचे बैठा हूआ कैदीयोंको काम न करते देखकर, झट पासजा सबकोथपड मार कर, अबे सालो वातें करते हो, काम क्यों नहीं करते हो.

कैदी—सबके सब कामकरने लग जाते है.

अंक ३ परदा १८

स्थान—यमुनाजी पर एक मकान.

कानसिंघ, शिवदत, भवानीचन्द्र बैठे हुये बाते कररहे हैं.

शिवदत—कानसिंघजी? अब उदेपूर चलना चाहिये, क्यों कि बहुत दिन हो गये हैं, महाराज वडे सोचमें होंगे.

कानसिंघ—हां! भू देवजी, वेशक महाराज घबराते होंगे, क्यों कि मैने एक पत्र भी नही भेजा है.

भवानीचन्द्र—तो शीघ्रही चलना चाहिये.

कानसिंघ—टीक है! चलीये! सबके सब उदेपूरको जाते हैं.

अंक ३ परदा १९

स्थान—उदेपुर महाराज का पुजा स्थान..

महाराज ईश्वरसे प्रार्थना कर रहे हैं.

(राग—गजल.)

हे ईश्वर तू वडा दयालु, नही सानी तेरे कोई॥
करुं तारीफ किया तेरी नही ताकत मुझे होई॥ ईश्वर०
रीषी मुनी भी भक्तोंने तेरा नही पार पाया है।
क्या गुण गा सके पामर चकित जब देव देवी होई॥ ईश्वर०
गरीबों आजज़ों पर तू वडा ही रहेम् करता है।
करे उन दुष्टों को गारत् जिनोने दिया है खोई॥ ईश्वर०
फना करता तू इकपल में वडे वडे अमीरों को॥

करें अमीर गरीबों को वडी कुद्रत तेरी जोई ॥ ईश्वर०
जो चाहे तू वह कर सक्ता गुनाह वखशिन्दा भी तू ही ॥
यह सेवक का तू ही रक्षक, सिवा तेरे नही कोई ॥ ईश्वर०

महाराज—पूजन करके (मनही मनमें सोचकर) नही मालूम क्या कारण है कि जो आजतक कानसिंघ की कोई खबर नहीं आई? भला कानसिंग तो अकेला है किन्तु कर्मसिंघ तो अकेला नही था, उसको तो कुछ खबर भेजनी चाहिये थी.

(कल्याणसिंघ का प्रवेश.)

कल्याणसिंघ—हाथ जोडकर महाराज रसोई त्यार है.

महाराज—चल, उठकर महलमें जाते है.

अंक ३ परदा २०.

स्थान—चौरस्तामें एक पेड.

नायक कर्मसिंघ मय अपने ५० सिपाहीयों के पेड के नीचे बैठा है.

(कानसिंघ का चौरस्तेमें प्रवेश)

ना० कर्मसिंघ-कानसिंघ को उदेपूर को जाते देखकर "जै महादेवजी" की बोलता है.

कानसिंघ-(जय महादेवजी का उतर देकर कर्मसिंघसे) नायक साहब कहां से आते हो.

कर्मसिंघ-जहां से आप आते हैं वहीं से मैं आता हुं.

कानसिंघ-हम तो दिल्ली से आते हैं.

कर्मसिंघ—मैं भी दिल्ली सेही आता हुं.

कानसिंघ-हम से आप से वहां भेंट तो नही हुई.

कर्मसिंघ—वहां भेट न करने का हाल बताता है और फिर आपस में बातें करते हुई सबकेसब उदेपूर को जाते हैं.

अंक ३ परदा २१.

स्थान— उदेपूर कानसिंघ का मकान.

कानसिंघकी पत्नी चन्द्रमुखी पलगंपर बैठी हुई.

(राग सोरठ या देस.)

हाय ! प्यारे विना कटत न कारी रैन ॥
कटत न कारी रैन, रैन, रैन रैन, रैन, रैन ॥ हाय०
पलछिन न परत जीय हाय चैन ।
होसके न विरहे अब तो सहेन, सैन, सैन, सैन, सैन, सैन॥ हाय०
परदेस गये जब तजके हैन ।
तब से टपकत दुःख भरे नैन, नैन, नैन, नैन, नैन नैन॥ हाय०
सेवक बता दो कहां पै हैन ।
जोगन बन जावूं उन्हें लैन, लैन, लैन, लैन, लैन, लैन॥ हाय०

विमला सखी—चन्द्र मुखी की विरहे भरी आवाज़ सुन, (पास जाकर) बहन ? यह तू क्या कह रही है.

चन्द्र मुखी—पंलग से उतर विमला का हाथ पकड कर

(राग–खमाच.)

पिया दर्शन की प्यासीरी, मैं पिया दर्शन की प्यासीरी ॥
जबसे गये कोई पठाई न पाती, इससे हुं तो उदासीरी॥ मैं०
रात दिवस मुझे चैन न आवे, हुं दर्शन की हुलासीरी। मैं०
जो कोई मुझको पियासे मिलादे, सेवक गुणना भूलासीरी॥ मैं०

विमला—बहन सुन

(राग–मलार.)

धीर धरो तुम मनमें आली, कर चिन्ता न हो तू विहाली ॥ धीर०
स्वपन भयो है मुझको हाली, शीघ्र मिलें पिया होगी
खुशाली ॥ धीर० ॥ मेरा स्वप्न कभी जात न खाली,
अजमा देखा कैई वेर है लाली ॥ धीर०

चन्द्र मुखी—विलमा का हाथ छुडाकर

(राग—तिलंग.)

जावो जावो वतीयां न वनावोरी । जावो०
क्या समझावे, स्वपन वतावे, झूठा मुझको तू है रिझावे ।
वृथा काहेको भूलावे, बेहकावे, तरसावे, न मुझको सता
वोरी ॥ जावो० ॥

परसन दाई—चन्द्र मुखी और विमला की बातों से जाग पड
ती है (और झट उठकर चन्द्र मुखीके कमरेमें आ चन्द्र मुखीको
उदास वैठी देखकर) प्यारसे—

(राग—जिला.)

बैठी हुआ है क्या तुझे, ज़रा बता तो दे मुझे ।
अधी रात वीत गई, क्यों नींद न आवे तुझे ॥ बेटी०
है दुखी आज किस लिये, कारण ये जता तूं दे ॥

कहीं दर्द हो तो दे बता, ओषध लादूं मैं तुझे ॥ बेटी०

चन्द्रमुखी—परसनसे

(राग —नछेड़ो हमे दिल दुखाये हुये हैं.)

विरेह की हुं मैं चोट खाई हुई । उचट जाती है नीन्द आई हुई ॥
सधारे पिया घरसे मुंह मोडकर । अकेली मुझे वन में यहां
छोडकर ॥ उधर वह गये शाहकी दरवारमें । तडफती हुं मैं
यहां विया वान में ॥ जो फूलों की छेजा पर कोई सुलाये,
पिया विन मुझे नीन्द हर गिज़ न आये ॥

परसन—गले से लगाकर

(राग—उपरवाला.)

अरी बेटी हैगा न उनका कसूर । कि है क्षत्री का धर्म येही
ज़रूर ॥ करे धर्म का काम सुख छोडकर । जाय सबी से
ही मुंह मोडकर ॥ जो मोडे न मुंह, मुंह से तलवारके । वढे
आगे तलवारकी धार के ॥ न भागे कभी रणके मैदानसे ।

अजीज आवरु को रक्खे जान से॥ जो लाखों में घुस जाये तलवार सूत। वोही क्षत्री सेवक वोही है सपूत॥

चन्द्रमुखी—परसनसे

(राग—उपरवाला.)

यह सब जानती हुं पर क्या करुं। नही मानता दिल जो धीरज धरुं॥ पिया की तरफ है तबीयत मेरी। बिना देखे नही चैन आवे जरी॥ हाय! प्यारे से मंजलों दूर हुं। जो पर होते उड जाती मजबूर हुं॥ मिला दे मुझे मेरा प्यारा कोई। मुझे उसका मुखडा दिखा दे कोई॥ सेवक जो लावो अगर ढूंडकर। न भूलुं ये ऐसा न मैं ऊमर भर॥

परसन—बेटी चुपकरके सो रहो, कंही ऐसा नहो कि यहबातें सासु जी सुनलें और तेरे पै बडी विपत पढ जाये, क्योंकि इसकुलकी यह रीती है कि यादि कोई धर्म या देश हितके लिये शत्रुके सन्मुख जाये और जाने वाले की मात, अथवा स्त्री, उसको जाने न दे, अथवा उसके जाने वाद उसके वियोगसे कलपै, अथवा पुरा माने, और यह खबर फैल जाये तो उसको ये तुरन्तही नातसे बाहर कर देते हैं, और उसका मुंह देखना पाप मान्ते हैं, इसलिये मैं तुझे कहती हुं कि ऐसा नहो कि कहीं कोई तेरे यह वचन सुनले और सासुजीको खबर-करदे और फिर ऊमर भर कानसिंघसे तुझे जुदा करदेंगे, इसलिये चुपकरके सोय रहो.

चन्द्र मुखी—परसनकी यह बात सुन, बेसुध होकर जमीन पर गिर पडती है

(कानसिंघका प्रवेश.)

कानसिंघ—चन्द्रमुखीको जमीनपर पडे हुई, और परसनको, पंखा करते, और विमलाको चन्द्रमुखीके मुंहपर गुलाव जल छिड-कते देख, झट पासजा,

(राग मलहार.)

मुरछित क्यों पडी हो प्यारी॥ मुर०

आंख खोलो, मुखसे बोलो, हुआ है तुझको दुख क्या
भारी, सुखकारी, प्राण प्यारी, सुविचारी, जाऊं वारी ॥ मु०
गुलाबी मुख है क्यों मुर झाया, किस चिंताने है गा सताया,
बोलो मुखसे प्रिय हमारी जाऊं बिलहारी, दूं सारी,
चिंता तारि, टारी, प्यारी हमारी सती नारी ॥ मुर०

चन्द्र मुखी—कानसिंघकी आज सुन आंखे खोल कानसिंघको पास खडे देख, झट प्राणनाथ कह गेलेमें लपट जाती है.

विमला—हंसकर (चंन्द्र मुखीसे) क्यों बहन हमारा स्वपन सच हुआ या नहीं? अब हमारा गुण कभी तो नाना भूलेगी.

चन्द्रमुखी—हंसकर, वाहरी तेरा स्वपन, हमने तो एकलिंगजी से मनोती मानी थी कि यदि आज प्राणनाथ आजावें गे तो मैं सवामन दूधसे स्नान कराऊंगी.

कानसिंघ—प्यारी क्या ऐसे घबराजाना होता है ?

चन्द्रमुखी—प्राणनाथ,

(राग नाटकी.)

ऋषी मुनी दे गये यह शिक्षा हैं भारी । वोही—
नारी, प्रभु प्यारी, पतिकी जोहित कारी ॥ ऋ० मैं तोहुं
पतीत नारी, सेवा नही कीनी तारी, हुं नरककी आधी
कारी, नाथ लेओ तुम ऊवारी, हुं दासी मैं तेहारी ॥ ऋ०
थी चाहती आज प्राण वारी, ईश रखो लाज हमारी, वडे
दीन हित कारी, दशा मेरी बुरी डारी, सेवक उनकी
वली हारी ॥ ऋ०

कानसिंघ—चन्द्रमुखसे

(राग नाटकी.)

सती नारी हीं ईशको है प्यारी ।
घर जिसके सती नारी, सुखी जगमें वोही भारी ।
दुखटारी सुखकारी, नर्कसे बचावन हारी,

स्वर्गकी पहूंचावन हारी, यश गावें मुनी नारी.
सेवक हैगा विली हारी । सती०

(चन्द्र मुखीसे) प्यारी महाराज और माताजीका दरसनकर आऊं:

चन्द्र मुखी—

(राग दक्षणी.)

नाथजी जावो, दर्शमात भ्रातकोंरे,
देओ वताय, धर्म वनाय, किया जो जाय, लागूं पाय,
मैं जाऊं तुम पै वारीरे ।
नाथ वुरा किया, जो पठाई न तुमने पातीरे
हैं अकुलाय, जावो धाय, देओ मिटाय, है जो घाय
मैं दास हुं सदा कीरे ॥

प्राणनाथ, जाईये दरशनकर आईये.

कानसिंघ—वाहर जाकर शिवदत, भवानीचन्द्र, कर्मसिंघ, इत्यादियों को संग ले महाराजके पास जाते हैं.

अंक ३ परदा २२.

स्थान—महाराज का महल.

महाराज वजीर कृष्णसिंघ, दिवान भामाशा, और दस वारां सरदार बैठे बातें कर रहे हैं.

(माताजी का प्रवेश.)

महाराज—माताजीको आते देख, झट खडे होकर प्रनाम करते हैं.

माताजी—सब को असीस दे, बैठकर.

(राग सारंग.)

क्यों नही आया है पुत्र हमारा, प्राण प्यारा नैका तारा ॥ क्यों०
जव से गया कोई पठाई न पाती, वीत गया मास सारा ॥ क्यों०
पानी विन जिम मीन तडफे, है तैसे तडफे दिल हमारा ॥ क्यों०
मंगा दो सेवक खवर कान की, हैगा छोठा भाई तेहारा ॥ क्यों०

(दरवान नैहालसिंघ का प्रवेश.)

नैहालसिंघ–हाथ जोडकर.

(दोहा)

श्री आर्य्य नरेशका बडे दिनो दिन राज ।
द्वार खडे हैं कान जी दरशन को महाराज ॥

महाराज–जो कर आया कार्य्य हो तो आवे हमरे पास ॥
नही तो हमरे देशमें करे न कहीं निवास ॥

दरवान–बाहर आकर कानसिंघसे कार्य कर आनेका हाल पूछ कर अन्दर जाने देता है.

सबके सब–अन्दर जा महाराजके आगे हाथ जोडकर.

(राग कल्यान.)

श्री आर्य्य पति, करें वन्दना अति ।
आपके भ्रात की बडी है शुभ मति ॥
दो–अकेले दिल्ली जाये के, किया बडा ही काम ।
साम दाम दण्ड भेद से, कार्य किया तमाम ॥ श्री०
शाह अति प्रसिन हो, किया हुक्म सब देश ।
गऊ माता को हिन्दभर, कोई न देवे क्लेश ॥ श्री०
फिरा ढंडूरा शाहका, नगर नगर और ग्राम ।
जो गऊ को दुख देगा, पायेगा बुरा अंजाम ॥ श्री०
नक्ल शाहके हुक्म की लाया कानसिंघ साथ ।
दे, नक्ल महाराजको निवाकर सेवक माथ ॥ श्री०

कानसिंघ–जेबसे फरमान शाहीकी नक्ल निकालकर देता है

महाराज–– (कानसिंघके हाथसे नकल ले) वज़ीर कृष्णसिंघको देकर) वज़ीर साहिब यह सबको पढकर सुना दीजिये

कृष्णसिंघ––फरमान शाहिको ले पढकर सुना देता है

सबकेसब––फरमानशाहो सुनकर खुश हो कानसिंघको शाबाश देते हैं

महाराज—कानसिंहको अपने पास एक आसन पर बैठाकर

(राग)

शावा शावा अय छोटे भाई ।
है तूने सदा हमारी आज्ञा बजाई ॥ शा०
जो २ कहा हमने सो २ किया तू ।
कभी नहीं कोई है बात गंगावाई ॥ शा०
काम कठन जो अके पड़ा है ।
तूने किया है तनमन लगाई ॥ शा०
इसका इवज़ हम देते हैं तुझको ।
करदेव गाढकी सदा बादशाही ॥ शा०
तेरी वंशका नाम कालावत् ।
सेवक चलेगा है जग माही ॥ शा०

(राग भैरवी.)

हस्त जोड निमन करुं भ्रात जी तुमे ॥ हस्त०
कार्य सवी पूर्ण हुआ तुमरी कृपा से ॥ हस्त०
भवानीचन्द्र ने मुझे दीनी अति मदद ॥
विघन सवी दूर किये इसने अक्ल से ॥ हस्त०
इनाम पाने योग किया इसने हैगा काम ॥
उपमा होसके न इसकी कुछ भी सेवक से ॥ हस्त०

शिवदत्त—खड़ा होकर.

(राग देस, या धनाश्री.)

धन धन हैगा तुमारा समाज, धन धन हैगा तुमारा समाज ॥ धन सभासद धन मंत्री, धन तुमे को महाराज ॥ धन० धन स्त्री धन बालक तुमरे, जो करत धर्मका काज ॥ सेवक धन भये नैन हमारे, किया दरस फिर आज। धन०

(राग देस.)

सब मिल गावो कान बडाई ॥ सब०
शीघ्र लियो तुम झांज मृदंग डफ, तंबूरा सेहनाई ॥ स०

कानके प्रेम रंगमें भीजो, इसनें गऊहै वचाई ॥
दियो धनवाद भवानी चंदको, हुआ जो इनका सहाई ॥स०
छोटी उमरमें इसने शाहसे, है कीनी कैसी चतुराई ॥
सेवक असीस दे तू दोनोको, होवे उमर अधिकाई ॥ स०

(नारदमुनीका प्रवेश)

नारदजी वीणा वजाते गाते हुये आते हैं.

(राग भैरवी.)

भजमन राम उमर रही थोरी।
ऊमर रही थोरी रे ऊमर रही थोरी ॥ भज०
बाल अवस्था खेल खोई, युवा ऐशमें डबोई ॥
वृद्ध अवस्था अवतो होई, वृथा आयु वोरी ॥ भज०
पिता सुत मात धन नारी, रहेंभी गर ऊमर सारी ।
मगर जब काल आ घेरे, करें सहाय न तोरी ॥ भज०
इनका अब संग त्याग, हरि जु की शरण लाग।
न जायेगो साथ कोई तेरे, ममता देतू छोरी ॥ भज०
स्वपने भांति इनको जान, इनका न तू कर अभीमान
सेवक यह तू सत्यजान, वात मान मोरी ॥ भज०

नारदमनु—शिवदत से.

(राग नाटकी.)

ब्रह्मचारी, तैंने पाली, आज्ञा हमारी । ब्रह्म०
वड़ा वड़ा दुखतूने भोगा, तो भी न आज्ञा टारी ॥ ब्रह्म०
चल तुझे गोलोक पहुंचाऊं, और भगवतका दर्श कराऊं ।
जन्म मरणसे अवमैं छुडाऊं, है काम किया तैं भारी॥ब्रह्म०

इतना कह ताली वजाते हैं (तालीके वजते ही झट विष्णुके दूत विवान लिये हुये नारद मुनीके पास आ जाता हैं.

नारद—शिवदतको विवान पर विठाते हैं.

शिवदत—विवान पर वैठकर नारद जीसे.

(राग दक्षणी.)

महाराजने मुनीजी, गऊ की विपत है हरी ।
सिवाय इनके कोई रक्षक नहीं था इसघरी ।
बजाई सेवा तन मन धनसे इन्ने है खरी ॥
मुनी, मुनी, मुनी, मुनी, करावो दर्स हरी अर्ज है मेरी,
थकित भया सारे देशमें फिरा, फिरी, ।
कोऊने मेरी बात नही थी कानमें धरी ।
सबीको मेरी बात मुनी लगती थी करी ।
मुनी, मुनी, मुनी, मुनी, कारावो दर्स हरि जर्ज है मेरी,
नारद—महाराजसे.

(राग भैरवी.)

महाराजा तुम, धर्मका किया है काम,
दलाऊंगा हरसे इन आम ॥ महा०
यमके भैसे बचाऊं, हरि दर्शन कराऊं,
ओरु मुक्ति दलाऊं, यश जगमे फैलाऊं,
रक्खूं अचल जगत में नाम ॥ महा०
कुछ दिन और राजकरो यां, फिर जाओ मुक्तके धाम ।
तबतक धर्मसे राजकरो तुम, मिलेगा अच्छा परीनाम॥महा.
रखना धर्मपै ख्याल, नही चलना बदचाल ॥
रहना प्रजापै दयाल, इस्से होवोगे निहाल ।
न फंसोगे यमके जाल, होंगे शिवजी कृपाल ॥
सेवक रटो हर दम हरका नाम ॥ महा०
इतनाकह—विष्णुके दूतोंसे बिवान ऊठानेका ईशारह करते हैं
विष्णु दूत—नारद मुनीका ईशारा पाके, बिवानको ऊठाले जाते हैं, यह देखकर सबकेसब (ईश्वर की अस्तूती गाते हैं)
सब पात्र—

(राग, नाटकी चाल.)

जन्म जाये जन्म जाये जन्म जाये हैं व्यर्था ।

दुःख जाये सुख थाये कर्म कुटिल की कथा
महान भारी शक्ति तारी जग विषय प्रख्याती
ख्याती विख्याती, दारी तारी विदारी
दास तारो अल्पजाना ॥ जन्म०
अघहारी, जयकारी, त्रिपुरारी पाप विदारी
हरजो धरजो करजो, आदि अन्ते तारनारा। जन्म०
दुःख हरता सुख करता त्राता माता पिता दाता
जगोद्धार नारा ॥ जन्म०
धरू भावे भक्ति आपो मुक्ति विनीय पार खनारा
अभीमान, मान, दान ध्यान, सम दम आदि
व्याधि उपाधी टालनारा ॥ ज०
त्रिगुणात्मक विश्वपती ने अंतरयामी
शिशनामी, गति मति पति सती भूधर भवसागर तारी,
अखलेश्वर, विश्वेश्वर, विपत्त नाशक पाणेश्वर, आशा
दाता उदासा पासा निरमल मति करनारा ॥ जन्म०

इति संपूर्णम्